नूतन काव्य संग्रह

-डॉ जयसिंह नीरज
-श्रीमती सुशीला गुप्ता

प्रामाणिक,
सर्वोत्तम, शुद्ध-
दीपिका

...व ब्रादर्स
...णी मार्केट, जयपुर-३

सर्वोत्तम !　　सर्वश्रेष्ठ !!　　प्रामाणिक !!!

कुञ्जी

नूतन काव्य संग्रह

(फणीश्वरनाथ 'रेणु')

लेखक :

शर्मा एवं त्रिपाठी

भार्गव ब्रादर्स

धामाणी मार्केट, जयपुर-३

नवीन संस्करण]　　[नेट मूल्य 360 पैसे

विषय-सूची

कुंजी नूतन काव्य संग्रह

1. कबीर

गुरु महिमा

· बलिहारी गुरु························ ··· धरौंगें कोंण ।। (1–2)

कठिन शब्दार्थ – आपणें=आपकी । द्यों हाडी=प्रतिदिन, हड्डियों तक । मानिष=मनुष्य । ते–से । बार देर, न्यौछावर । रलि गया=मिल गया ।

अर्थ कबीर दास जी कहते हैं कि हे गुरुदेव ! मैं आपकी बारम्बार बलिहारी जाता हूं तथा मुझे इसी में आनन्द है कि मेरीहड्डियां तक आपके लिए उत्सर्ग हो जाय, क्योंकि आपको मनुष्य से देवता बनाने में तनिक भी देर नहीं लगी।

कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु के ज्ञान में मैं इस प्रकार मिल गया हूं जिस प्रकार आटे में नमक मिल जाता है। ज्ञान प्राप्ति के बाद अब जाति-पाति एवं कुल सम्बन्धी सभी भेदभाव दूर हो गये हैं, अब अलग से मेरा नाम कौन धरेगा ? अर्थात् जब तक अज्ञान की स्थिति थी, तब तक भेदभाव था। अब गुरु मंत्र प्राप्त हो जाने से सम्पूर्ण भेदभाव दूर हो गया है।

माया दीपक·····················लिया ततसार ।। (3–4)

· कठिन शब्दार्थ भ्रमि भ्रमि=घूम घूमकर (पुनः पुनः जन्म लेना) उवरंत=उबारना, उद्धार । कचन=स्वर्ण । ततसार=तत्व ।

अर्थ—इस संसार में माया रूपी दीपक पर मनुष्य रूपी पतंगा बार-बार आकर गिरता है अर्थात् माया से मोहित मानव इस संसार में बार-बार जन्म लेता है। परन्तु जिन्हें गुरु का ज्ञान मिल जाता है, उन सभी लोगों का उद्धार हो जाता है। कबीर स्वयं को धन्य मानता है कि उसे ज्ञान देने वाला गुरु मिल गया और उसका उद्धार हो गया।

कबीरदास जी कहते हैं कि सदगुरु शिष्य रूपी तप्त लोहे के लिए लुहार के सदृश सच्चा वीर है, इतना ही नहीं वह उससे बढ़कर है क्योंकि वह

उसे तप्त करके विकारों से पहले रहित करता है और शुद्ध सार रूप को ही शिष्य रूप में स्वीकार करता है तथा अन्त में कसौटी पर कसे गये शुद्ध स्वर्ण के रूप में उसे कर देता है।

थापणि पाई........................नहीं कबीर ।। (5–6)

कठिन शब्दार्थ—थिति=स्थिति, स्थापना। भई=हो गई। धीर=धैर्य, स्थिरता। निहचल=निश्चल, परमतत्व रूपी। सांझी=भाग लेने वाले। घणां=बहुत से।

अर्थ--कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु ने अपनी मान्यता की स्थापना करके, मुझे दृढ भूमि पर स्थापित कर दिया, जिससे मुझे स्थिरता प्राप्त हो गई। अब मैंने मन रूपी मान सरोवर के तट पर शुद्ध चित्त रूपी हीरे का क्रम प्राप्त कर लिया।

कबीरदास जी कहते हैं कि सतगुरु ने साहस तथा धैर्यपूर्वक परम तत्वरूप निधि से मुझे मिला दिया है, इस उपलब्धि में अपना भाग खोजने वाले अनेक है किन्तु कबीर इसे बांट नहीं सकते क्योंकि ऐसा संभव नहीं है।

चौपडि मांडी........................दास कबीर ।। (7–8)

कठिन शब्दार्थ—चौहटे=चौराहे पर। अरध उरध=घटना, बढ़ना। सारी=स्यार। दाब=चाल।

अर्थ--इस संसार के चौराहे पर चौपड़ मांड रखी है तथा परमात्मा के यहां से ज्ञान और प्रेम की पूंजी लिये हुये सभी व्यक्ति इस संसार में आते हैं तथा खेलते हैं इस खेल में यह पूंजी घट भी सकती है तथा बढ भी सकती है, कबीरदास जी कहते हैं कि राम के भक्त लोग सत्य परमत्व हैं ऐसा मान कर खेलते हैं।

कबीरदास जी ने चौपड़ खेलते समय प्रेम का पासा बनाया है तथा अपने शरीर को स्यार बनाया है। सतगुरु दाव बताने वाले हैं तथा कबीरदास खेल रहे हैं। भाव यह है कि इस संसार सागर में उद्धार तभी संभव है जब कि सबसे प्रेम रखा जाये एवं ईश्वर भक्ति में हृदय को लगा दिया जाय।

विविध :

कबीर सीप........................को लाज (9–10)

कठिन शब्दार्थ—समंद=समुद्र। समदहि=समुद्र। बरि=बराबर। समय=सामर्थ्यवान। पुरिस=पुरुष।

अर्थ--कबीरदास जी कहते हैं कि समुद्र की सीप प्यास-प्यास रटती रहती है। वह समुद्र को तिनके के बराबर गिनती है तथा सदैव स्वाति नक्षत्र में बरसने वाली बूंद की आशा लगाये रहती है।

कबीरदास जी कहते हैं कि यदि पतिव्रता स्त्री नंगी रहती है तो उसके पुरुष के लिये ही लज्जा की बात है। इसलिए ऐसे सामर्थ्यवान स्वामी का सेवक होना चाहिए जिससे की कभी कोई कार्य निष्फल न हो अर्थात् सभी कार्य सुसम्पन्न होते रहें।

कबीर हरि ………………… अंग एह ॥ (11-12)

कठिन शब्दार्थभ— ंवता=अच्छा लगने वाला। दीसत=दिखाई देता है। षीणा=क्षीण। उनमना=उदासीन। निहकांमतां=वासना रहित। बिषियां=सांसारिक भोग।

अर्थ--कबीरदास जी कहते हैं कि हरि को भाने वाला दूर से ही दिखाई देता है। उसका शरीर क्षीण होता है, मन उदासीन रहता है तथा संसार में विरक्त हुआ वह फिरता रहता है।

शत्रु रहित काम वासना रहित ईश्वर के प्रति प्रेम रखने वाला, विषय भोगों से सदैव अलग रहने वाला वस्तुतः सन्तों का शरीर होता है अर्थात् सन्तों में उक्त विशेषताएं पाई जाती हैं।

जेती देषां ………………… हलाहल खाइ ॥ (13-14)

कठिन शब्दार्थ--तेता=वैसा ही। प्रतषि=प्रत्यक्ष। पाथर=पत्थर। बेलड़ी=बेल। निकदिया=खोदने वाला। हलाहल=विष।

अर्थ--कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार में जितनी आत्मा देखी उनमें वैसे ही भगवान देखे अर्थात् प्रत्येक मनुष्य की आत्मा मे ईश्वर का पृथकशः निवास है। साधु वस्तुतः प्रत्यक्ष देवता है अतः पत्थर से क्या कामना अर्थात् पत्थर में ईश्वर का निवास नहीं है। अतः पत्थर को देवता मानकर उसकी पूजा नहीं करनी चाहिये।

जिस प्रकार बेल सारे छाई रहती है उसी प्रकार तीर्थ भी सारे संसार में छाये हुए हैं अर्थात् संसार में अनेक तीर्थ स्थान हैं। परन्तु कबीरदास जी कहते हैं कि मूल अर्थात् वास्तविक जड़ को निकलकर हलाहल खाने को कौन तैयार हो ? अर्थात ऐसा करने को कोई भी तैयार नहीं है। कबीर की दृष्टि

में तीर्थ यात्रा से कोई लाभ नहीं है।

मन मथुरा.............................पीला होइ ।। (15-16)

कठिन शब्दार्थ--काया=शरीर। ता मैं=उसमें। जोति=ज्ञान ज्योति। चीन्हें=पहचानना।

अर्थ--कबीरदास जी ने तीर्थ यात्रा करने वाले लोगों को शिक्षा देते हुए कहा है कि हे मनुष्यों ! मन को मथुरा, हृदय को द्वारिका धाम तथा अपने शरीर को काशी समझो। दस इन्द्रियां जिसके द्वार हैं ऐसे इस शरीर में ज्ञान ज्योति की पहचान करो अर्थात् अन्य तीर्थों पर भटकने से कोई लाभ नहीं है।

ईश्वर के वियोग में शरीर व्याकुल रहता है, परन्तु उसे कोई भी नहीं पहचानता। वह (शरीर; पान बेचने वाले के पान के समान प्रतिदिन राम वियोग में पीला हो जाता है।

पीलक दौडा...... ....मिलै भगवान ।। (17-18)

कठिन शब्दार्थ--पीलक=पीलापन। पिंड रोग=पीलिया। छाने=चुपचाप। नित=हमेशा। परसान=परेशानी। तजै=छोड़ो।

अर्थ--ईश्वर के वियोग में शरीर पीला पड़ गया है, परन्तु लोग कहते हैं कि पीलिया नामक रोग हो गया है। राम से प्रेम करने वाले लोग उसके लिये चुपचाप लंघन करते हैं अर्थात् व्रतादि करते हैं।

हंसी खेल में ही यदि भगवान मिल जाये तो परेशानी कौन सहन करे ? अर्थात् कोई भी सहन करने को तैयार नहीं होते। परन्त वास्तव में ईश्वर उन्हीं को मिलता है जो कि काम, क्रोध एवं तृष्णा को पूर्णतया त्याग देते हैं।

कै विरहणी.........................जीवनि होइ ।। (19-20)

कठिन शब्दार्थ--मींच=मृत्यु। आपा=स्वयं को। मोपैं=मुझसी। गंवाये=खोदिये। जातें=जिससे।

अर्थ--कबीरदास जी कहते हैं कि हे ईश्वर या तो मुझे विरहिणी को मृत्यु प्रदान कर अथवा अपने दर्शन मुझे दे। इस प्रकार आठों प्रहर का देखना इधर उधर भटकना मुझसे सहन नहीं किया जाता है।

मैं (कबीर) तुम्हारे को देखने के लिए पर्वत पर्वत घूमा हूं तथा

वियोग में रोते-रोते नेत्र भी गंवा दिये हैं परन्तु मुझे वह हरिनाम वाली बूंटी प्राप्त नहीं हो रही है जिसमें मेरा जीवन सफल हो जाये।

भेला पाया ……… लाजू भारि ।। (21-22)

कठिन शब्दार्थ - भेला=सहारा। भौसागर=भवसागर। गहौं=पकड़ना नालि=साथ।

अर्थ—कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार रूपी सागर में बड़े प्रयास के बाद एक छोटा सा पकड़ने का सहारा मिला है। यदि उसे छोड़ता हूं तो डूबता हूं और यदि उसे पकड़ता हूं तो वह मेरी भुजा को डसता है अर्थात् फिर संसार के जाल में मैं फंसता हूं, बड़ी दुविधा की स्थिति है।

यदि तू विरहिणी ही थी तो पति के बिना क्यों रही ? पति के साथ ही क्यों न जल गई ? अब उसकी मृत्यु के बाद रह रहकर मुग्ध एवं पागल बनकर प्रेम को लज्जित मत कर।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. प्रस्तुत दोहों के आधार पर अपने शब्दों में लिखिये।

(उत्तर सीमा 30 शब्द)

(क) कबीर ने गुरु पर बलिहारी होने को क्यों कहा है ?

उत्तर—कबीर ने गुरु पर बलिहारी होने को इसलिये कहा है क्योंकि गुरु ही इस संसार में अपने ज्ञान द्वारा मनुष्य को ईश्वर बनाता है। वह मनुष्य के दुर्गणों को उससे दूर कर उसे ज्ञानवान बनाता है।

(ख) 'गुरू' शब्द में कौनसा अलंकार है ? उसकी परिभाषा लिखिये।

उत्तर—'गुरु' शब्द में श्लेष अलंकार है। 'श्लेष' अलंकार वहां होता है जहां शब्द का एक बार प्रयोग हो परन्तु उसके एक से अधिक अर्थ निकलें अर्थात् एक शब्द में जहां एक से अधिक अर्थ चिपके रहते है वहां श्लेष अलंकार होता है।

(ग) 'गुरु मंत्र' से कबीर के मानस पे कौनसे भाव उत्पन्न हुये ?

उत्तर—गुरु मंत्र से कबीर के मानस में समानता एवं एकता के भाव उत्पन्न हुये। उसके हृदय से भेदभाव दूर हो गये। उसके मानस में उसके बाद जाति-पांति एवं कुल-सम्बन्धी भेद भावों के लिए कोई स्थान नहीं रहा।

(घ) 'भ्रमि भ्रमि डूब पडंत' इस पंक्त में कबीर ने किस ओर

संकेत किया है ? अपने शब्दों में विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर--इस पंक्ति में कबीर ने पुनर्जन्म की ओर संकेत किया है। कबीर के कहने का आशय यह है कि माया से मोहित होकर मनुष्य संसार में बार बार उसी प्रकार जन्म लेता है जिस प्रकार पतंगा घूम घूम कर दीपक पर जाकर गिरता है।

(च) गुरु और लुहार की समानता की तुलना करते हुए समझाइये कि गुरू किस प्रकार शिष्य को खरा बनाता है ?

उत्तर--एक लुहार जिस प्रकार लोहे के एक पिण्ड को अग्नि में अपनी धौंकनी से तपाकर तथा उसे कूट पीटकर उसमें से तत्व अलग निकाल लेता है तथा उसकी सुन्दर वस्तु बना देता है, वही स्थिति गुरु की है। गुरु भी जब शिष्य को प्रारम्भ में पढ़ाता है तो शिष्य लौह पिण्ड के तुल्य ही होता है। गुरु ज्ञान रूपी अग्नि में उसे तपाता है। कई बार उसे पीटता भी है तथा अन्त में उसके अवगुणों को निकालकर उसे एक खरा व्यक्ति बनाता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित साखियों के आशय को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर-- आशय के लिये दोहों का अर्थ देखिये।

प्रश्न 3. (क) भक्त किस प्रकार पहचाना जाता है ? भक्त के लक्षणों को लिखिये।

उत्तर-- भक्त का शरीर क्षीण मन उदासीन एवं संसार से उसे विरक्ति रहती है। उसका कोई बैरी नहीं होता, वह निष्काम होता है तथा ईश्वर से प्रेम रखता है विषय भोगों से अलग रहता है।

(ख) 'पतिव्रता' और 'पुरिस' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुये है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--पतिव्रता शब्द भक्त के लिये तथा पुरिस ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुये हैं। भाव यह है कि भगवान के भक्त का कोई कार्य यदि असफल होता है तो उसमें बात भक्त की नहीं जाती है भगवान की जाती है। पतिव्रता यदि नंगी रहती है तो उसका दोष नहीं, यह उसके पुरुष का दोष है, उसे इसके लिये शर्म आनी चाहिये।

प्रश्न 4. निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिये-

उत्तर-- आशय के लिए दोहों के अर्थ भाग को देखिए।

प्रश्न 5. उन दोहों को छांटिए जिनमें श्लेष सूचक उपमा अलंकार हैं।

उत्तर---(i) श्लेष अलंकार वाले दोहे-2, 4, 7

(ii) रूपक अलकार वाले दोहे 6, 4

(iii) उपमा अलकार वाले दोहे–2, 4

प्रश्न 6. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखिए।

उत्तर—(क) मानिष=मनुष्य। रलि=रलना। नांव=नाम। क्षीण= कौन। पडंत=पढ़ना। गुर=गुरु। ग्यान=ज्ञान। उबरत=उबरना। तिणका= तिनका। सम्रथ=समर्थ। पुरिस=पुरुष। दीसंत=दीखना। षीणा=कीण। देषों=देखना। प्रतषि=प्रत्यक्ष। जाणि=जानना

(ख) संकलित दोहों में से दो–दो संस्कृत, ब्रज, राजस्थानी तथा फारसी के शब्द छांटिए।

उत्तर—संस्कृत--देवता, कंचन।
ब्रज--भई, खेली।
फारसी--तटसार, दाब।

प्रश्न 7. पीलक दौडी साइयां, लोग कहें पिण्ड रोग।
छाने लघण नितक रै राम पियारे जोग॥
इसके सर्वोत्तम का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए।

उत्तर-(ख) वे अपने प्रिय से मिलने के लिए उपवास करने से पीले हैं।

प्रश्न 8. हांसी खेलो हरि मिलै भगवान।

उपयक्त साखी के रेखांकित पद में निहित आशय का क्रमांक कोष्ठक लिखिए।

उत्तर—(घ) भगवान सरलता से प्राप्त नहीं होते।

प्रश्न 8. सौ बूंटी पाऊ नहीं जाते जीवनि होई।

प्रस्तुत साखी में 'बूंटी' से कवि का क्या तात्पर्य है? सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए--

उत्तर--(ग) दिव्य जीवन की कुंजी

प्रश्न 10. कवि विरहिणी के रूप में जीने की अपेक्षा पीव के साथ जल मरने की सीख क्यों देता है?

उत्तर- क्योंकि विरह में तड़पते रहने से पति के साथ मर जाना वस्तुतः श्रेयष्कर है। संसार पति की मृत्यु के बाद विरह में रोते रहने वाले प्राणियों की हंसी करता है।

प्रश्न 11. मेला पायो ············ बांहै।

उपयुक्त साखी के निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--उपर्युक्त साखी का भाव यह है कि संसार रूपी सागर वस्तुतः माया जाल है। इस सागर में से अपने आपका उद्धार करना बड़ा कठिन है।

प्रश्न 12. आठ पहर का दाझणा मोपे सह्या न जाइ।

उपर्युक्त पंक्तियों के मूल भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--भाव यह है कि आठों पहर रोते रहने एवं भटकते रहने से मृत्यु ही अच्छी है। कबीर वियोग से मृत्यु को अच्छा समझते हैं।

प्रश्न 13. कबीर की भक्ति पद्धति पर अपने विचार लिखिए। (सीमा 100 शब्द)

उत्तर--भक्ति पद्धति--महात्मा कबीर निर्गुण भक्ति शाखा के कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आप निर्गुण पन्थ की ज्ञानाश्रयी शाखा के सन्त थे। अतः आपने अपनी भक्ति पद्धति के अन्तर्गत ईश्वर को निर्गुण एवं निराकार माना। आपने जाति-पांति, ऊंच नीच, पूजा पाठ, बाह्याडम्बर आदि की व्यर्थता पर व्यंग्य किया। उन्होंने पत्थर पूजा, मूर्ति पूजा का विरोध किया तथा ईश्वर का निवास मानव की आत्मा में बतलाया ज्ञान के स्थान पर प्रेम को विशेष महत्व दिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा --

"ढाई अक्षर प्रेम का पढे सो पण्डित होय।"

2. मलिक मोहम्मद जायसी

हल द्वीप वर्णन खण्ड--

सिंहलद्वीप कथा............... सिंहलद्वीप समीप ॥ ॥

कठिन शब्दार्थ—निरमल=स्वच्छ। बिसेखा देखा। धनि धन्य है। सरि=सदृश। तसा=वैसा। आरन=आरण्य। हरा रहित। उत्तिम-उत्तम श्रेष्ठ।

अर्थ--जायसी कवि का कथन है कि अब हम सिंहलद्वीप की कथा का गान करते हैं और वहां की पद्मिनी नारी पदमावती का वर्णन सुनाता है। उसे पद्मिनी का रूप स्वच्छ दर्पण के समान है जो व्यक्ति उसमें देखता है उसे जैसा जिसका रूप है वैसा ही दिखाई देता है। वह द्वीप वस्तुतः धन्य है जहां दीपक के समान नारियां है तथा जहां परमेश्वर ने पद्मावती

का अवतार कराया है। सभी लोक सात दीपों का वर्णन करते हैं। परन्तु ऐसा द्वीप कोई नही है जो सिंहल द्वीप के समान हो। यद्यपि दिय द्वीप नामक द्वीप है परन्त वहा सिंहलद्वीप जैसा उजियाला नहीं है। सरनदीप भी उसके समान नही है। जंबू द्वीप भी उसके समान नहीं है। लका दीप तो उसकी परछाई को भी नही पहुच सकता है। गमस्थल दीप जंगल पड़ा है तथा मरु-स्थल द्वीप मनुष्यों से शून्य है।

इस प्रकार इस संसार में सबसे पहले वे ही सात द्वीप बने परन्तु इनमें से उत्तमता में एक द्वीप भी सिंहल द्वीप की तुलना में नहीं आ सकता है।

जबहिं दीप···· ·················सदा बसंत ।।2।।

कठिन शब्दार्थ— नियर=समीप । कबिलास=स्वर्ग । अमराउ=आम के वृक्ष। रैन=रात्रि। पथिक राहगीर। घामू=धूप।

अर्थ - जब भी हम उस सिंहलद्वीप के समीप जाते हैं तो ऐसा लगता है मानो स्वर्ग के समीप पहुंच गये हों। जिस द्वीप के चारों ओर घने आम के वृक्ष हैं जो ऐसे लगते हैं जैसे पृथ्वी से उठकर आकाश से लग गये हैं अर्थात् गगनस्पर्शी बड़े-बड़े आम के वृक्ष हैं। वहां जितने भी वृक्ष हैं वे सब मलयाचल से लाये हुए हैं, उन वृक्षों से संसार में छाया हो गई है तथा रात सी होती आ रही है। सुगन्धित मलय-समीर वृक्षों की छाया में शोभा पाता है, उस छाया में बैठने पर ज्येष्ठ मास में भी जाडा लगने लगता है। उनकी गहन छाया से रात्रि प्रतीत होती है, वे सब हरे भरे है अतः आकाश भी हरा दिखाई देता है। राहगीर अत्यन्त गर्मी को सहन कर जब उनकी छाया में पहुंचते हैं तो दुःख को भूल जाते हैं तथा उन्हें निरन्तर सुख की प्राप्ति होती है। जो उन वृक्षों का अद्भुत छाया को प्राप्त करता है, वह वापस आकर धूप को सहन नहीं करता है।

इस प्रकार हरे भरे आम के घने वृक्षों का वर्णन करना बड़ा कठिन है वे वृक्ष छओं ऋतुओं में फलते-फूलते हैं तथा ऐसा लगते हैं जैसे वहा सदैव बसन्त ऋतु ही रहती है।

ताल तलाव·······················वह सीप 3 ।।

कठिन शब्दार्थ— वारवारि=जल । उए=उग आये। हुलासा=हुलास, प्रसन्नता। मीन मछली। मरजिया=गोताखोर।

अर्थ—सिंहलद्वीप के ताल एवं तालाबों का वर्णन नहीं किया जा सकता है। उन्हें देखने पर केवल पानी ही पानी दिखाई देता है परन्तु उस पानी का पार दिखाई नहीं देता। श्वेत कमल और कुमुद ऐसे खिल रहे हैं, मानों आकाश में तारे खिल रहे हों। बादल उतर रहे हैं तथा जल लेकर पुनः ऊपर चढ़ रहे हैं, जल में मत्स्य चमक रहे हैं जैसे मेघों में बिजली चमक रही है, पक्षियों के पख एक साथ श्वेत पीत लाल एवं अनेक रंगों में सुशोभित हो रहे हैं चकवा-चकवी परस्पर क्रीड़ा करते हैं। वे रात्रि में बिछुड़े हुए दिन में पुनः मिल जाते हैं। सारस पक्षी ऐसा कहते प्रतीत होते हैं कि हमारा जीवन शून्य है क्योंकि हम दोनों प्रेमी साथ-साथ मरते हैं। ताल के सोन, ढग बग, लेदी आदि चिड़ियां बोल रही हैं। केवल जल में रहने वाली मछलियां चुप हैं।

उस ताल में अमूल्य नग हैं जिनसे ऐसा लगता है जैसे दिन में ही दीपक जल रहे हों। उस मोती वाली सीप को वही प्राप्त कर सकता है जो कि अत्यन्त साहसी एवं गोताखोर के समान हिम्मत वाला हो। भावना यह है कि सिंहलद्वीप पहुंचना हर व्यक्ति की हिम्मत का काम नहीं है।

पद्मावती नखशिख खण्ड –

का सिंगार……………………कैसे कै बांद ।।।

कठिन शब्दार्थ-ओहिक=उसका। ओह पै=उसी पर। बिसहर=सर्प। अरघानी=सुगन्ध। कोंवर=कोमल। फदवार=घुंघराले। कुरी=कुल वाले। बंध=लिपटे हैं।

अर्थ-हीरामनि शुक राजा रत्नसेन से पद्मावती के सौन्दर्य का वर्णन करते हुये कहता है कि हे राजन! इस पद्मावती के शृंगार का क्या वर्णन किया जाये? इसका शृंगार तो उसी पर सुशोभित होता है अर्थात् उसका शृंगार उसके जैसा ही है, उसकी किसी से समानता नहीं की जा सकती है। सर्व प्रथम उसके मस्तक पर कस्तूरी के समान काले बाल सुशोभित हैं। उन बालों पर वासुकी नाग भी बलिहारी जाता है और राजाओं की तो बात ही क्या? रानी मानो मालती कुसुम है, उसके केश भौंरे हैं जो विषधर सर्पों की

भांति लहरा रहे हैं और उसकी सुगन्ध ले रहे हैं। वह अपनी चोटी खोलकर जब बालो को झाड़ती है तो स्वर्ग पाताल लोक में एक साथ अन्धकार हो जाता है। उसके कोमल टेढ़े बाल सर्प के समान काले हैं वे ऐसे लहराते हैं जैसे सर्प मुंह फैलाकर लहरा रहे हों।

वे केश ऐसा फन्द डालने वाले थे कि दूर होने पर भी राजा का शीश और गर्दन उसके फन्दे में पड़ ही गये। इन केशों के बन्धन में तो आठों कुलों के नागों के अधिपति आकर बन्ध गये हैं। अर्थात् उसके केशों में मूर्छित करने वाली विष भरी शक्ति अष्टकुल के महानागों से अधिक थी।

रसना वर्णन--

रसना कहौं..............लागै बान ॥1॥

कठिन शब्दार्थ -- रसना=जिव्हा। राता=अनुरक्त हो जाता है। हरै=चुराते हैं। चत्रिक=चातक। माति=मतवाला। धुमि=घूमकर। भागवत=महाभारत। भासवति=ज्योति का ग्रन्थ विशेष।

अर्थ--शुक कहता है कि अब मैं जीभ का वर्णन करता हूं जिससे वह रसीली बात करती है। उसके अमृतमय वचनों को सुनकर मन-अनुरक्त हो जाता है। उसके स्वरों ने कोयल और चातक के स्वरों को हर लिया है। वीणा और वंशी में भी उन स्वरों की मिठास नहीं मिलती। चातक, कोयल, सभी ऋतुओं में नहीं रहते हैं क्योंकि वे उसके वचन को सुनकर लज्जा के मारे कहीं छिप जाते हैं। वह प्रेम रस से भरे हुए वचन बोलती हैं, जो उन्हें सुनता है वही मतवाला होकर घूमने लगता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्वेद में जो कुछ है, वह उसके पास है। वह जो एक-एक शब्द बोलती है उसके चार-चार अर्थ होते हैं। उन्हें सुनकर इन्द्र मोहित हो जाता है तथा ब्रह्मा अपने मस्तक को धुनने लगता है। अमर कोष, भागवत, पिंगल शास्त्र एवं गीता में अर्थ को देखने पर भी पण्डित उसे जीत नहीं पाया है।

भासवती, व्याकरण, पिंगल एवं पुराण आदि उसने पढ़ रखा है। यह वेद के रहस्यों को इस प्रकार जानती है कि उसे सुनकर लोग दंग हो जाते हैं, विद्वानों को तो जैसे बाण लग जाता है।

वियोग वर्णन

कुहुकि कुहुकि............ आवै कंत ।।11।।

कठिन शब्दार्थ—घुंघुची गुंजा रत्ती । राती लाल । सिरान= ठण्डा । करे कुंजा-क्रौञ्च पक्षी । परवर परवल

अर्थ—नागमती कोयल के समान कुहुक-कुहुककर रोई । उसके रक्त के आंसू गिरे । उन आंसुओं से वन में गुंजा के बीज बोये गये । वह काले मुख वाली हो गई, आंखें एवं शरीर लाल हो गए । विरह के दुख से तृप्त उसके शरीर को कौन ठण्डा करें । वन में रहने वाली वह जहां-जहां खड़ी होती है, वहां-वहां रत्ती के ढेर हो जाते हैं । मानों उसकी आंसुओं की बूंद बूंद में जीव है और प्रत्येक कुंज से पी-पी की रट निकलती है अथवा प्रत्येक कुंज से क्रौंच पक्षी पीव-पीव गुंजन करता है । उसके दुख से पलाश के पेड़ भी पत्र रहित हो गए हैं । उसकी आंख से निकले खून के आंसू प्रभात में पूर्व दिशा की ललाई में प्रकट हुए । बिम्बाफल भी उसी के खून से लाल हो गए । परवल पककर पीला पड़ गया, गेहूं का हृदय फट गया । वह जहां जहां देखती है वहां-वहां ललाई चढ़ जाती है परन्तु जहां पर रत्न सिंह है, वहां जाकर यह बात कौन कहे ?

ऐसा लगता है कि उसके देश में न तो वर्षाऋतु होती है और न ही हेमन्त तथा वसन्त ऋतु होती है । न वहां कोयल है और न पपीहा है जिसे कि सुनकर कंत स्वामी आ जावे ।

अभ्यास के प्रश्न

सिंहल द्वीप वर्णन—

प्रश्न 1. सिंहल द्वीप को कवि ने क्यों धन्य माना है ? स्पष्ट कीजिए ।

(सीमा शब्द 30)

उत्तर—सिंहल द्वीप को धन्य इसलिए माना है क्योंकि वहां दीपक समान नारियां हैं तथा वहीं पर ईश्वर ने पद्मावती का अवतार करवाया है, जिसका कि रूप स्वच्छ दर्पण के समान है ।

प्रश्न 2. सिंहल द्वीप कहां स्थित है और उसके आस-पास के द्वीप के क्या नाम हैं ? लिखिए । (सीमा 40 शब्द)

उत्तर- सिंहल द्वीप को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कतिपय विद्वान सिंहल को वर्तमान लंका मानते हैं, उनका आधार लंका के अंग्रेजी नाम 'सी-लोन' और सिंहल में काफी समानता होती है इनकी दृष्टि से 'सीलोन' सिंहल का ही बिगड़ा हुआ नाम प्रतीत होता है। जायसी के अनुसार सिंहल हठयोगी सिद्धांतों का सिद्धपीठ माना जाता था अन्य द्वीप निम्न है दिया द्वीप जो काठियावाड़ समुद्रतट के पास है। सरन दीप (स्वर्ण द्वीप) – आधुनिक सुमात्रा द्वीप। जम्बूद्वीप=भारत। लंकादीप=लंका। महुस्थल–मरुस्थल द्वीप।

प्रश्न 3. अन्य द्वीपों के नाम कवि ने किस आशय से लिये हैं? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर- अन्य द्वीपों के नाम कवि ने सिंहल द्वीप की तुलना उनसे करके उसे श्रेष्ठ प्रमाणित करने के हेतु लिए हैं। कवि का आशय यह है कि पद्मावती ब्रह्म का प्रतीक है अतः सिंहल द्वीप आध्यात्मिक जगत है जिसमें ब्रह म (पद्मावती) का निवास है। शेष छः द्वीप नारी के प्रतीक हैं।

प्रश्न 4. निम्नलिखित द्वीपों के आगे उन अंगों का नाम लिखिए जिनकी सुन्दरता इन्हीं द्वीपों के माध्यम से बताई गई है—

उत्तर दिया द्वीप = नेत्र।
सरनदीप=श्रवण या कान।
जम्बू दीप=जामुन जैसी काली अलकें।
लंक द्वीप=कटि प्रदेश।
कुसस्थल=कुच प्रदेश।
महुस्थल=गुह्य अंग।

प्रश्न 5. 'नग अमोल·······वह सीप' दोहे के निहित आशय को स्पष्ट कीजिये। (सीमा 30 शब्द)

उत्तर - अर्थ भाग देखें।

प्रश्न 6. जबहिं दीप नियरावा जाई। जनु कविलास नियर भा आई।

उपर्युक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है? सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में अंकित कीजिये।

उत्तर (ख) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 7. अस अमराऊ सघन घन, बरनि न पारौं अन्त।
फूलै फरै छवौ ऋतु, मानहु सदा बसन्त।।

उपर्युक्त पंक्तियों का निहित आध्यात्मिक भाव स्पष्ट कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर–भाव यह है कि उस द्वीप में पहुंचने वाले साधकों को सदानन्द की प्राप्ति होती है। एक बार उस छाया के पाने के बाद फिर सांसारिक धूप नहीं सहनी पड़ती। प्रकृति का जो वर्णन यहां है। उसमें प्राकृतिक रहस्यवाद की झलक मिलती है। अन्तिम पंक्ति द्वारा कवि ने 'आध्यात्मिक परमानन्द' की प्राप्ति का संकेत किया है।

प्रश्न 8. निम्नलिखित चार पंक्तियों से सम्बन्धित आशय की पद्य-पंक्तियों को पठित अंश में से छांट कर लिखिये—

(1) कुमुद और श्वेत कमल ऐसे प्रतीत होते है मानों आकाश में नक्षत्र उदित हो रहे हैं।

उत्तर– फूले-कुमुद······················मंह तारे।।

(2) तालो के जल में चमकीली मछलियां विद्युत के समान लगती हैं।

उत्तर––"चमकहि मच्छ बीजु कै बानी।"

( ) सारस ऐसा कहते प्रतीत होते है कि हमारा जीवन धन्य है क्योंकि हम दोनो प्रेमी साथ-साथ मरते हैं।

उत्तर––कुररहि साहस करहि······················एकहि पासा।।

(4) जान पर खेलकर गोता लगाने वाले ही वे सीप प्राप्त करते हैं जिनमें मोती हैं।

उत्तर—"जो भर जिया होई तहं, सो पावै वह सीप।"

प्रश्न 9. पद्मावत किस छन्द में लिखा गया है? सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में अंकित कीजिए।

उत्तर—(ग) चौपाई और दोहा।

केश-वर्णन

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 शब्दों में दीजिए--

(क) पद्मावती के केशों की उपमा किस वस्तु से दी गई है ?

उत्तर---पद्मावती के केशों की उपमा कस्तूरी, भ्रमर, काले सर्प विषधर सर्प, प्रेम की जंजीर आदि से दी गई हैं ।

(ख) कस्तूरी कहां प्राप्त होतीहै,उसको क्या-क्या विशेषतायें है?

उत्तर--कस्तूरी मृग की नाभि से प्राप्त होती है। वह अत्यन्त काले रंग की होती हैं परन्तु उसमें अत्यधिक गुण होते हैं। वह अत्यन्त गर्म तासीर की होती है। आयुर्वेदिक दवाइयों में उसका महत्वपूर्ण स्थान है।

(ग) मालती पुष्प तथा काले भंवर किसे कहते हैं ?

उत्तर - मालती पुष्प रानी पद्मावती को कहा गया है तथा उसके केशों को भंवर कहा गया है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्ति का काव्य सौन्दर्य अभिव्यक्त कीजिए?

(क) बैनी छोरी झार जौ बारा। संगत पतार होइ अंधियारा॥

उत्तर--यहां पर अतिशयोक्ति अलंकार है।

(ख) कोंवर कुटिल केशवग कारे। लहरन्हि भरेंभुअंग बिसारे?

उत्तर--'क' वर्ण की आवृत्ति होने से वृत्यनुप्रास अलंकार है। साथही टेढ़े बालों को सर्पों जैसा बताया है, अतः उपमा भी है।

(ग) बेधं बेनी मलैयगिरी वासा। सीस चढे लौटहि चंहु पासा॥

उत्तर--इस चौपाई में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

प्रश्न 3. यह पद किस शैली में वर्णित है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—यह पद वर्णनात्मक एवं अलंकारमयी शैली में लिखा गया है। सहज अवधी भाषा का कवि ने यह प्रयोग किया है। इस पद में मर्म-स्पर्शी भाव व्यंजना दृष्टव्य है। नख-शिख सौन्दर्य वर्णन फारसी विचार धारा के अनुसार किया है।

प्रश्न 4. संकलित पद में रूपक, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग हुआ है। सम्बन्धित अलंकार युक्त पंक्तियां छांटिए तथा उनका भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--रूपक अलंकार युक्त पंक्तियां--

(i) सकरै पेम चहे गिउ पनी।

(ii) भौर कस, वह मालती रानी।

अतिशयोक्ति अलंकार युक्त पंक्तियां--

(i) बेनी छोरि झार जो बारा। सगर पतार होइ अंधियारा।

(ii) अस्टी कुरी नाग सब अरुझ केस के बाद॥

उत्प्रेक्षा अलंकार युक्ति पंक्तियां--

(i) बेधे जनों मलयागिरि वासा।

(ii) लइरन्हि भरे भुअंग बैसारे।

नोट--पंक्तियों का भाव अर्थ भाग में देखें।

प्रश्न 5. सर्प एवं केश के पर्यायवाची शब्द लिखियें।

उत्तर -सर्प=अहि, भुजंग, विषधर, नाग।

केश=बाल, केस, अलक।

प्रश्न 6. 'अस फंद बारे केस..........नेश के बाद

उपर्युक्त दोहे का आशय स्पष्ट कीजिये।

उत्तर--दोहे का अर्थ देखिये।

रसना वर्णन—

प्रश्न 1 पद्मावती की वाणी की निम्न बिन्दुओं के आधार पर विशेषतायें स्पष्ट कीजिये।

उत्तर --(क) सुधामयी पद्मावती की वाणी अमृतमयी थी। अतः जो उसकी वाणी को सुनता था वही अनुरक्त हो जाता था। उसके वचन इतने मधुर थे। कि चातक एवं कोयल का स्वर भी उसकी तुलना नहीं कर सकता था। प्रेम रस भरी वाणी वह जब बोलती थी, तो सुनने वाला मतवाला होकर घूमने लगता था।

(ख) ज्ञानमयी -पद्मावती की वाणी अमृत के समान मधुर होने के साथ साथ ज्ञान युक्त भी थी। उसने चारों वेदों का अध्ययन कर रखा था। वह जो एक-एक बात बोलती थी। उसके चार-चार अर्थ निकलते थे।

(ग) शास्त्रमयी -पद्मावती की वाणी शास्त्रमयी भी थी क्योंकि उसने सभी शास्त्रों का अध्ययन किया था, भासवती नामक ज्योतिष ग्रन्थ, व्याकरण, पुराण एवं पिंगल आदि शास्त्रों का उसने गहन अध्ययन किया था।

प्रश्न 2. चारों वेदों के शुद्ध नाम लिखिये।

उत्तर--ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध हिन्दी रूप लिखिये।

उत्तर—अंब्रित=अमृत। चात्रिक=चातक। माति=मस्त। रिग=ऋग्वेद। अथरबन=अथर्व। बरम्हा=ब्रह्मा।

प्रश्न 4. 'रसना वर्णन' चौपाइयों का काव्यगत सौदंर्य लिखिये

उत्तर--'रसना वर्णन' चौपाई में भाव की गहनता एव भाषा की सरलता है। अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग है। इससे यह भी आभास होता है कि जायसी को संस्कृत वाड्मय के प्रति अपार श्रद्धा थी। जायसी जिह्वा का गुण केवल मीठा स्वर ही नहीं मानते वरन् ज्ञानगरिमा को भी आवश्यक मानते थे।

नागमति वियोग खण्ड—

प्रश्न 1. नागमति के विलाप का क्या कारण था?

(सीमा 20 शब्द)

उत्तर -नागमति के विलाप का कारण राजा रतनसेन का चित्तौड़ से चले जाना तथा काफी समय तक वापस न आना था।

प्रश्न 2. सकलित चौपाइयों का भाव एवं काव्य-सौन्दर्य अपने शब्दों में लिखिये। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर—संकलित चौपाइयों में ऋतु का उद्दीपक प्रभाव विरहियों पर व्यंजित किया गया है। इन चौपाइयों में जगत के नाना उपादानों में विरह की छाप दिखाई गई है, सारी उत्प्रेक्षायें विरह के ऊहात्मक रूप में चित्रित हैं। दोहे में नागमति के विरह व्यथित हृदय की धार्मिक अभिव्यंजना है।

प्रश्न 3. गूंजा गूंजि करौ पिऊ-पिऊ।

उपर्युक्त पंक्ति में रेखांकित पक्षी का नाम कोष्ठक में अंकित कीजिए।

(क) पपीहा (ख) कोयल (ग) क्रौंच (घ) मोर

उत्तर--(ग) क्रौंच

प्रश्न 4. तेहि दुखमहे..............................गोहू ।

उत्तर—उपर्युक्त पंक्तियों का मूल भाव यह है कि नागमति का सम्पूर्ण शरीर विरह की आग में घधक कर लाल हो गया था। वह विरह में अत्यन्त दुखी थी अतः उसे संसार की अन्य वस्तुएं भी वैसी ही प्रतीत हो रही थीं। इसीलिए पलाश के वृक्ष पत्रहीन दिखाई दे रहे थे, बिम्बाफल उसे अपने रक्त में भीगे होने के कारण लाल दिखाई दे रहे थे। उसे यह लगता था कि उसके दुःख को देखकर प्रत्येक दुःखी है।

3. सूरदास

विनय आत्म निवेदन—

विनती करत..............................लोक अवाज ॥1॥

कठिन शब्दार्थ—हौं=मुझे। लौं=तक। पतितनि=पापियों का। भयौ=डरगया। अबलौं=अब तक। बिरद=यश।

अर्थ—सूरदास जी कहते हैं कि हे प्रभु! विनती करते हुये मैं लज्जा से मर रहा हूं।

नख से लेकर शिखा तक यह मेरा सम्पूर्ण शरीर पाप का जहाज है। और पापी मुझे दृष्टिगत नहीं होते केवल अपने ही पापों को मैं देखता हूं अर्थात् मैं सबसे बड़ा पापी हूं। मैंने बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक जीवन यापन कर दिया फिर भी अपनी आदतों से बाज नहीं आया। मेरा यह शरीर न तो पीछे होता है और न आगे ही होता है, सब पापियों में यह श्रेष्ठ है अर्थात् पापियों में अग्रगण्य है। मेरा नाम सुनकर नरक भी भयभीत हो गया और यमराज ने अपनी पीठ दे दी अर्थात यमराज ने भी मेरी तरफ देखने का साहस नहीं किया। हे प्रभु! अब तक जो आपने छोटे मोटे पापियों का उद्धार किया है वह सब तो व्यर्थ एवं निष्फल ही समझिये, सच्चा यश तो सूरदास का उद्धार करने पर मिलेगा तथा संसार में आपका नाम हो जायेगा।

प्रभु हौं सब..............................तैं को नीको ॥2॥

कठिन शब्दार्थ—हौं=मैं। टीको=मुखिया। अघ=पाप।

अर्थ—सूरदास जी भगवान् से विनती करते हुये कहते हैं कि

प्रभु ! मैं सब पापियों में मुखिया हूं अर्थात् सबसे बड़ा पापी हूं।
जितने भी पापी हैं वे अल्प समय के हैं और मैं जन्म से पापी हूं। आपने बधिक अजामिल, गनिका एवं पूतना का उद्धार किया आपने मेरे को छोड़कर और सभी का उद्धार कर दिया, ऐसी स्थिति में मेरे हृदय की पीडा किस प्रकार दूर हो ? इस संसार में मेरे अलावा कोई भी पाप करने को समर्थ नहीं है यह मैं पूर्ण ताकत के साथ [illegible] सत्य कह रहा हूं। सूरदास जी कहते हैं कि पापियों में मरते हुये मुझे लज्जा आती है अतः आप मेरा उद्धार कर दो।

उद्धव गोपी संवाद—

कोऊ ब्रज..................................दुःख दै थाती ॥ 3 ॥

कठिन शब्दार्थ— बांचत=पढता है। पाती=पत्र। पठवन=भेजना। कांती=विरह काटने की कटार। परसै=स्पर्श करने पर। बिलोके=देखने पर। थाती=धरोहर।

अर्थ--गोपियां कहती है कि ब्रज में कोई भी हमारे पत्र को नहीं पढता है। नन्द के पुत्र श्री कृष्ण ने कितनी बार लिख-लिखकर भेज दिया। विरह की कटार अत्यन्त कठिन है। हमारे नेत्र अश्रु सहित हैं तथा पत्र अत्यधिक कोमल हैं, हाथ की अंगुलियां अत्यन्त गर्म हैं। स्पर्श करने पर पत्र जलता है, पत्र को देखती है तो वह अश्रुओं से भीग जाता है। दोनों प्रकार से ही हृदय में दुःख है। सूरदास जी कहते हैं कि कृष्ण के इन अक्षरों को कौन पढ़े। कामदेव के बाण अत्यन्त कठोर एवं आघात पहुंचाने वाले हैं। हमारा सम्पूर्ण सुख तो भगवान श्याम सुन्दर ले गये तथा हमारे पास दुख रूपी धरोहर छोड़ गये हैं। भाव यह है कि कृष्ण वियोग में गोपियां अत्यन्त दुखी है।

ऊधो हमहिं..................................आस में लीन ॥4॥

कठिन शब्दार्थ--तृन=घास। बिहंगम=पक्षी। छय=क्षय। मीन=मछली आस=आशा।

अर्थ—गोपियां उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव ! हमें काहे को समझाते हो। ब्रज के पशु, पक्षी, सुरभी गायें आवाज सुनकर देखने के लिए आते है। गायें घास नहीं चरती, बछड़े दूध नहीं पीते, वे कृष्ण को वन वन

ढूंढते फिरते हैं। भ्रमर कोयल आदि पक्षी भयानक आवाज में बोलते हैं। यमुना नदी कृष्ण के बिना श्याम वर्ण की हो गई है तथा चन्द्रमा अत्यन्त क्षीण हो गया है जैसे तपेदिक का बीमार हो। वृक्ष अपने पत्र रूपी वस्त्रों को नहीं सभालते अर्थात् वे वियोग में पत्र विहीन हो गये हैं। विरह मेंवृक्ष योगी बन गये हैं। इस प्रकार गोकुल के सभी लोग उसी प्रकार दुःखी हैं जैसे जल के बिना मछली दुःखी होती है। सूरदास जी कहते हैं कि व्रजवासियों के प्राण अवधि की आशा में लीन हैं अर्थात कृष्ण जी समय देकर गये हैं इसका वे इन्तजार कर रहे हैं, इसीलिए प्राण नहीं छूट रहे हैं, वे आशा में अटके हुए हैं।

गोपी–विरह—

हमारे माई……………………न टरे ॥ 5 ॥

कठिन शब्दार्थ– बरज्यो=मना करने पर। ढीठ–बदमाश। अरे–अड़े हुए। टेर=हटना।

अर्थ हमारे ये मयूर बैरी बन गये हैं। ज्योंहि बादल गर्जना करता है [illegible] करने पर भी नहीं मानते हैं तथा जोर-जोर से आवाज करते हैं। ये [illegible] पंख ज्यों ही प्रगट कहते हैं अर्थात् नृत्य करते समय जब पंख फैलाते हैं तो कृष्ण इनके पंखों को लेकर अपने मस्तक पर धारण करते हैं। इसी कारण ये विरहणियों को कुछ भी नहीं समझते हैं। मोहन ने इन्हें बदमाश बना दिया है। हे सखी पता नहीं क्यों ये (मयूर) हमारे से सदैव अड़े रहते हैं। सूरदास कवि कहते है कि गोपियों को यह शिकायत है कि कृष्ण तो दूसरे देश में रहते हैं और ये मयूर वन से भी नहीं हटते हैं अर्थात् ये कहीं पर भी नहीं जाते हैं। प्रस्तुत पद में मोरों के प्रति गोपियों ने अपना रोष व्यक्त किया है।

सारंग स्यामहिं……………………आनि दिखाइ ॥ 6 ॥

कठिन शब्दार्थ—सुरति–याद। टेरि–आवाज, पुकारना। करिया–कर्णधार। नाइ–नाव।

अर्थ—हे मयूर ! भगवान् कृष्ण को हमारी याद दिलाओ। जहां पर नन्द के पुत्र कृष्ण सो रहे हों, वहां जाकर तुम उच्च स्वर में अपनी अपनी आवाज सुनाना। अब तो गर्मी की ऋतु व्यतीत हो गई है तथा वर्षा की ऋतु

आ गई है सभी हृदय से तुम्हें चाहते हैं। तुम्हारे बिना ब्रज में रहने वाले इस प्रकार डोल रहे हैं जैसे कर्णधार के बिना पानी में नाव इधर उधर डोलती रहती है। हे सारंग ! कृष्ण तुम्हारा कहना मानते हैं अतः तुम उनके चरण पकड़ कर यहां ले आओ। इस बार तो सूरदास के प्रभु भगवान् कृष्ण को नेत्रों के सामने लाकर दिखाना अर्थात् इस बार कृष्ण को अवश्य लाना।

बहुत दिन……………………करि खारौ ।। 7 ।।

कठिन शब्दार्थ--पपिहा–चातक। बासर–दिन। रैनि–रात। जिय–हृदय में। अनियारौ–अनुपम।

अर्थ--हे प्रिय चातक तुम बहुत दिनों तक जीवित रहो। तुम रात दिन नाम ले लेकर बोलते हो। विरह में तम बिल्कुल काले पड़ गये हो। दूसरे को दुःखी जानकर तुम हृदय में दुखी हो जाते हो। इसलिए तुम्हारा नाम चातक रखा गया है। हमने सब कुछ विचार कर देख लिया है कि वियोग का दुख अलग ही प्रकार का होता है। जिसके हृदय में लगती है वही जानता है अर्थात् जिसके लगती है उसी के पीड़ा होती है। प्रेम का बाण बड़ा ही अद्भुत है। सूरदास जी कहते हैं कि चातक पक्षी ने स्वाति नक्षत्र की बूंद पाने तक के समय के लिए समुद्र को खारा बनाकर छोड़ दिया है। भाव यह है कि चातक केवल स्वाति नक्षत्र की बूंद ही ग्रहण करता है अतः अन्य दिनों में समुद्र उसके लिए खारे पानी तुल्य ही है।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. नीचे लिखे प्रत्येक प्रश्न का लगभग 30 शब्दों में उत्तर दीजिए—

(1) विनती करने में सूरदास लाज का अनुभव क्यों कर रहे हैं ?

उत्तर--सूरदास विनती करने में लाज का अनुभव इसलिए कर रहे हैं क्योंकि उनकी सम्पूर्ण देह पापों से भरी हुई जहाज है। वे सभी पापियों के अग्रगण्य हैं। वे अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं इसलिए भी उन्हें लज्जा आ रही है।

(2) गोपियां कृष्ण के पत्र को क्यों नहीं पढ़ पातीं ?

उत्तर--गोपियां कृष्ण के पत्र को इसलिए नहीं पढ़ पातीं क्योंकि पत्र को पढ़ते ही उनके नेत्रों में आंसू आ जाते हैं, अतः भीगने का डर रहता है।

हाथ में स्पर्श करने पर उसके जलने का डर रहता है। वियोग में गोपियों का सम्पूर्ण शरीर तपता रहता है।

(3) ब्रजवासियों की विरहाकुल अवस्था लिखिये।

उत्तर– कृष्ण के विरह में सभी ब्रज के निवासी व्याकुल हैं। गायें वियोग में व्याकुल हों घास नहीं चरती, बछड़े दूध नहीं पी रहे हैं, वन-वन में कृष्ण को ढूंढ रहे हैं। भ्रमर कोयल आदि पक्षी भयानक भयानक बोलते हैं। यमुना काली पड गई है तथा चन्द्रमा क्षीण हो गया है। वृक्ष पत्र रूपी वस्त्रों को त्याग कर योगी बन गये हें। गोकुल के सभी लोग उसी प्रकार दुखी हैं जैसे जल के बिना मछली दुखी रहती है।

(4) मोर गोपियों के बैरी क्यों हो गये हैं?

उत्तर––मोर गोपियों के बैरी इसलिए हो गये हैं क्योंकि वे बादल के गर्जना करने पर ऊंची-ऊंची आवाज में 'पीऊ पीऊ' पुकारते हैं। जिसे सुनकर गोपियों को कृष्ण की याद और सताती है। अतः ज्योंही वे बोलते है वियोग की स्थिति में उन्हें बैरी सदृश लगते हैं।

(5) सारंग द्वारा गोपियां क्या सन्देश कृष्ण को भेजना चाहती हैं?

उत्तर––सारंग द्वारा गोपियां कृष्ण को यह सन्देश भेजना चाहती हैं कि वह कृष्ण को उनकी याद दिलाये। वे जहां लेटे हुए हों, वहां जाकर ऊंचे स्वर में पुकारे। वह कृष्ण को कहे कि ब्रजवासियों की स्थिति उनके बिना वैसी ही है जैसे कर्णधार के बिना नाव की होती है। वे कहती है कि इस बार तो वह कृष्ण को अवश्य साथ लेकर आयें।

(6) पपीहे के प्रति गोपियों की सहानुभूति क्यों है?

उत्तर––पपीहे के प्रति गोपियों की सहानुभूति इसलिए है क्योंकि वह सदैव 'पीव पीव' इस प्रकार नाम लेकर बोलता है। वह भी उनके समान वियोग में दुखी है तथा दूसरों के दुःख को भी समझता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–1. नरकौ भयौ नाग सुनि मेरी धीठि दई जमराज सूरदास

है, जिससे कि वे जोश में आकर उद्धार कर दें। इसीलिए इस पंक्ति में हो गया है कि नरक नाम सुनते ही डर गया तथा यमराज ने पीठ दे दी अर्थात् यमराज की भी हिम्मत नहीं हुई।

(2) कोउ न समरथ करिबैहे को खैचि कहत हौं लीको।

भाव—सूरदास जी कहते हैं कि मेरे अलावा अन्य कोई भी पाप करने को समर्थ नही है अर्थात् वे अपने अपको सबसे बडा पापी बताना चाहते हैं। वे कहते हैं कि यह बात मैं जोर देकर कहता हूं तथा बिल्कुल सत्य है।

(3) परसे जरे बिलोकै भीजे दुहू भांति दुख छाती।

भाव—भाव यह है कि गोपियां कृष्ण के वियोग में अत्यन्त व्याकुल हैं। वियोग में उनका शरीर जल रहा है अतः स्पर्श करते ही पत्र के जलने का डर है, पत्र को देख भी नहीं सकती क्योंकि वियोग में आंसू बहते रहते हैं। इस प्रकार उनका हृदय दुःखी है।

(3) क्रत लिखी-लिखि पठवत नंद नंदन कठिन विरह की कांती।

भाव—उक्त पंक्ति का भाव यह है कि कृष्ण ने अनेकपत्र लिख-लिख कर गोपियो के पास भेज दिए है परन्तु वे उन्हें पढ़ने में असमर्थ है। क्योंकि विरह की कटार अत्यन्त कठिन है अर्थात् विरह का कटना बड़ा मुश्किल है।

प्रश्न 3. संक्षिप्त अन्तर्कथायें लिखिए।

बधिक, अजामिल, गनिका, पूतना।

उत्तर—(i) बधिक—यह एक शिकारी था जिसने भ्रमवश श्रीकृष्ण के चरणों को हरिण समझकर उसमें बाण मार दिया था। परन्तु जब उसे अपनी त्रुटि ज्ञात हुई, तो उसने अत्यन्त पश्चाताप किया। ईश्वर ने उसे शांति प्रदान की तथा उसे स्वर्ग में स्थान दिया।

(ii) अजामिल—यह एक पापी ब्राह्मण था। कभी भी भगवान का नाम नहीं लेता था। एक दिन जब वह घर पर नहीं था, तब कुछ साधु उसके घर आये। उसकी सुशील पत्नी ने उसका खूब आदर सत्कार किया। मुनियों ने उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया तथा उसका नाम नारायण रखने का आदेश दिया। समय पर उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। अजामिल अपने इस पुत्र

को बहुत प्यार करता था। जब अजामिल की मृत्यु होने लगी तब उसने अपने ... नारायण को पुकारा ,नारायण, का नाम सुनते ही यम के दूत वहां से लौट गये तथा भगवान के दूत वहां पहुंचे। इस प्रकार भगवान ने उसे मोक्ष प्रदान की।

(iii) गनिका--पिंगला नामक वैश्या थी। जिसने एक दिन अपने प्रेमी की प्रतीक्षा से परेशान होकर वैश्या कर्म हमेशा के लिए छोड़ दिया तथा ईश्वर भक्ति करके मोक्ष प्राप्त की।

पूतना--पूतना एक राक्षसी थी। कंस ने इसे बालक कृष्ण को मारने के लिए भेजा था। परन्तु कृष्ण को वह दूध पिलाकर मारने में समर्थ नहीं हुई तथा कृष्ण ने उसके प्राण खींच लिए। कृष्ण के स्पर्श से उसे मोक्ष प्राप्त हुई।

प्रश्न. 'अबलौ नान्हे-नून्हें तारें, तै सब वृथा अकाज।
सांचो विरद सूर के तारत लोकान लोक अवाज।'

उक्त पक्तियों मे सूर प्रभु से क्या कहना चाहते हैं ? इसीभाव कें तीन और पद छांटकर उनका आशय लिखिए।

उत्तर—उस पक्तियां में सूर प्रभू से यह कहना चाहते हैं कि वे गरदास का शीघ्र उद्धार करें। आज तक जिन लोगों का उद्धार किया गया वे सब निम्न श्रेणी के पापी थे। अतः वे प्रयत्न तो सब निष्फल ही रहा। यदि वास्तव में ही उन्हें यश प्राप्त करना है तो सूरदास का उद्धार करें। जो कि सबसे बडा पापी है। सूरदास भगवान को जोश दिलाकर अपना उद्धार चाहता है।

नोट--इसी भाव के तीन ओर पद 'सूर सागर' पढकर उसमें से छांटे। वैसे प्रथम दो पदों में एक दो पंक्तियां उस भाव की इस संकलन में भी हैं। उनका भाव अर्थ में देखें।

प्रश्न 5. सूरदास जी ने भ्रमर गीत किस उद्देश्य से लिखा है ? काव्य सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए। (सीमा 80 शब्द)

उत्तर—सूरदास जी ने 'भ्रमर गीत' ज्ञान पर भक्तिकी विजय प्रदर्शित करने हेतु लिखा है। यह हिन्दी साहित्य की सशक्त काव्य परम्परा रही है। इन पदों में उद्धव का व्यवहार भ्रमर के तुल्य मानकर इस पर व्यग्य प्रहार किया गया है। इस संदर्भ में गोपियों ने उद्धव के उपदेशों को ठगी का व्यापार बताकर उन्हें अपनाने से स्वीकार किया है। गोपियो का कहना है

कि सगुण उपासना के सम्मुख निर्गुण उपासना नीरस व कठिन है, अतएव भ्रमर गीत के पदों में गोपियों की कृष्ण में अनन्य निष्ठा तथा योग की निष्कृटता काप्रतिपादन मिलता है। गोपियां अपने प्रियतम कृष्ण को अपना सर्वस्व अर्पण कर चुकी हैं। परन्तु उन्हें अपनी दृढ़ नीति में विवशता व्यंजित हो रही है,। इस प्रकार सूर ने भ्रमर गीत के पदों में ज्ञान पर भक्ति की विजय बताकर मानव प्रकृति के व्यापक और सूक्ष्म ज्ञान की संरचना कर अपना वर्चस्व स्थापित किया है।

प्रश्न 6. (i) ''परसें जरैं बिलौके भीजें दुहुभांति दुःख छाती''।
उक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?

उत्तर—(च) अतिशयोक्ति।

(2) 'तुम बिनु ब्रजवासियों डोल ज्यों करिया बिनु नाइ।''
उक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?

उत्तर - (ख) उपमा।

प्रश्न 7. इनके तत्सम रूप लिखिये—

उत्तर—पतितनि=पतित। जमराज=यमराज। जनमत=जन्म से। खैंचि=खींचकर। लीकौ=सत्य। पाती=पत्र। छय=क्षय। बरज्यौ=वर्जन। करिया=कर्णधार। नाइ=जान।

प्रश्न 8. प्रकृति के उद्दीपकों के नाम छाँटिये।

उत्तर—मयूर, पपीहा, कोयल, चक्रवाक, पावस ऋतु (आदि)

प्रश्न 9, गोपियों के द्वारा कहीबातों को जब उद्धव ने कृष्ण के सामने दुहरायी होंगी तब कृष्ण के मन में क्या भावउठे होंगे ? कल्पना कर लिखिये। (सीमा 60 शब्द)

उत्तर—कृष्ण ने उद्धव के मुख से गोपियों की बातों को सुनकर कहा होगा कि मैं पहले ही जानता था कि वे मेरी अनन्य उपासिका हैं। उनका मेरे प्रति असीम प्रेम है। आपको अपने ज्ञानयोग का बडा अभिमान था, पर उस के बल पर आपकी बातों का गोपियों पर कोई प्रभाव नही हुआ। अतः अब मुझे गोपिकाओं के विरह दुःख को दूर करने के लिए वहां स्वयं जाना चाहिये।

प्रश्न 10. सूर के पदों का काव्यगत सौन्दर्य निम्न बिन्दुओं के आधार

राम-भरत सम्मेलन—

बिलोके दूरितें.........................हरि पीर

कठिन शब्दार्थ-बिलोके-देखा। दूरितें-दूर से। आयत-विशाल। आजानु-घुटनों तक। सरसीरुह-कमल। निषंग तरकस।

अर्थ--भरत ने दूर से दोनों भाइयों को देखा दोनों का बिशाल वक्षस्थल, घुटनों तक सुन्दर भुजायें एवं श्याम तथा गौर वर्ण का शरीर था। मस्तक पर जटायें सुशोभित थी, कमल के समान नेत्र थे एवं मुनियों के वस्त्रों का उनका परिधान बना हुआ था। उनके समीप तरकस एवं साथ में सीता सुशोभित थी, हाथ में धनुष बाण थे। भरत ने ज्योंही उन्हें देखा मन अंगड़ाई लेने लगा, शरीर पुलकित होकर शिथिल पड़ गया तथा कमल नेत्र जल से भर गये। उनके गोड़े ऐसे गड़ गये मानों कीचड़ में फंस गये हों वे उन्हें प्रेम रूपी बल से काढ़ रहें थे अर्थात् भरत से भागे नहीं भगा जा रहा था, परन्तु प्रेम उन्हें आगे बढने को बाध्य कर रहा था। तुलसीदास जी कहते है कि जब कृपा निधि श्री राम ने भरत की यह दशा देखी तो अत्यन्त अधीर होकर उठे तथा दौड़कर गये, उन्होंने उसे उठाकर गले लगा लिया तथा विरह से उत्पन्न पीड़ा का हरण कर लिया। अर्थात् राम से मिलकर भरत की बिरह पीड़ा शान्त हो गई।

भरत भए.........................निचोरि ॥ (1-3)

कठिन शब्दार्थ---ठाढे-खड़े । कर जोरि-हाथ जोड़कर। समुहें-सन्मुख बिलोचन-नेत्र श्रवन कान। बोरि-डूबना। बहोरि-फिर।

अर्थ--भरत भी हाथ जोड़कर खड़े हो गये। माता के द्वारा किये गये खोट को स्मरण कर वे सकोच वश श्रीराम के सम्मुख नहीं हो पा रहे हैं अर्थात् सामने खड़ा होने में वे संकोच कर वापस जाने के लिए न कह दें ऐसा हृदय में विचार करने पर, उनके नेत्र पानी से भर गये तथा शरीर प्रेम वश बिभोर हो गया। बनवासी नगर के लोग, महामुनि वशिष्ठ लकड़ी सदृश अर्थात् गतिहीन हो गये। जहां जहां वे कान देकर सुन रहे थे, वहां के वहां उनका मन प्रेम में डूब गया। तुलसीदास जी कहते हैं कि भरत ने राम के स्वभाव का

स्मरण कर, हृदय में फिर से धैर्य धारण किया तथा विनम्र होकर करुणा रस में भीगे हुए उचित बचन बोलना शुरू किया। अर्थात् भरत ने बड़ी मुश्किल से हृदय को धीरज बधाया तथा बोलने की हिम्मत की।

जानत हौ .... निजपनकी ॥ (1–4)

कठिन शब्दार्थ–घन की–बादल की। आरती–कष्ट। परिजन=सेवक लोग। अहि=सर्प।

अर्थ—भरत जी ने श्री राम से बिनती करते हुए कहा कि हे प्रभो आप तो सब के मन की बात भली प्रकार जानते हैं। फिर भी कृपालु! मैं आप से सादर बिनती करता हूं आप इस गरीब की हित की बात सुनिये। मैं आपका अत्यन्त सेवक हूं, जिस प्रकार चातक पक्षी एक मात्र बादल का होता है। ऐसा विचारकर आप पवित्र नगर में गमन कीजिए तथा अपने परिजनो की दुःसह पीड़ा को दूर कीजिए। मेरा जीवन तो आप उस सर्प के समान समझिए जिसकी कि मणि फन से निकाली गई है। तथा फिर भी वह जीवित है। हे कौशल पति! आप कुल के कलंक को मिटाइए, तथा मुझे बन जाने की आज्ञा प्रदान कीजिए। मेरे को आपकी इच्छा हो सो कहिए क्योंकि मेरा जन्म कुमाता से है। तुलसीदास जी कहते हैं कि हे प्रभो! आप भरत से सब दोषों को दूर कीजिए तथा अपने प्रण की लाज रखिए।

काहे को मानत .... धरि लीन्हें ॥ (1–3)

कठिन शब्दार्थ—हिये=हृदय। अवलम्ब=सहरा। बेगि=शीघ्र। उर= हृदय। प्रबोधि=समझाकर। चरनपीठ=खड़ाऊ।

अर्थ—हे भरत! हृदय मेंहानि क्यों मना रहे हो? अर्थात् अपने मन में संकोच क्यों कर रहे हो? प्रेम, नीति, गुण, आचरण एवं धर्म को तुमसे सहारा प्रदान किया हैं। हे भाई! पिताजी इस दिन को नहीं जानते थे। मैंने तो उनकी वाणी को ही प्रमाण माना था अर्थात् उनकी आज्ञानुसार बन में आ गया था। अब तुम हृदय में धैर्य धारण करो तथा यह समझो कि यह सब तो क्रूर समय की गति का ही परिणाम था। तुलसीदास जी कहते है कि भगवान राम ने अपने छोटे भाई भरत को इस प्रकार समझाकर अपनी चरण पादुकाए प्रदान की। ऐसा लगा मानों सभी के प्राण पाहरू भरत ने मस्तक पर धारण कर लिये हों।

अवधि ·················· चरन गहौंगा ॥

कठिन शब्दार्थ—चर्चा=अनावश्यक बोलना । लहौंगा=प्राप्त करूंगा । अवधि लों—चौदह वर्ष के समय तक ।

अर्थ—भगवान राम से चरण पादुका ग्रहण कर भरत ने राम से इस प्रकार विनती की–हे प्रभु ! आपकी आज्ञा प्राप्त कर अवश्य अयोध्या में रहूंगा । हे कृपानिधि ! मेरा जन्म कैकेयी की कुख में है अत: अनावश्यक बात क्यों कहूंगा ? भरत राजा है, सीता, राम एवं लक्ष्मण वन में है यह आनन्द पूर्वक सुनकर सहन करूंगा । नगर के परिजनों एवं सभी माताओं को देखकर सुख एवं संतोष को प्राप्त करूंगा । हे स्वामी ! आप समझिये कि जिस किसी भांति चौदह वर्ष की अवधि तक बचनों का पालन करूंगा । तुलसीदास जी का कथन है कि भरत ने आगे के लिए यह विनती की कि वह वन से वापस आने पर फिर राम की चरण बन्दना करेगा ।

राम लक्ष्मण और सीता छवि चित्रण--

जलज नयन·················· चित्रसार है ॥

कठिन शब्दार्थ--जलजानन=कमल मुख । भामिनी स्त्री । सिलीमुख=बाण । कटि=कमर । तिलोक=त्रिलोकी । चितेरे=चित्रकार ।

अर्थ– कमल के समान नेत्र तथा कमल सदृश मुखवाले सिर पर जिनके जटा सुशोभित हो रही है जिनका जीवन उमगयुक्त है तथा सभी अंग उदार हैं । सांवरे एवं गौर वर्ण वाले के मध्य एक बिजली सी स्त्री सुशोभित है । मुनियों के वस्त्र जिन्होंने पहन रखें हैं तथा हृदय पर जिनके पुष्पों के हार हैं । हाथों में जिनके धनुषबाण सुशोभित है तथा कमर में तरकस विद्यमान है । इस प्रकार के अत्यन्त अद्भूत ये किस राजा के कुमार हैं ? तुलसीदास जी कहते है कि वे तीनों त्रिलोकी के तीन तिलक हैं, उन्हें देखकर सभी नर नारी इस प्रकार चित्रित से हो गये जैसे किसी चित्रकार की चित्रशाला हो । अर्थात् उन्हें देखकर सभी नर-नारी स्तंभित से हो गये । गतिविहिन होकर चित्र लिखित से हो गये ।

आगे सोहे··········· अंग अंग है ।

कठिन शब्दार्थ—अनंग=कामदेव । बेसन=वस्त्र । नीके=अच्छी तरह । निसिनाथमुखी=चन्द्रमुखी । बिसिखासन=धनुष ।

अर्थ—वन के मार्ग में आगे सांवरे वर्ण के राम शोभा पाते हैं और गौर वर्ण के कुंवर, लक्ष्मण उनके पीछे सुशोभित हैं। उन्होंने मुनियों के स्वच्छ वस्त्र धारण कर रखे हैं उन्हें देखकर कामदेव भी लज्जित होता है। बाण एवं धनुष लिये हुये हैं, जंगली वस्त्र पहन रखे हैं, कमर पर निपग अच्छी प्रकार सुशोभित है। साथ में चन्द्रमा के समान मुखवाली सीता सुशोभित हैं, जो लक्ष्मी के समान लग रही है। तुलसीदास जी कहते हैं कि उन्हें देखकर मन आनन्द में उमंगित हो उठा है तथा सम्पूर्ण शरीर उमंग से भर जाता है। उनके रूप की उमंग अंग अंग में उमगने लगती है अर्थात अंग अंग उमंगित हो उठता है।

राम सुग्रीव मैत्री—

तब हनुमत……………………प्रीति दृढ़ाइ ॥

कठिन शब्दार्थ—उभय–दोनों। पावक–अग्नि।

अर्थ—प्रस्तुत चौपाइयां रामचरितमानस के किष्किन्धा काण्ड से ली गई हैं। उक्त दोहे में राम सुग्रीव की मित्रता का वर्णन है तब हनुमान जी ने दोनों ओर की सब कथा सुनकर अग्नि को साक्षी देकर परस्पर दृढ़ करके प्रीति जोड़ दी अर्थात् अग्नि की साक्षी देकर प्रतिज्ञापूर्वक उनकी मैत्री करवादी।

कीन्हि प्रीति……………………जानकी माई ॥

कठित शब्दार्थ—भाषा–कहा। बारी–जल। पट–वस्त्र। तजहु–छोड़ दो।

अर्थ—दोनों ने हृदय से प्रीति की, कुछ भी अन्तर नहीं रखा। तब लक्ष्मण जी ने श्री रामचन्द्र जी का सारा इतिहास कहा। सुग्रीव ने नेत्रों में जल भरकर कहा–हे नाथ ! मिथलेशकुमारी जानकी जी मिल जायगी। सुग्रीव ने कहा कि मंत्रियों सहित मैं एक बार यहां कुछ बिचार कर रहा था। तब मैंने पराये (शत्रु) के वश में पड़ी बहुत विलाप करती हुई सीता जी को आकाश मार्ग से जाते देखा। हमें देखकर उन्होंने राम ! राम ! हा राम ! पुकारकर वस्त्र डाल दिया था। ऐसा कहने पर श्री राम ने उसे सुग्रीव से मांगा तथा सुग्रीव ने तुरन्त दे दिया। सुग्रीव ने कहा-हे रघुवीर ! सुनिये। चिन्ता छोड़ दीजिए और मन में धीरज लाइये। मैं सब प्रकार से आपकी

सेवा करूंगा, जिस उपाय से जानकी जी आकर मिले ।

सखा वचन..........................कहहु सुग्रीव ।।

कठिन शब्दार्थ—हरषे–प्रसन्न हुए । बलसींव बल की ।

अर्थ—कृपा के सागर और बल की सीमा श्री राम जी सखा सुग्रीव के बचन सुनकर हर्षित हुए और बोले हे सुग्रीव ! मुझे बताओ तुम वन में किस कारण रहते हो ?

नाथ बालि..........................उबरहिं प्रान ।।

कठिन शब्दार्थ—नांऊ नाम । धावा–दौड़ा । पैठ-घुसना । निसरी–निकली । बटिआई–जबरन । बिहाला-बेहाल । साप श्राप ।

अर्थ—सुग्रीव ने कहा–हे नाथ ! बालि और मैं दो भाई हैं, हम दोनों में ऐसी प्रीति थी कि वर्णन नहीं किया जा सकता । हे प्रभो ! मय दानव का एक पुत्र था, उसका नाम मायावी था । एक बार वह हमारे गांव में आया । उसने आधी रात को नगर के फाटक पर आकर पुकारा (ललकारा) बालि शत्रु के बल को सहन नहीं कर सका, वह दौडा । उसे देखकर मायावी भागा । मैं भी भाई के संग लगा चला गया । वह मायावी एक पर्वत की गुफा में जा घुसा । तब बालि ने मुझे समझाकर कहा तुम एक पक्ष (पखवाड़े) तक मेरी प्रतीक्षा करना । यदि मैं उतने दिनों तक न आऊ तो जान लेना कि मैं मारा गया ।

हे खर के शत्रु ! मैं वहां महीने भर तक रहा । वहां (उस गुफा में) रक्त की बडी भारी धारा निकली । (तब मैंने समझा कि) उसने बालि को मार डाला । अब आकर मुझे मारेगा । इसलिए मैं वहां एक शिला लगाकर भाग आया । मन्त्रियों ने नगर को जब बिना स्वामी का देखा, तो मुझे जबरदस्ती राज्य दे दिया । बालि उसे मारकर घर आ गया । मुझे (राज सिंहासन पर देखकर उसने अपने हृदय में भेद बढ़ाया । उसने मुझे शत्रु के समान बहुत अधिक मारा तथा मेरा सर्वस्व तथा मेरी स्त्री को भी छीन लिया । हे दयालु ! रघुवीर ! मैं उसके भय से समस्त लोकों में बेहाल होकर फिरता रहा । वह शांप के कारण यहां नहीं आता । फिर भी मैंमन में भयभीत रहता हूं । सेवक का दुःख सुनकर दीनों पर दया करने वाले श्री रघुनाथ जी की दोनों विशाल भुजाएं फड़क उठी ।

उन्होंने कहा--हे सुग्रीव ! सुनो मैं एक ही बाण से बालि को मार डालूंगा । ब्रह्मा और रुद्र की शरण में जाने पर भी उसके प्राण नहीं बचेंगे ।

अभ्यास के प्रश्न

विनय पत्रिका —

प्रश्न 1 'रघुपति भक्ति करत कठिनाई……संसय निर्मूल न जाई ।
प्रस्तुत पद का मूल भाव लिखिए । (सीमा 50 शब्द)

उतर प्रस्तुत पद तुलसी विरचित विनय पत्रिका से संकलित है। इस पद में तुलसी ने भगवद् भक्ति को अत्यन्त कठिन कार्य बतलाया है । कवि का कथन है कि कहना तो बहुत सरल हैं परन्तु करना कठिन है । वैसे भी हर व्यक्ति प्रत्येक कार्य नहीं कर सकता है जो जिस कार्य में कुशल होता है वह उसे आसानी से कर लेता है तथा उसे उसमें आनन्द प्राप्ति भी होती है ।हरिपद प्राप्त करना भी तुलसी की दृष्टि में हर एक के लिए संभव नही है हरिपद वही प्राप्त कर सकता है जो अतिशय द्वैत वियोगी हो ।जिसके लिए शोक मोह भय हर्ष, दिवस-रात्रि, समय-स्थान आदि का कोई महत्व नहीं है ।

प्रश्न 2.राम के विरद को दर्शाने वाली 10 पंक्तियां पदों से छांटकर लिखिए ।

उतर—दोनों पदों के अर्थ को पढे. तथा इसके पश्चात स्वयं लिखें ।

प्रश्न 3' द्वैत वियोगी से कवि का क्या आशय है?व्यक्त कीजिए।
(सीमा 40 शब्द)

उतर -- 'द्वैत' का तात्पर्य है दो अर्थात ब्रह्म एवं जगत ।द्वैत वियोगी से आशय उस व्यक्ति से है जो सांसारिक सुख वैभवों एवं ईश्वर दोनों के विषय में विरक्ति भाव रखे । तुलसीदास जी की मान्यता है कि हरिपद के परमसुख का वही अनुभव प्राप्त कर सकता है जो अत्यन्त द्वैत वियोगी हो ।

प्रश्न 4 'भगवन कृपा से सब कुछ हो सकता है: दो दृष्टान्तो से प्रस्तुत पंक्ति की सार्थकता चरितार्थ कीजिए ।

सेवा करूंगा, जिस उपाय से जानकी जी आकर मिलें ।

सखा वचन..........................कहहु सुग्रीव ।।

कठिन शब्दार्थ---हरषे-प्रसन्न हुए । बलसींव बल की ।

अर्थ---कृपा के सागर और बल की सीमा श्री राम जी सखा सुग्रीव के बचन सुनकर हर्षित हुए और बोले हे सुग्रीव ! मुझे बताओ तुम वन में किस कारण रहते हो ?

नाथ बालि..........................उबरहिं प्रान ।।

कठिन शब्दार्थ---नांऊ नाम । धावा-दौड़ा । पैठ-घुसना । निसरी-निकली । बटिआई-जबरन । बिहाला-बेहाल । साप श्राप ।

अर्थ---सुग्रीव ने कहा-हे नाथ ! बालि और मैं दो भाई हैं, हम दोनों में ऐसी प्रीति थी कि वर्णन नहीं किया जा सकता । हे प्रभो ! मय दानव का एक पुत्र था, उसका नाम मायावी था । एक बार वह हमारे गांव में आया । उसने आधी रात को नगर के फाटक पर आकर पुकारा (ललकारा) बालि शत्रु के बल को सहन नहीं कर सका, वह दौड़ा । उसे देखकर मायावी भागा । मैं भी भाई के संग लगा चला गया । वह मायावी एक पर्वत की गुफा में जा घुसा । तब बालि ने मुझे समझाकर कहा तुम एक पक्ष (पखवाड़े) तक मेरी प्रतीक्षा करना । यदि मैं उतने दिनों तक न आऊ तो जान लेना कि मैं मारा गया ।

हे खर के शत्रु ! मैं वहां महीने भर तक रहा । वहां (उस गुफा में) रक्त की बड़ी भारी धारा निकली । (तब मैंने समझा कि) उसने बालि को मार डाला । अब आकर मुझे मारेगा । इसलिए मैं वहां एक शिला लगाकर भाग आया । मन्त्रियों ने नगर को जब बिना स्वामी का देखा, तो मुझे जबरदस्ती राज्य दे दिया । बालि उसे मारकर घर आ गया । मुझे (राज सिंहासन पर देखकर उसने अपने हृदय में भेद बढ़ाया । उसने मुझे शत्रु के समान बहुत अधिक मारा तथा मेरा सर्वस्व तथा मेरी स्त्री को भी छीन लिया । हे दयालु ! रघुवीर ! मैं उसके भय से समस्त लोकों में बेहाल होकर फिरता रहा । वह शाप के कारण यहां नहीं आता । इस पर भी मैं मन में भयभीत रहता हूं । सेवक का दुःख सुनकर दीनों पर दया करने वाले श्री रघुनाथ जी की दोनों विशाल भुजाएं फड़क उठीं ।

उन्होंने कहा—हे सुग्रीव ! सुनो मैं एक ही बाण से बालि को मार डालूंगा। ब्रह्मा और रुद्र की शरण में जाने पर भी उसके प्राण नहीं बचेंगे।

अभ्यास के प्रश्न

विनय पत्रिका—

प्रश्न 1 रघुपति भक्ति करत कठिनाई……संसय निर्मूल न जाई।
प्रस्तुत पद का मूल भाव लिखिए। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर प्रस्तुत पद तुलसी विरचित विनय पत्रिका से संकलित है। इस पद में तुलसी ने भगवद् भक्ति को अत्यन्त कठिन कार्य बतलाया है। कवि का कथन है कि कहना तो बहुत सरल है परन्तु करना कठिन है। वैसे भी हर व्यक्ति प्रत्येक कार्य नहीं कर सकता है जो जिस कार्य में कुशल होता है वह उसे आसानी से कर लेता है तथा उसे उसमें आनन्द प्राप्ति भी होती है। हरिपद प्राप्त करना भी तुलसी की दृष्टि में हर एक के लिए संभव नही है हरिपद वही प्राप्त कर सकता है जो अतिशय द्वैत वियोगी हो। जिसके लिए शोक मोह भय हर्ष, दिवस-रात्रि, समय-स्थान आदि का कोई महत्व नहीं है।

प्रश्न 2. राम के विरद को दर्शाने वाली 10 पंक्तियां पदों से छांटकर लिखिए।

उत्तर—दोनों पदों के अर्थ को पढे तथा इसके पश्चात स्वयं लिखें।

प्रश्न 3 द्वैत वियोगी से कवि का क्या आशय है? व्यक्त कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर 'द्वैत' का तात्पर्य है दो अर्थात ब्रह्म एवं जगत। द्वैत वियोगी से आशय उस व्यक्ति से है जो सांसारिक सुख वैभवों एवं ईश्वर दोनों के विषय में विरक्ति भाव रखे। तुलसीदास जी की मान्यता है कि हरिपद के परमसुख का वही अनुभव प्राप्त कर सकता है जो अत्यन्त द्वैत वियोगी हो।

प्रश्न 4 'भगवन कृपा से सब कुछ हो सकता है' दो दृष्टान्तो से प्रस्तुत पंक्ति की सार्थकता चरितार्थ कीजिए।

उतर—यह कथन वस्तुत: सत्य है। ईश्वर की कृपा यदि हो तो संसार का प्रत्येक कार्य संभव हो सकता है। इस सम्बन्ध में अनेक प्राचीन दृष्टान्त हमारे समक्ष हैं - उदाहरणार्थ - (i) दुःशासन जब द्रोपदी को भरी सभा में नंगा कर रहा था, उस समय भगवान की भक्ति ही उसके काम आई थी कृष्ण ने उसके चीर को बढ़ा दिया था तथा उसकी लाज बच गई थी।

(ii) अनेक बार रुग्णावस्था में तथा राजकीय सेवा आदि में भगवत कृपा से मन के अनुकूल परिणाम मिलते हैं।

प्रश्न 5· दो वर्गों में कुछ शब्द लिखे हैं इन शब्दों का क्रम इस प्रकार बनाइये कि उनका उपयुक्त अर्थ सम्मुख आ जाए:-

उत्तर—सफरी=मछली
पिपीलिका=चींटी
सिकता=रेत
सुरसरी=गंगा

गीतावली—

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उतर 30 शब्दों में लिखिए—

उप अयत' आजानु सुमन भुज' स्यामल गौर शरीर उक्त पंक्ति में भरत ने राम की छवि का किस प्रकार वर्ण किया है ?

उतर - उक्त पंक्ति में भरत ने भगवान राम के वक्षस्थल को विशाल। सुन्दर भुजाओं को घुटनों तक लम्बी एवं शरीर को स्याम वर्ण का बतलाया है। 'गौर' शब्द का प्रयोग लक्ष्मण के लिए हुआ है।

प्रनश 2. :सरसीरुह लोचन परिधन मुनिचीर का अर्थ स्पष्ट करते हुये इस पद में आये अलंकार को बताइए।

उतर —कमल के समान नेत्र हैं तथा मुनियों के वस्त्रों को परिधान बनाया है। इस पद में उपमा अलंकार है।

प्रश्न 3. भगवान राम के पास किन -किनवस्तुओं को भरत ने देखा?

उतर —भगवान राम के पास भरत ने निषग धनुष एवं बाण को देखा मस्तक पर जटायें एवं शरीर पर मुनियों के वस्त्र देखे। इन वस्तुओं के अलावा लक्ष्मण एवं सीता भी उनके साथ थे।

प्रश्न 4. 'गडत गौड मानो सकुच पंक मंह, कढत प्रेम बल धीर, पंक्ति में आए भाव सौन्दय एवं अलंकार को लिखिए।

उत्तर प्रस्तुत पंक्ति के भाव अत्यन्त सुन्दर है। भरत जी संकोच वश आगे बढ़ने में अपने आपको असमर्थ समझ रहे हैं। भरत की इस स्थिति में कवि ने उत्प्रेक्षा की है कि मानो संकोच रूपी कीचड़ में भरत के पाँव गड़ गए भगवान राम के प्रति उनके हृदय में जो प्रेम है, उसके बल से वे धैर्य पूर्वक उन पावों को उस कीचड से निकाल कर आगे बढ़ रहे हैं। इस पंक्ति में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

प्रश्न 5. भरत जी की स्थिति को देखकर रामजी की क्या दशा हो गई ?

उत्तर—भरत जी की स्थिति को देखकर राम अधीर हो गए। वे अपने स्थान से उठकर दौड़े तथा भरत को हृदय से लगाकर लाये।

प्रश्न 6. रामजी के आते-आते भरत जी के मन में क्या अन्तं-द्वन्द्व होने लगा ?

उत्तर - रामजी के निकट आते-आते भरत जी के मन में एकस्मात यह अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न हो गया कि श्री राम मेरी कुटिलता पर विचार कर कहीं मुझे वापस जाने के लिए न कह दें। वह उनके सामने जाने में सकुचाने लगा।

प्रश्न 7. पुरवासी, वनवासी तथा ऋषि मुनियों की शारीरिक दशा किस प्रकार की हो गई थी ?

उत्तर - पुरवासी, वनवासी तथा ऋषि मुनियों की शारीरिक दशा लकड़ी के सदृश अर्थात् गतिविहीन हो गई थी। वे सारे के सारे हतप्रभ एवं गतिविहीन हो गये थे।

प्रश्न 8. „मनहु सबनिके प्रान–पाहरू, भरत सीस धरि लीन्हे" पंक्ति में "प्रान पाहरू„ शब्द के आशय को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर प्रान पाहरू शब्द का अर्थ है प्राण रूपी पहरेदार। यहां पर इन शब्दों का आशय यह है कि भरत ने जो चरण पादुकाएं ग्रहण की वे मानों सम्पूर्ण अयोध्यावासियों के प्राणों की रक्षक प्रमाणित हुई अर्थात् उनके प्राप्त हो जाने से अयोध्यावासियों के प्राणों की रक्षा हो गई, नहीं तो वियोग में मृत्यु को प्राप्त हो जाते।

प्रश्न 9. 'अवसि हों आयसु पाइ रहोंगो.........' प्रस्तुत पद में भरत की मनः व्यथा को अपने शब्दों में अभिव्यक्त कीजिए।
(सीमा 50 शब्द)

उत्तर—प्रस्तुत पद में भरत की अभिव्यथा मनोव्यक्त हुई। भरत भगवान राम को वापस अयोध्या ले जाने के उद्देश्य से आये थे परन्तु अपने लक्ष्य की प्राप्ति में वे सफल नहीं रहे। श्रीराम ने उन्हें अपने खड़ाऊ देकर वापस लौटने को कह दिया। भरत को न चाहते हुए भी वह सब करना पड़ा क्योंकि बड़े भ्राता की आज्ञा थी। वह कहता है कि भरत तो राजा होगा तथा सीता, राम एव लक्ष्मण वन में रहेगे यह सब मैं आनन्द सहित सुन लूंगा उसके कहने का भाव यह है कि सब सुनना उसके लिए बड़ा दुखदायी होगा परन्तु न चाहते हुए भी उसे वह सब करना पड़ेगा एवं सुनना पड़ेगा वास्तव में उसका हृदय इन सब बातों से कदापि सुखी नहीं होगा परन्तु न चाहते हुये भी मजबूरी में उसे सब कुछ करना पड़ेगा।

प्रश्न 10. संकलित पदों के आधार पर राम-भरत संवाद को अपनी शैली में लिखिए।

उत्तर—नोट विद्यार्थी पदों के अर्थ को पढ़कर स्वयं अपनी शैली में संवाद लिखने का अभ्यास करें।

प्रश्न 11. "ज्यों चातकहि एक गतिधन की' प्रस्तुत पंक्तियों में पुरवासियों का मुख्य रूप से कौनसा भाव व्यक्त हुआ है ? सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में लिखिए।

उत्तर— (ग) अनन्य भक्ति भाव

कवितावली

प्रश्न— 1. राम के नेत्रों की उपमा किस अप्रस्तुत वस्तु से दी गई है ?

(उत्तर— सीमा 20 शब्द)

उत्तर - रामके नेत्रों की उपमा 'जलज, से दी गई है।

प्रश्न 2. सांवरे गोरे शब्दों का प्रयोग किन के लिये किया गया है ?

उत्तर—सांवरे गोरे, शब्दों का प्रयोग राम एवं लक्ष्मण के लिये किया गया है।

प्रश्न 3. राजकुमार किन-किन वस्तुओं से सुसज्जित है ?

उत्तर—राजकुमार मुनि वस्त्र, फूलों के हार, सरासन सिलीमुख एवं निषंग से सुसज्जित हैं।

प्रश्न 4. 'त्रिलोक के तिलक तीनि' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए

उत्तर—इस पंक्ति में राम, लक्ष्मण एवं सीता को तीनों लोकों के तीन तिलक बतलाया गया है। अर्थात् वे तीनों क्रमशः अलग अलग लोक के तिलक स्वरूप है।

प्रश्न 5. सीता के लिए कौन कौन सी उपमाएं दी गई हैं ?

उत्तर—सीता के लिए सुदामिनि, निसिनाथमुखी, पार्थनाथ नन्दिनी आदि उपमाएं दी गई है।

प्रश्न 6. अनंग का पर्यायवाची शब्द कौनसा है ?

उत्तर—(ग) कामदेव।

प्रश्न 7 'रूप की उमग उमगत अंग अंग है।'

उपर्युक्त पंक्ति में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर—(ग) अनुप्रास।

प्रश्न 8. "जलज नयन..........चित्रसार है।"

उपर्युक्त पद की विशेषताएं लिखिए। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर उपयुक्त पद में आलंकारिक भाषा में भगवान राम, लक्ष्मण एवं सीता की शोभा का चित्रण किया है। भाषा अनुप्रासमयी है एवं भाव अत्यन्त सुन्दर हैं। उनकी अद्वितीय शोभा के आधार पर उन्हें त्रिलोकी के तिलक रूप में स्वीकार किया जाता है। कवि का कथन है कि उनके सौन्दर्य को देखकर नर नारी चित्र लिखित से हो गये, ऐसा लगा जैसे किसी चित्रकार की चित्रशाला हो।

रामचरितमानस

प्रश्न 1. कह सुग्रीव नयन भरी बारी। मिलहि नाथ मिथिलेसकुमारी।'

उपर्युक्त पंक्ति को पढ़कर बतइये कि चौपाई छन्द में कौन सा कथन सत्य नहीं है ?

उत्तर (क) चौपाई के प्रत्येक चरण के अन्त में ऽ होता है।

प्रश्न 2. 'गगन पथ देखी मैं जाता' इस पंक्ति मे कौनसा अलंकार है

उत्तर— (ख) रूपक।

प्रश्न 3 सुग्रीव गुफा के द्वार पर शिला लगाकर क्यों भागा था?

उत्तर--(घ) उसने सोचा कि शत्रु ने बालि को मार दिया है।

प्रश्न 4 सुग्रीव और राम दोनों की मित्रता किसके द्वारा हुई? सही उत्तर का क्रमांक कोष्टक में लिखिए :—

उत्तर (ख) हनुमान।

प्रश्न 5 'सुनि सेवक.......भुजा बिसाला' इस पंक्ति में रामचन्द्र जी की कौनसी चारित्रिक विशेषता प्रकट होती है सही उत्तर का क्रमांक कोष्टक में लिखिए।

उत्तर--(घ) राम के समान कोई भक्त वत्सल नहीं है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:—

प्रश्न 1 सुग्रीव ने मिथलेसकुमारी के विषय में राम को क्या क्या जानकारी दी ?

उत्तर— सुग्रीव ने कहा कि मिथलेसकुमारी अवश्य मिल जायेगी। उसने कहाकि एक बार मन्त्रियों सहित बैठा हुआ मैं विचार कर रहा था। उस समय आकाश मार्ग से जाती हुई को मैंने देखा, वह परवस थी तथा विलाप कर रही थी। वह हाय राम, हाय राम कह रही थी, हमारे को देखकर उसने एक वस्त्र डाल दिया था।

प्रश्न 2. बालि गिरिवर गुफा में प्रवेश क्यों कर गये ?

उत्तर -- बालि मय के पुत्र मायावी को मारने के लिए गिरिवर गुफा में प्रवेश कर गया।

प्रश्न ३, सुग्रीवको कैसे भ्रम हो गया कि बालि कोदानव ने मार दिया है ?

उत्तर--सुग्रीव ने एक माह बालि का इन्तजार किया परन्तु जब वह नहीं आया तो विचार हुआ। इसके बाद एक दिन उसने गुफा से खून की धारा निकली हुई देखी, तब उसे भ्रम हो गया कि बालि को दानव ने मार दिया है।

प्रश्न 4. बालिकी सुग्रीव से शत्रुता क्यों हो गई

उत्तर बालि की सुग्रीव के शत्रुता इसलिए हो गई क्योंकि जब बालि मायावी को मारकर गुफा से बाहर आया तो उसने देखा कि सुग्रीव राजा

बन गया है। यह देख कर उसके मन में द्वेष उत्पन्न हो गया। तभी दोनों में शत्रुता हो गई।

प्रश्न 5 बालि ने जब सुग्रीव को राज्य करते देखा होतातो उनके मन में कौन से भाव उत्पन्न होंगें ? स्वयं को बालि मानकर उसकी मनः स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर बालि ने जब सुग्रीव को राज्य करते देखा तो एकदम उसके मन में यह विचार आया होगा कि सुग्रीव ने गुफा के बाहर इसलिये शिला लगाई थी कि बालि उसमें से न निकल सके, मायावी उसको भीतर ही मार डाले उसने सुग्रीव को मन ही मत बहुत कुछ भला बुरा कहा होगा तथा जिस किसी प्रकार उससे बदला लेने का तत्काल विचार किया होगा।

प्रश्न 6 सूर व तुलसी के काव्य सौन्दर्यकी तुलनात्मकसमीक्षा कीजीए।

उत्तर - भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस युग में निर्गुण रूप में भक्ति की दो धारायें प्रवाहित हुई। निर्गुण भक्ति धारा के अन्तर्गत कबीर एवं दादु आदि ने जहां महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, वहां सगुण भक्ति धारा में सूर एवं तुलसी ने विशेष योगदान प्रदान किया। सगुण भक्ति द्विविध रूप में प्रचलित हुई राम भक्ति शाखा एवं कृष्ण भक्ति शाखा। तुलसी जहां राम के उपासक थे वहां सूरदास कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

गोस्वामी तुलसीदास एवं सूरदास दोनों ही हिन्दी साहित्य के महान् कवि थे इसमें दो मत नहीं है। परन्तु जहां तक काव्य सौन्दर्य का सम्बन्ध है तुलसी ने अवधि भाषा में अपने मानस की रचना की वहां सूरदास ने ब्रजभाषा में अपनी रचनाएं लिखी। तुलसीदास ने जहां अपने मानस में जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है वहां सूरदास का विशेष सम्बन्ध का कृष्ण के बाल्याकाल एवं उनकी प्रेम क्रीड़ाओं से रहा है। सूरदास का मन कृष्ण के माधुर्य पक्ष में अधिक रमा, अतः प्रेम ही इनका प्रमुख आधार रहा। भगवत विषय रति में विनय के पद वात्सल्य रति के अन्तर्गत माता यशोदा और नन्द बाबा के वात्सल्य प्रेम का और राधा कृष्ण तथा गोपी कृष्ण की लीलाओं का दामपत्य रति के अन्तर्गत विस्तार से अंकन हुआ है। परन्तु

तुलसीदास ने न केवल शृंगार एवं वात्सल्य रस से परिपूर्ण पदों का निर्माण किया अपितु अन्य भी रसों से युक्त रचनाएं उन्होंने की तुलसी यथार्थ में समग्र जीवन के कवि थे। इन्होंने जीवन के विविध पहलुओं को स्पर्श किया और जिस पहलू को स्पर्श किया, उसमें पूर्ण निखार आ गया। उन्होंने अपनी रचनाओं में भक्ति ज्ञान एवं कर्म का जबर्दस्त समन्वय प्रस्तुत किया। उनके काव्यों में भाषा एवं शैली का भी सुन्दर समन्वय हुआ है। समालोचकों की दृष्टि में सूर्य यदि है तो तुलसी चन्द्रमा है अथवा तुलसी के समर्थकों की दृष्टि में तुलसी सूर्य हैं तो सूरदास चन्द्रमा हैं।' हमारे मत में दोनों ही कवि हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के कवि थे। दोनों की वर्णन शैली पर उनकी स्वयं की छाप थी। सरल एवं लोक भाषा में भावों को व्यक्त करने का दोनों ने सुन्दर प्रयास किया है। काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से दोनों ही कवियों के काव्य उच्चकोटि के हैं।

5. मीरा

मीरा की पदावली—

रमईया मेरे..........................पवन झकोर। । । । ।

कठिन शब्दार्थ— नेह प्रेम। आरी=फीकी। मित=मित्रता। थाणें=स्थान। रंगिया बोना। आबो=आम। वाहला—नाला छेह—नष्ट होना।

अर्थ - मीरा कहती है कि हे कृष्ण! मेरा तुम्हारे से हो प्रेम हो गया है है प्रियतम यदि लगे हुए प्रेम को आपने तोड़ा तो मैं और भी अधिक प्रेम करने लगूंगी! यदि मैं ऐसा जानती कि प्रेम करने से दुःख होता है तो मैं सारे नगर में यह प्रचार करवाती कि किसी को भी प्रेम नहीं करना चाहिए। खीर कभी भी फीकी नहीं खानी चाहिए तथा मूर्ख से मित्रता नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह (मूर्ख मित्र) क्षण में क्रुद्ध एवं क्षण में शान्त होता रहता है, वह एक पल में मित्रता बढ़ाने की बात करता है तो दूसरे ही क्षण शत्रुता करने में उसे देर नहीं लगती। मीरा कहती है कि जो प्रेम करते हैं वे बावले हैं तथा जो प्रेम करके तोड़ते हैं वे क्रूर अथवा दुष्ट होते हैं। प्रेम निभाने में दुःख सहन करना पड़ता है और दुःख सहन करने वाला कोई बिरला ही शूरवीर होता है।

मीरा कृष्ण से कहती है कि आप सुदृढ़ चूने के बने हुए चबूतरे हो तथा मैं बालू की भीत हूं अर्थात् आपके सामने मैं तुच्छ हूं परन्तु अब यह प्रीत तोड़ी नहीं जा सकती है क्योंकि यह आज की नहीं अपितु पूर्व जन्म की प्रीत है। एक स्थान पर एक आम एवं एक बबूल का पेड़ लगाइये, उनमें से आम का रस जहां अच्छा लगेगा वहां बबूल की सूल चुभेगी। भाव यह है कि सज्जन एवं दुष्ट एक स्थान पर रहते हुए भी अलग-अलग प्रभाव दिखाते हैं जिस प्रकार डूंगर का नाला होता है वैसा ही ओछे व्यक्ति का स्नेह होता है, वह डूंगर का नाला जब बहता है तब तो तीव्र गति के साथ बहता है परन्तु वर्षा के साथ बिल्कुल समाप्त हो जाता है, इसी प्रकार ओछा व्यक्त प्रारम्भ में अत्यधिक स्नेह प्रदर्शित करता है परन्तु पहाड़ी नाले के समान उसका स्नेह भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। श्रावण एवं भाद्रपद का महीना आने पर मोर बोलने लगे, उनकी आवाज में मीरा को हरिजन प्राप्त हुए परन्तु उन्हें भी पवन उडाकर ले गया।

नींदडी आवांणा··················जिण हाथ ॥2॥

कठिन-शब्दार्थ--नींदडी=निद्रा। परभात=प्रातःकाल। तलफां=तड़फ कर। कुणविधि=किस प्रकार। लख-देखकर। भवां-हो जाना।

अर्थ- मीरा कहती है कि कृष्ण की स्मृति में मुझे सारी रात नींद नहीं आती है, प्रातःकाल किस प्रकार होवे यह परेशानी हो जाती है अर्थात् वियोग में रात्रि बहुत लम्बी दिखाई पड़ती है। हे सजनी! रात में स्वप्न देखकर अचानक उठ बैठती हूं, तथा उनकी स्मृति भुलाये नहीं भूलती हूं। तड़फ तड़फ कर जी निकलता है, पता नहीं दीनानाथ कब मिलेगें ? उनके वियोग में बावली हो जाती हूं सुध बुध भी नहीं रहती। मेरे ह्यदय की बात तो मेरे प्रिय श्री कृष्ण ही जानते हैं। मीरा जी कहती है कि मेरी पीडा नहीं जानते हैं. जिनके हाथ में मृत्यु एवं जीवन है अर्थात् श्रीकृष्ण ही मेरी ह्यदय पीड़ा के ज्ञाता है।

थे तो पलक························पर एक घडी ॥3॥

कठिन शब्दार्थ - हाजिर सेवा में। नाजिर-दर्शनोत्सुक। साजनिया-तीसे सम्बन्धी। डिगी डगमगाती। हिये में-ह्यदय में। वरण वर।

अर्थ --मीरा भगवान श्री कृष्ण से विनती करती हुई कहती है कि हे दीनानाथ ! आप अपनी पलकें खोलो अर्थात् आपकी दया दृष्टि मेरे पर डालो मैं आपकी सेवामें दर्शनोत्सुक कब से खड़ी हूं । मेरे सगे सम्बन्धी दुशमन बने हुए हैं तथा मैं सबको बुरी लगती हूं । हे स्वामी आपके अलावा इस संसार में मेरा कोई भी नहीं है, मेरी डगमगाती नैया समुद्र के बीच अड़ी हुई है । मुझे दिन भर चैन नहीं मिलता न ही रात में नींद आती है, मैं तो आपकी स्मृति में खड़ी खड़ी ही सूखती जा रही हूं । मेरे हृदय में विरह का बाण लगा हुआ है. अतः मैं एक घड़ी भी आपको नहीं भूल पा रही हूं । आपने ही वन के बीच पत्थर की शिला के रूप में पड़ी हुयी अहिल्या का उद्धार किया था । मीरा कहती है कि मेरे में वजन कहां है ? अर्थात् मैं तो सौ की तुलना में पांच सेर अर्थात् नगण्य हूं ।

म्हारे नैणा आगे·······दूर रहन्द ॥4॥

कठिन शब्दार्थ --बालद बैल पर लदा सामान । छबन्द=बधाना । निपजाओ पैदा करना । तन्दुल चावल । बुकन्द=खाना ।

अर्थ--मीरा कहती है कि हे श्याम गोबिन्द ! आप मेरे नेत्रों के आगे सदैव रहो । आप ने कभी घर बैलों पर सामान लादकर पहुंचाया था तथा भक्त नागदेव की छान को बधाया था । आपने धन्ना के खेत को बिना बीज ही निपजाया था । तथा हाथी की प्रार्थना को सुनकर उसका उद्धार किया था । भीलनी के आपने प्रेम से बेर खाये थे तथा सुदामा के चावल मुट्ठी भर भर कर खाये थे । करमा बाई के खीचड़े को आपने प्रेम पूर्वक खाया था । हे कृष्ण आप ग्वालों के बीच उसी प्रकार सुशोभित होते हैं जिस प्रकार तारों के बीच चन्द्रमा सुशोभित होता है । आपने सभी भक्तों का कार्य सुधारा है आप मीरा से ही दूर क्यों रहते हो ? भाव यह है कि मीरा का उद्धार भी आपकरो मीरा से आप दूर क्यों हो ?

पतियां मैं कैसे·······कंवल रखाय ॥5॥

कठिन शब्दार्थ--पतियां=पत्र । कर हाथ । डरराय=विरह संतप्त होना ।

अर्थ --मीरा कहती है कि मैं पत्र कैसे लिखूं मेरे से लिखा ही नहीं जाता है । कमल पकड़ते हुए मेरा हाथ कांपता है तथा नेत्रों से आंसू झरते

हैं। बात कहना चाहती हूं तो कहा नहीं जाता है, हृदय विरह सन्तप्त हो जाता है। आप हमारी स्थिति देखकर जा रहे हो, उसे कृष्ण से जाकर कहना। मीरा कहती हैं कि मेरे प्रभु तो गिरधर धारी कृष्ण ही हैं वे मुझे अपने चरण कमलों में रखें यही प्रार्थना है।

म्हां गिरधर·········· दिण रानी ॥6॥

कठिन शब्दार्थ रानी–अनुरक्त हो गई। झिरमिट=झुरमुटमें खेला जाने वाला एक खेल। हीयडे=हृदय में। अग=मार्ग।

अर्थ- हे सखी ! मैं गिरधर के राग में अनुरक्त हो गयी। पांच रंगों का चोला पहनकर में झिरमिट खेलने जाया करती थी. उस झिरमिट खेलने में मुझे सांवरिया मिला उसे देखकर मेरा तन मन प्रसन्न हो गया। हे सखी ! जिनके प्रियतम विदेश में रहते है, वे पत्र लिख-लिखकर भेजा करती है ! परन्तु मेरे प्रियतम तो मेरे हृदय में बस रहे हैं न तो वे कहीं जाते हैं और न आते है। मीरा कहती है कि मेरे प्रभु गिरधर नागर हैं मैं रात–दिन उनका मार्ग देखती रहती हूं।

अभ्यास के प्रश्न

मीरा पदावली--

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) प्रीत करो मत कोय'

आप मीरा की इस सीख से सहमत हैं अथवा नहीं ? पुष्टि में अपने विचार व्यक्त कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर—हम मीरा की इस सीख से सहमत नहीं हैं। हमारा मत प्रीत करने के पक्ष में है। मीरा भी हृदय से प्रेम करने के पक्ष में ही थी उक्त प्रीत न करने की बात तो उसने कृष्ण को अपने वश में रखने के लिए कही है। जहां तक दुख का प्रसंग है, प्रेम वियोग में दुःख का होना स्वाभाविक ही है। परन्तु दुःख के पश्चात जो संयोग होता है उसमें परमानन्द की प्राप्ति होती है।

(ख) ज्यूं डूंगर का वाहला रे ·········देहै ॥

ओछे व्यक्ति के स्नेह की तुलना 'डूंगर का वाहला से की गई है, इस प्रयुक्ति की उपयुक्तता को स्पष्ट कीजिए। (सीमा 4 शब्द)

उत्तर उक्त पंक्तियों में ओछे व्यक्ति के प्रेम की तुलना डूगर के बाहले से की है। यह तुलना वस्तुतः यथार्थ है। वास्तव में ओछे व्यक्ति की मित्रता में उसी प्रकार निरन्तरता एवं स्थायित्व नहीं होता है जिस प्रकार डूंगर के नाले में निरन्तरता एवं स्थिरता नहीं होती है। डूगर के नाले का पानी वर्षा के समय थोड़ी तीव्र गति से आता है परन्तु वर्षा समाप्ति के कुछ समय बाद वह पानी सूख जाता है, वैसे ही ओछे व्यक्ति की मित्रता प्रारम्भ में तेजी के साथ बढ़ती है परन्तु वह अधिक समय तक नहीं रहती, शीघ्र ही टूट जाती है।

(ग) 'पोर न पाजे .... षिण मित।''

उपर्युक्त पद के आधार पर मूर्ख मित्र के स्वभाव की विशेषताएं स्पष्ट कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर--मूर्ख मित्र का स्वभाव सदैव अस्थाई रहता है। वह हर क्षण नवीन रूप प्रदर्शित करता है। क्षण में मूर्ख मित्र क्रुद्ध होता है। तथा दूसरे ही क्षण शीतल हो जाता है। क्षण में वह वैर प्रदर्शित करता है। तो दूसरे ही क्षण घनिष्ठ मित्रता दिखलाता है।

(घ) 'प्रीत करैं नैं बावरा रे .... बिरला सूर।'

इस पद में निहित आशय को स्पष्ट कीजिए। (सीमा 40)

उत्तर— इस पद का भाव यह है कि प्रेम करना एवं उसे निभाना टेढ़ी खीर है। प्रेम त्याग चाहता है और त्याग करना प्रत्येक के बस की बात नहीं। इसलिए मीरा ने लिखा है कि प्रेम को निभाने वाले विरले ही कोई शूरवीर होते हैं।

प्रश्न 2 'जौ हू ऐसी जानती रे बाला प्रीत कीयां दुष होय।
नगर ढिंढोरो फेरती रे, प्रीत करो मत कोय॥''

उपर्युक्त पंक्तियों में मीरा का कौनसा भाव व्यक्त हुआ है?

उत्तर--(क) खिन्नता का

प्रश्न 3. 'म्हारा पिया म्हारे हियड़े बसता, णा आवां णा जानी।'

उपर्युक्त पद में निहित भाव का सर्वाधिक सही क्रमांक कोष्ठक में लिखिए।

उत्तर—(क) मीरा को आत्म सन्तोष है।

प्रश्न 4. 'तुम गजगीरी के पूंगरे रे, हम बालू की भीत,"
उपर्युक्त पंक्ति में कवियत्री का कौन सा भाव व्यक्त हुआ है ?

उत्तर—(ख) विनयशीलता

प्रश्न 5. 'भीलणी के,' 'सुदामा के तन्दुल' 'गज की टेर' प्रसंगों को देखकर कवियत्री मीरां भगवान के किस गुण को व्यक्त कर रही है। इन प्रसंगों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर उक्त प्रसंगों में मीरा ने भगवान कृष्ण की भक्त वत्सलता एवं भक्तों के प्रेम रूपी गुण को व्यक्त किया है।

नोट—प्रसंगों के स्पष्टीकरण के लिए अपनी पाठ्य-पुस्तक के परिशिष्ट अंश को देखें।

प्रश्न 6. "म्हारा पिया म्हारे हीयड़े बसता............जाती।
मीरा रे प्रभू ....मग जोवां दिणराती।"

प्रस्तुत पंक्तियों में निहित विरोधाभास को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर प्रस्तुत पंक्तियों में विरोधाभास है क्योंकि प्रथम पंक्ति में प्रियतम को हृदय में बसा हुआ बतलाया गया है परन्तु द्वितीय पंक्ति में मार्ग जोवण की बात कही गई है। इस विरोधाभास का स्पष्टीकरण यह है कि मीरा का हृदय मूलतः श्री कृष्ण के प्रति आसक्त है, उसके हृदय में हमेशा उनकी स्मृति रहती परन्तु वास्तव में शारीरिक रूप से कृष्ण उससे दूर हैं अत वह उनका इन्तजार करती रहती है जिससे दर्शन पर अपना जीवन सफल बना सके।

प्रश्न 7. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

उत्तर (क) बाला=बालम, पति। दुष=दुःख। मित=मित्र। ताता=तप्त। षिण=क्षण। कूर=क्रूर। पूरब=पूर्व। चूंतरो=चबूतरा। आंबो=आम। बूल=बबूल। बाको=उसका। सूल=शूल। सावण=श्रावण। भादवा=भाद्रपद।

(ख) नींदड़ी=निद्रा। णाना। परभात=प्रभात। सजणी=सजनी तफलां=तड़फना। जियरां=जीव। जीवण=जीव। जिण=जिनके। भवां/होना। बावरा=बावला।

(ग) बादल—बैल । मुटड़ा—मुट्टा । छबन्द—बांधना । बुकन्द—खाना । रहन्द—रहना ।

(घ) पत्तियां—पत्र । लिख्योरा—लिखा । कंवल—कमल । जिणरो—जिसका । बस्यांरी—बस रहा है । पाती—पत्र । हियडे—हृदय । जायां—देखना । दिण—दिन । राती—रात्रि ।

प्रश्न 8. संकलित पदों में से 'विरक्ति' एवं 'अनुरक्ति' भाव की दो-दो पंक्तियां छांटिए तथा उनके भाव को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—विरक्ति भाव की पंक्तियां —

"चमक उठां सुपनां लख सजणी, सुधरणा भूल्यां जात ।
तलफां तलफां जियरां जायां कब मिलियां दीनानाथ ।"

अनुरक्ति भाव की पंक्तियां—

"पचरंग चोला पहर्या सखी म्हां, झिरमिट, खेलण जाती ।
वां झिरमिट मां मिल्यो सांवरो, देख्यां तण मण राती ।"

नोट—उक्त पंक्तियों का भाव अर्थ के अन्तर्गत देखें ।

प्रश्न 9. निम्नलिखित प्रसंगों की अन्तर्कथा लिखिये—

(क) कबीर घर बादल जो आयो
(ख) नामदेव की छान ।
(ग) दास धना को खेत
(घ) करमा बाई की खीच

उत्तर—नोट—अन्तर्कथा पाठ्य पुस्तक के परिशिष्ट में दी गई है, वहां देखें ।

प्रश्न 10. संकलित पदों में आये मुहावरों को छांटिए तथा उनका आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—पदों में आये मुहावरे = आशय

(i) सुध बुध भूलां = तन्मय हो जाना ।
(ii) सूखूं खड़ी खड़ी = अत्यन्त दुःखी होना, व्याकुल होना ।
(iii) सौ पर एक घड़ी = सौ की तुलना में पांच सर अर्थात नगण्य ।
(iv) ते कोई बिरला सुर = ऐसे बहुत ही कम होते है ।

प्रश्न 11. मीरा के पदों के काव्य सौन्दर्य को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए।

उत्तर -- (क) भाव-व्यंजना — मीरा के पदों में विरह-वेदना मार्मिक अभिव्यक्ति एवं आत्मा पर आत्मा की अभिन्नता प्रदर्शित की गई है। मीरा की भक्ति पति भाव की है। मीरा ने कृष्ण को अपना पति माना है। वह सदैव अपने प्रियतम की प्रतीक्षा में व्याकुल रहती है। मीरा के पदों में विरहिणी का हृदय अपने प्रिय के संयोग और वियोग, व्यथा एवं वेदना, चाह और आह, सहज और सरल तथा मधुर और मर्मस्पर्शी स्वरों में फूट पड़ा है। मीरा के काव्य में कबीर और जायसी के समान निर्गुण और सगुण दोनों भावनाओं का मिश्रण है।

(ख) अलंकार योजना--मीरा के पदों में अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। अलंकारों के लिए मीरा ने प्रयास नहीं किया है. वे स्वतः उसके काव्य में आये हैं। उपमा एवं रूपक का प्रयोग विशेष रूप से देखने को मिलता है।

(ग) भाषाशैली –मीरा के पदों को भाषा सहज सरलता तथा भावानुकूल है। राजस्थानी भाषा का प्रयोग विशेष रूप से द्रष्टव्य है। गुजराती, ब्रज, पंजाबी शब्दों का भी यदा कदा प्रयोग हुआ है। मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा सुन्दर बन पड़ी है।

प्रश्न 12. सूर और मीरा के अनन्य भक्ति के दो पदों का चयन कर तुलना कीजिए।

उत्तर--सूरदास एवं मीरा दोनों ही कृष्ण के भक्त हैं। परन्तु सूरदास की भक्ति जहां दास्य भाव की है वहां मीरा की भक्ति पत्नी भाव की है। मीरा ने कृष्ण को अपने पति के रूप में माना है तथा सर्वस्व समर्पण की भावना अपने पदों में व्यक्त की है यथा—

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरा पति सोई।"

सूरदास के पदों में भी अनन्य भक्ति भावना यत्र-तत्र व्यक्त हुई है यथा—

प्रश्न 13. मीरा और महादेवी के पद गेय हैं। संकलित पदों में से एक-एक पद चुनकर समानता बताइए।

उत्तर– मीरा का गेय पद –

(1) मैं तो पलक……सौ पर एक घड़ी।

महादेवी का गेय पद –

'प्राणों के अन्तिम पाहुन……गिन-गिन।'

मीरा एवं महादेवी दोनों के पद ही यद्यपि गेय हैं परन्तु दोनों के पदों में व्यक्त भाव पृथक हैं। मीरा के पदों में जहां भक्ति एवं प्रेम का स्वर प्रधान है वहां महादेवी के पदों में कर्मशीलता एवं त्याग की भावना प्रधान है।

6. मतिराम

बूंदी वर्णन--

जगत विदित बूंदी……लोग सुजान ॥ (1–2)

कठिन शब्दार्थ--विदित=ज्ञात, प्रसिद्ध। निगम=वेद। आगम=शास्त्र कलानि=चित्रकला आदि कलाओं में।

अर्थ --बूंदी नगर सम्पूर्ण संसार में सुख एवं सम्पत्ति के भण्डार के रूप में प्रसिद्ध हैं। यद्यपि सम्पूर्ण संसार में वर्तमान समय में कलियुग व्याप्त है परन्तु बूंदी नगर में तो अब भी सतयुग विराजमान है। मानों बूंदी नगर सतयुग का विश्राम स्थल हो। बूंदी नगर में अब भी वहां के लोग मन देकर वेद, शास्त्र समस्त एवं पुराणों को पढते हैं तथा उनको ध्यानपूर्वक सुनते हैं। वहां पर संगीत कविता एवं अन्य विविध कलाओं में लोग दक्ष हैं।

सरद बारिधर……गीर अनूरूप ॥ (3–4)

कठिन शब्दार्थ - बारिधर=बादल। अमल=स्वच्छ। धौलहर=महल। अनूप=अनुपम।

अर्थ वहां के श्वेत महल शरदकालीन बादलों के समान स्वच्छ एवं सुन्दर दिखाई देते हैं। महलों पर विद्यमान शिखर विभिन्न चित्रों से चित्रित होने के कारण इन्द्र धनुष के समान दिखाई देते है। महलों के ऊपर जिस बूंदी नगर के अद्भुत स्वर्ण कलश बने हुए हैं। वे अपनी प्रतिभा से आकाश को भी अपने समान पीला कर रहे हैं। भाव यह है कि महलों पर प्रचुर मात्रा में स्वर्ण कलश सुशोभित हो रहे हैं।

जहं बिमान……ग्रह मोर ॥ (5–6)

कठिन शब्दार्थ--बनितान-स्त्रियां। श्रमजल-पसीने की बूंदे। बिजन-पंखे। ललनानि=स्त्रियां।

अर्थ--बूंदी नगर में स्थित महलों के शिखरों पर जो पताकायें फहरा रही हैं उनके कपड़े वहां पंखे का कार्य करते हैं। वे पताकायें विमान में बैठने वाली स्त्रियों के स्वेद बिन्दुओं का हरण कर लेती है। जहां षट् ऋतुओं में अर्थात् सम्पूर्ण वर्ष में मृदंग का मृदु स्वर सुनाई देता रहता है। सुन्दर स्त्रियों के साथ जहां पर घरों में पालतू मयूर भी नृत्य करते हैं।

मरकत लाल........................स्थान अनुराग।। (7-8)

कठिन शब्दार्थ -प्रवाल-मूंगा। अवदात-सुन्दर। जरकस-जरी के काम के। द्रुम-पेड़। अलि-भ्रमर। कल-सुन्दर।

अर्थ--जहां के सुन्दर राज मार्ग में मरकत, लाल मूंगा, मणि, मोति सुन्दर हीरे तथा जरी के वस्त्र बिकते रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि बूंदी नगर का वैभव अतुलनीय है। जहां के उद्यान वृक्षों तथा बेलों से सदा प्रफुल्लित रहते हैं अर्थात् हमेशा वहीं हरियाली व्याप्त रहती है। भ्रमर एवं कोयल के मधुर स्वर जहां हमेशा गूंजते रहते हैं, वे कानों को सुनने में अत्यधिक प्रिय लगते हैं।

कमल कुमुद......................बूंदी में ठहराव।। (9-10)

कठिन शब्दर्थ - कुमुद-कमोदिनी पुष्प। परिमल-सुगन्धि। बापी = बावड़ो। पानिप =इज्जत।

अर्थ -जिस नगर के कुएं, बावड़ियां एवं तालाब कमल, कमोदिनी एवं कुवलय के पुष्पों की सुगन्धि एवं मधुर पराग से भरे हुए हैं प्रलय के समय में जिस प्रकार वट वृक्ष के पत्तों पर विश्राम करने वाले बालक कृष्ण के उदय में सम्पूर्ण संसार समा जाता है, उसी प्रकार समस्त संसार की प्रतिष्ठा बूंदी नगर में समायी हुई है।

तामें प्रति बिम्बित....................बिरंचि समुदाय (11-12)

कठिन शब्दार्थ संगति-जुत-सम्पदा युक्त। सुरलोक-स्वर्गलोक। लसै =सुशोभित होना। ओक-समूह। विरंचि-ब्रह्मा।

अर्थ--उस नगर के वैभव को देखने से प्रतीत होता है मानो सम्पूर्ण स्वर्ग लोक ही अपनी सम्पदा सहित उसमें प्रतिबिम्बित हो गया है। वहां के

हो रहे है कहने का भाव यह है कि वहा के पुरुष एवं स्त्रियां अत्यधिक सुन्दर हैं ।

उस नगरी का स्वामी हाड़ा वंशीय राजा सुरजन राव है । ब्रह्मा ने मानो उन्हें सब गुणों का समुदाय रूप बनाया है । अर्थात् सभी श्रेष्ठ गुणों से वे सम्पन्न हैं ।

रूप वर्णन--

वर्षा ऋतु..................................को होती ।। 1 ।।

कठिन शब्दार्थ--सरद=शरद ऋतु । उदोति=उदय होना । अरु=और ।

अर्थ--वर्षा ऋतु समाप्त होने लगा तथा प्रतिदिन शरद का उदय होने लगा । जुवार एवं गंवार की ज्योति लहलाने लगी । भाव यह है कि नायिका के रूप का धुंधलापन समाप्त होने लगा तथा शरद ऋतु सदृश उज्ज्वलता उसके अंगों में व्याप्त होने लगी । उसके रूप में निखार आने लगा । उसका सम्पूर्ण शरीर कान्ति युक्त हो गया ।

तेरी ओरे..............................बाढ़त नेह । 2 ।।

कठिन शब्दार्थ --ओरे भांति-अन्य प्रकार की । दीपति दीप्त होना है, प्रकाशित होता है । नेह स्नेह,प्रेम तेल ।

अर्थ --मतिराम कहते हैं कि हे नायिका तेरी देह एक अलग ही प्रकार की दीप शिखा तुल्य है । क्योंकि साधारण दीपक जितना ही प्रज्वलित होता है, उतना ही उसका स्नेह (तेल) कम पड़ता है, परन्तु नायिका की दीपशिखा रूप देह में जितनी ही दीप्ति अधिक जगमगाती है,उतना ही उसका नेह(स्नेह-प्रेम) बढ़ता है। तात्पर्य यह है कि यौवनागम में शरीर कांति के साथ प्रेम बढ़ता जाता है ।

सारी लटकनि पाट......................बन्दन वार ।3।।

कठिन शब्दार्थ --सारी=साडी ।विलसति सुशोभित । बन्दनवार= माला ।

अर्थ - नायिका के शरीर पर पाट की साडी लटक रही है, उसके ललाट पर साडी के फूंदे सुशोभित हो रहे हैं । कवि का कथन है कि मानो सौन्दर्य रूपी मन्दिर पर सुन्दर बन्दनवार बंधे हुये हों, भाव यह है कि नायिका का शरीर रूप मन्दिर है तथा उसके ललाट पर लटकने वाले साड़ी के फूल उस मन्दिर पर लटकने वाली झालरें हैं ।

पग जराई·····················बारे बांर ।।4।।

कठिन शब्दार्थ--जराई=जरी । नथनी=नथ । मुकुत=मोती ।

अर्थ—पैरों में जरी का घाघरा सुशोभित हो रहा है तथा सुन्दर मोतियों की नथ नाक से सुशोभित है । वह घाघरा बड़े घेर वाला हैं तथा नायिका के बाल घुंवराले हैं ।

बदन तिलक····················· ···········दीप की ज्योति ।।5।।

कठिन शब्दार्थ—तिलक=टीका । लिलार=ललाट । भोन=भवन ।

अर्थ नायिका के ललाट पर टीका सुशोभित हो रहा है, उससे मुख की शोभा इस प्रकार हो रही है जैसे मानों रूप भवन में दीपक की ज्योति जगमगा रही हो ।भा व यह है कि नायिकाका शरीर रूप भवन है तथा उसके ललाट पर लगा टीका दीपक तुल्य है ।

कामिनी·····························ही ठहराई ।।6।।

कठिन शब्दार्थ--कामिनी=स्त्री । दामिनी=बिजली । डीठि=दृष्टि ।

अर्थ--उस स्त्री का शरीर बिजली की चमक के समान सुन्दर है उसका वर्णन कौन कर सकता है । पर उसकी दृष्टि तो ठहर ही नहीं सकती है, वह तो स्वयं ही आंखों में ठहरी हुई है अर्थात् हमेशा आंखों के सामने रहती है ।

जब जब चढति······················दीप बार सब गाम ।।7।।

कठिन शब्दार्थ--अटानी=अटारी पर, छत पर । बारि=जलाना ।

अर्थ--यह चन्द्रमुखी नायिका छत पर चढती है । तब तब लोग अपने घरों में दीपक जलाने लगते हैं । भाव यह है कि इस नायिका के छत पर चढने से ऐसा जान पड़ता है, मानो चन्द्रमा निकला है । इससे लोगों को भ्रम होता है कि रात हो गई, और वे दीपक जलाने लगते हैं ।

विविध—

निज बल·························गुपालु ।।1।।

कठिन शब्दार्थ--पतित=पापी । बिसाल–बड़े । खिस्याहु–शरमाना ।

अर्थ मतिराम भगवान कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करते हुये कह रहे हैं कि हे गोपाल ! अपने-अपने परिमाण के अनुरूप बड़े बड़े

पापियों का उद्धार किया है। आप मेरा उद्धार नहीं कर सके तो इसमें क्या हो गया ? अर्थात् ऐसी कोई विचार करने की बात नहीं है। आप इस पर इतने क्यों खिसिया रहे हैं, अपने आपको लज्जित महसूस कर रहे हैं।

कोटि-…………………………………कबहू होई ॥2॥

कठिन शब्दार्थ - जतन=यत्न। नेह=प्रेम।

अर्थ--मतिराम का कथन है कि भले ही कोई करोड़ों उपाय करे परन्तु फटे हुए दूध एवं फटे हुए मन में स्नेह, चिकनापन पुनः कभी नहीं हो सकता है। भाव यह है कि दूध जब एक बार फट जाता है तो उसमें से मक्खन नहीं निकाला जा सकता है तथा एक बार किसी से मन फट जाता है तो पुनः उसके प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता है।

अब तेरी बसि बो ……… .. …. पंकमय ताल ॥3॥

कठिन शब्दार्थ – बसिबो=रहना। मराल=हंस। पानिप=पानी, इज्जत पंकमय-कीचड़ युक्त।

अर्थ--यह एक अन्योक्ति है। इसमें मराल के माध्यम से मतिराम ने एक सज्जन व्यक्ति को शिक्षा प्रदान की है--

'हे हंस ! अब तेरा इस ताल पर रहना उचित नहीं है क्योंकि इस ताल का सम्पूर्ण पानी अब सूख चुका है तथा यह केवल कीचड़ युक्त रह गया है।

दुख दीने हू ………………… सुवासित-केश ॥4॥

कठिन शब्दार्थ--सुदेश=स्वदेश अपना देश। अगरु=अगर। सुवासित=सुगंधित।

अर्थ--मतिराम का कथन है कि श्रेष्ठ व्यक्तियों को दुखः देने पर भी वे अपने देश को नहीं छोड़ते हैं। जिस प्रकार सुगन्धित चूर्ण को आग में डालने पर भी वह बालों को सुगन्धित ही करता है।

पिसुन वचन .. …. ………… .. ….तीर तरवारि ॥5॥

कठिन शब्दार्थ--पिसुन=चुगलखोर। तोय=जल। तुपक=तोप।

अर्थ--सज्जन के हृदय पर चुगलखोर के वचनों का कोई भी प्रभाव नहीं पड सकता है। जैसे कि पानी में तोप' तीर एवं तलवार का वार करने पर उसका कुछ भी नहीं बिगड़ सकता है। तीर एवं तलवार से न तो पानी

को फोड़ा जा सकता है और न ही फाड़ा जा सकता है वैसे ही सज्जन के हृदय पर चुगलखोर के वचन कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

बूंदी वर्णन—

प्रश्न 1. प्रस्तुत दोहों के आधार पर बूंदी के वैभव का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। (सीमा 80 शब्द)

उत्तर—रीतिकालीन एवं दरबारी कवि होने के बावजूद भी मतिराम ने अनेक स्थलों पर स्वाभाविक वर्णन किया है। बूंदी केनगर वर्णन में कवि ने कल्पना का सहारा अवश्य लिया है परन्तु अधिक नहीं। रीतिकालीन अतिशयोक्ति मे प्रभावित होते हुए भी स्वाभाविकता उसमें अवश्य विद्यमान है।

प्रारम्भ में मतिराम ने बूंदी को सतयुग का विश्राम स्थल तथा देवता एवं सम्पत्ति का घर बताया है। वहां के लोगों को वेद पुराण, गीत कविता एवं अन्य कलाओं में प्रवीण बतलाया हैं। बूंदी के महल श्वेत हैं तथा उन पर स्वर्ण कलश सुशोभित है महलों पर पताकायें सुशोभित हैं जो कि पखे का कार्य करती हैं। बूंदी नगर वैभव युक्त है। वहां के सुन्दर राजमार्ग में मरकत, लाल मूंगा, मणि मोती सुन्दर हीरे तथा जारी के काम के वस्त्र बिकते रहते हैं। बूंदी को देखने से प्रतीत होता है मानो सम्पूर्ण स्वर्ग लोक ही अपनी सम्पदा सहित उसमें प्रतिबिम्बित हो गया है। वहा के पुरुष एवं स्त्रियां अत्यधिक सुन्दर हैं बूंदो नगर का स्वामी हाड़ा वंशीय राजा सुरजन राव है। वह सर्वगुण सम्पन्न है।

प्रश्न 2 बूंदी के प्राकृतिक सौन्दर्य पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—बूंदी वैभव युक्त होने के साथ साथ प्राकृतिक दृष्टि से भी सुन्दर नगरी है। वहां छहों ऋतुओं में आनन्द छाया रहता है सुन्दर स्त्रियों के साथ घरों में पालतू मयूर भी नृत्य करते हैं बूंदी के उद्यान वृक्षों तथा बेलों से सदा प्रफुल्लित रहते हैं। भ्रमर एवं कोयल के मधुर स्वर हमेशा गूंजते रहते हैं। वहां के कुए बावडिया एवं तालाब अनेक प्रकार के पुष्पों की सुगन्धि एवं मधुर पराग मे भरे हुए हैं। इस प्रकार बूंदी नगरी में सर्वत्र प्राकृतिक शोभा विद्यमान है।

प्रश्न 3. बूंदी नगर किस कला के लिए संसार प्रसिद्ध है ? सर्वोत्तम उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में अंकित कीजिए—

उत्तर (क) चित्रकला।

प्रश्न 4. निम्नांकित का भाव स्पष्ट कीजिए—

उत्तर—इनका भाव अर्थ के अन्तर्गत देखिए—।

प्रश्न 5. "सकल जगत् पानिप रह्यो बूंदी में ठहराय" सारे जगत का वैभव बूंदी में क्यों ठहरा हुआ है ?

उत्तर—(ख) बूंदी का राजा वैभवशाली और कला प्रेमी है, इसलिए।

प्रश्न 6. "अक्षय बट बालक उदर ज्यों संसार समाय।
सकल जगत पानिप रह्यो, बूंदी में ठहराय॥

उपर्युक्त दोहे में कौनसा अलंकार है ?

उत्तर (क) उपमा।

प्रश्न 7. आजकल इस नगरी के आस-पास के क्षेत्र को हाड़ोती किसलिए कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए। (सीमा 20 शब्द)

उत्तर—आजकल इस नगरी के आस पास के क्षेत्रों को हाड़ोती इसलिए कहते हैं क्योंकि इस क्षेत्र में पहले हाड़ा वंशीय राजा राज्य करते थे तथा वर्तमान में इस क्षेत्र की भाषा भी हाड़ोती ही है।

रूप वर्णन—

प्रश्न 1. मतिराम की नायिकाओं के रूप में क्या विशेषताएं मिलती हैं ? (सीमा 30 शब्द)

उत्तर—रीतिकालीन अन्य कवियों के समान मतिराम ने भी नायिका के रूप वर्णन पर ध्यान दिया है। मतिराम ने सतसई में नायिका के रूप का चित्रण विभिन्न उपकरण के माध्यम से किया है। मतिराम पर ग्रामीण अंचल का प्रभाव अधिक था अतः नायिकाओं के रूप वर्णन में अलंकार सौंदर्य विशेष रूप से दर्शनीय है।

प्रश्न 2. बिहारी और मतिराम के रूप में मौलिक भेद है ? स्पष्ट कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर—बिहारी एवं मतिराम दोनों ही रीतिकालीन कवि हैं। दोनों ने

उत्तर--(क) क्योंकि चन्द्रमुखी नायिका के अटा पर चढ़ने से रात्रि का भ्रम हो गया है।

विविध—

प्रश्न 1. अन्योक्ति से क्या तात्पर्य है ? उपर्युक्त दोहों में दो अन्योक्ति सम्बन्धी दोहे हैं उसका संकेत कीजिए।

उत्तर--अन्योक्ति से तात्पर्य यह है कि किसी अन्य के माध्यम से अभिप्रेत व्यक्ति को प्रेरणा देना। जैसे भ्रमर के माध्यम से किसी सेवक को अपने धनाढ्य स्वामी के निर्धन बन जाने पर उसे न छोड़े जाने की प्रेरणा।

पाठ्य पुस्तक में संकलित दोहों में निम्नलिखित अन्योक्ति सम्बन्धी है-

(i) अब तेरो..................पंकमय ताल।

इस दोहे में कवि ने कलहंस के माध्यम से किसी सज्जन व्यक्ति को प्रेरणा प्रदान की है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए--

उत्तर--नोट--इन पदों का भाव अर्थ के अन्तर्गत देखिए।

प्रश्न 3. 'फाटे मन अरू दूध में नेह कबहूं होय।'-

इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है ?

उत्तर—(ख) श्लेष।

प्रश्न 4. 'सकल सूखि पानिया गयो, भयो पंकमय ताल।'

इस पंक्ति में पानिया सूखने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर--मान और मर्यादा।

प्रश्न 5. दुःख दीने हूं सुजन जन छोड़त निज न सुदेश

कष्ट देने पर भी सज्जन अपना गुण क्यों नहीं छोड़ता है ?

उत्तर--(ख) क्योंकि उसको अपनी मर्यादाओं के प्रति अगाध प्रेम होता है।

प्रश्न 6. रेखांकित किस भाव के प्रतीक है –

(क) नेह न कबहूं होई।

(ख) भयो पंकमय ताल।

ही अपनी रचनाओं में नायिकाओं के रूप का वर्णन किया। यद्यपि दोनों ने नायिकाओं के वर्णन में अलंकारों का सहारा लिया है परन्तु बिहारी की कल्पना मतिराम से कहीं दूभर है, मतिराम के वर्णन में स्वाभाविकता बिहारी की तुलना में कुछ अधिक है। मतिराम का रूप ग्रामीण अंचल के प्रभाव से प्रभावित है जबकि बिहारी का रूप वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण है।

प्रश्न 3. मतिराम शृङ्गार काल के कवि क्यों माने जाते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर—मतिराम शृङ्गार काल के कवि इसलिए माने जाते हैं क्योंकि उनके वाक्यों में सभी प्रवृत्तियां दृष्टगत होती हैं जो शृंगार काल के भव्य कवियों की रचनाओं में विद्यमान है। नायक नायिका भेद तथा अलंकार छन्द पर लक्षण ग्रन्थ रचने के कारण मतिराम रीतिकालीन आचार्य कवि कहलाते हैं। उनके द्वारा विरचित रसराज ग्रन्थ शृंगार रस का उत्कृष्ट लक्षण ग्रन्थ माना जाता है। मतिराम के काव्य की मूल वृति शृंगार है। शृंगार वर्णन में संयोग तथा वियोग काल में पायी जाने वाली नायक नायिकाओं का विभिन्न मनोदशाओं का अत्यन्त मनोवैज्ञानिक एवं स्वाभाविक चित्रण किया है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पदों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—पदों का भाव अर्थ के अन्तर्गत देखिये।

प्रश्न 5. (क) मनो रूप मन्दिर बंधे, सुन्दर बन्दनवार।
(ख) रूप भोन में जगमगै, मनो दीप की ज्योति॥

उपर्युक्त पंक्तियों में कौन सा अलंकार है? सही उत्तर का क्रमांक कोष्ठक में अंकित कीजिये।

उत्तर—(ख) उत्प्रेक्षा।

प्रश्न 6. 'डीठि नहीं ठहराइये, डीठिन ही ठहराइ' इस पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

उत्तर—(ग) यमक।

प्रश्न 7. 'जब जब चढ़ति अटानि, चन्द्रमुखी यह बाम।
तब तब घर-घर धरत है, दीप बार सब ग्राम॥"

गांव वाले दिन में ही घर-घर दीप जलाकर क्यों रखते हैं?

उत्तर—(क) 'नेह' प्रेम प्रतीक है।

(ख) 'पंकभर' बुराइयों से युक्त, दोषमय।

७ बिहारी

अनुराग और भक्ति—

नीकि दई·······बारनु तारि ।।1।।

कठिन शब्दार्थ-नीकी=अच्छी। अनाकनी=अनसुनी। फीकी= निरर्थक गुहारि=याचना। बरनु=हाथी। विरदु=यश।

अर्थ—हे भगवान ! हमारी तो प्रार्थना ही प्रभावहीन हो गई, अर्थात् आपने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। आपके इस स्वभाव को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानों आपने एक बार हाथी का उद्धार करके अब आपने उद्धार करके पाने वाला यश ही छोड़ दिया है, अर्थात् अब आप किसी का उद्धार नहीं करते।

अजो तरयौना·······के संग ।।2।।

कठिन शब्दार्थ—अजो=आज तक भी। तरयौना=अधोवर्ती, कर्णभूषण विशेष श्रुति=(i) वेद(ii) कान। नाक बास= (i) स्वर्ग निवास (ii) नासिका का निवास। बेसरि नाक का आभूषण। बेसरि=अधम प्राणी। मृकतनु=(i) जीवन मुक्त सज्जन (ii) मुक्ता।

अर्थ—(i) वेसर के पक्ष में आज तक तरयौना (कर्णभूषण) एक ढंग से कानों का सेवन करता हुआ, तरयौना (अधोवर्ती) ही रहा और बेसर ने मोतियों की संगति प्राप्त कर नाक-वास (नासिका का वास) प्राप्त किया।

(ii) सत्संग पक्ष में निरन्तर श्रुति (वेद)का सेवन करता हुआ आज तक भी तरयोना ही (अधोवर्ती) ही रहा और (बेसरी) (महा अधम प्राणी) ने भी मुक्तों (जीवन मुक्त सज्जनों) के संग बसकर स्वर्ग निवास प्राप्त किया।

जमकरि मुंह·······गुन गाउ ।।3।।

कठिन शब्दार्थ—तरहरि=नीचे। घरहरि=निश्चय। नरहरि=(i) नृसिंह भगवान (ii) दीक्षा गुरु नरहरिदास।

अर्थ कवि बिहारी अपने मन से कह रहा है कि हे मन !तू मन रूपी हाथी के मुंह के नीचे पड़ा हुआ है, इस निश्चय पर चित लगा तथा अब

भी विषय तृष्णा छोड़कर नर हरि के गुणों का गान कर।

कौन भांति·······गीधहिं तारि ।।4।।

कठिन शब्दार्थ—बीधे=उलझे हो। गीधे=ललचाये हुये गीधहिं=संतापी आदि गिद्धों को।

अर्थ--भक्त भगवान को उलाहना देता हुआ कह रहा है कि हे कृष्ण अब देखना है कि आप उद्धार करने से प्राप्त अपनी प्रतिष्ठा को किस प्रकार बचाते हो क्योंकि संतापी आदि गिद्धों का उद्धार करना तो आसान था, पर अब तो मुझ जैसे प्रसिद्ध महापापी से उलझे हुये हो।

नेह न नैनन······प्यास बुझाई ।।5।।

कठिन शब्दार्थ--नेहु=प्रेम। बलाइ=बलाय, विपति। तऊ-तोभी।

अर्थ-- हे सखि ! यह प्रेम नहीं है अपितु नेत्रों के लिए भारी विपति उत्पन्न हो गई है क्योंकि प्रतिदिन ये नीर से भरे रहते हैं फिर भी प्यास नहीं बुझती हैं अर्थात् प्रियतम दर्शन की लालसा बनी रहती है।

जब जब वे·······लागति न हि ।।6।।

अर्थ—हे सखि ! जब मुझे उस नायक का स्मरण आता है तब ही मेरी सारी चेतना नष्ट हो जाती है मेरी आंखों में उसकी आंखों का सौन्दय झूमने लगता है तथा विरह व्यथा के कारण नींद नहीं आती।

घाम धरीक·······मालती कुंज ।।7।।

कठिन शब्दार्थ घाम = गर्मी। घरीक = एकघड़ी। कलित = युक्त। ललित = सुन्दर।

अर्थ--यह किसी नायिका कथन है। वह कहती है कि यमुना के किनारे पर तमाल वृक्षों से मिले हुये सुन्दर भौंरों के समूह से युक्त मालती कुंज में थोड़ी देर तक गर्मी का निवारण करे।(जब तक मैं आ रही हूं)

रंगराती रातें·······रही लगाई ।।8।।

कठिन शब्दार्थ रंगराती=अनुरागी। रातें हिये = प्रेमपूर्ण हृदय से। काती काटने वाली।

अर्थ--हे सखि ! प्रवासी प्रियतम ने पूर्ण हृदय से जिस अनुरागमयी पत्रिका को धैर्य देने वाले शब्दों से भरकर लिखा है, उसे वह विरहणी विरह दुःख को काटने वाली तलवार समझकर अपनी छाती से लगा रही है।

भी यह..........किये अचेत ॥9॥

कठिन शब्दार्थ – भौ=हो गया। समौ=समय ।

अर्थ – हे सखि ! विरह के कारण यह समय ऐसा ही हो गया है कि इसमें सुख देने वाले पदार्थ भी दुःख देने वाले बन जाते हैं। इसीलिए तो चैत्र मास के चांद स्वच्छ और शीतल चांदनी मुझे विरह व्यथा का उद्दीपन करके चेतना-शून्य बना देती है।

मोहि=तुम्हें..........निवाहन लाज ॥ 10 ॥

कठिन शब्दार्थ – बहस = विवाद । जदुराजा=यदुराज । विरद=बड़ाई !

अर्थ – कोई भक्त भगवान की प्रशंसा करते हुए कहता है –

हे यदुराज ! मुझमें विवाद बढ़ा हुआ है । देखना है कि कौन जीतता है । हम दोनों को ही अपने-अपने विरद की लाज का निर्वाह करना है।

प्रशस्ति –

सामां सेन सयान..........तिहारे हाथ ॥1 ॥

कठिन शब्दार्थ – सामा=(i) समान (ii) श्याम पक्षी । सेन=सेन बाज पक्षी , समान=चतुर, कौशल । शचान=पक्षी । वै=वया पक्षी । साहि (i) शाह-जहां (ii) पक्षी=विशेष ।

अर्थ – आमेर के महाराजा जयसिंह का यशोगान करता हुआ कवि कहता है कि यद्यपि सम्राट शाहजहां के पास विशाल सेना तथा युद्ध कौशल की समस्त सामग्री है तथापि हे बाहुबली महाराज जयशाही (विजय के स्वामी) सम्राट की विजय तो तुम्हारे हाथों में ही है। तुम्हारे बिना सम्राट सब कुछ होते हुए भी विजय प्राप्त नहीं कर सकते।

यौं दल काढ़े..........गाई गुआल ॥ 2 ॥

कठिन शब्दार्थ – बालक=बलख देश । भुवाल=भूपाल राजा । हरि=श्रीकृष्ण । गुआल=ग्वाले ।

अर्थ – राजा जयसिंह की शूर वीरता का वर्णन करते हुए कवि कहता है हे राजा जयसिंह ! तूने दलों को बलख देश से इस प्रकार निकाल लिया था जिस प्रकार की अघासुर के पेट में पड़ी हुई गायों तथा ग्वालों को श्री कृष्ण ने।

विशेष – यह घटना सन् 1647 की है जब शाहजहां की आज्ञा से

औरंगजेब ने बलख बुखारे पर चढ़ाई की थी। उस समय जयसिंह ने औरंगजेब की सेना को बलख से सकुशल निकाला था।

विविध--

प्यासे दुपहर ....कहत पयोधि ।। 1 ।।

कठिन शब्दार्थ सोधि=खोज । मरुधर-रेगिस्तान । मतीरा-तरबूज ।

अर्थ- ज्येष्ठ मास की दुपहरी के प्यासे लोग (तो) तरबूजों को ढूंढ ढूंढ कर जीते रहे (अतः अब) अमित, अपार एवं अगाध जल युक्त समुद्र को मूंड मारी मरने दो)

जो चाहत..............चीकनों चित्त ।। 2 ।।

कठिन-शब्दार्थ — चनक=चटकीलापन । रज=धूल । राजस-राजसी गुण, गर्व, क्रोध इत्यादि ।

अर्थ--हे मित्र ! यदि तुम चाहते हो कि न तो चित्त का चटकीलापन घटे और न वह मैला ही हो तो स्नेह से चिपके हुए चित्त में राजसी (गुण) रज में मत छुवाओ । हृदय में रजोगुण का स्पर्श मत होने दो ।

कहलाने एकत..........दाघ निदाघ ।। 3 ।।

कठिन शब्दार्थ-- कहलाने=किस कारण से । बसत=बसना । अहि=सर्प । मयूर=मोर, गर्दन । मृग=हिरण । बाघ=शेर ।

अर्थ सर्प, मयूर, मृग एवं बाघ किस कारण एक स्थान पर विद्यमान हैं ? बिहारी कवि का कथन है कि ग्रीष्म ऋतु की भयंकर गर्मी ने सारे संसार को तपोवन के समान बना दिया है, अतः उक्त सभी जानवर अपने स्वाभाविक वैमनस्य को भूलकर एक स्थान पर निवास कर रहे हैं ।

समै-समै..............रुचि होइ ।। 4 ।।

कठिन शब्दार्थ--समै:समै=समय-समय पर । रुचि=चाह ।

अर्थ- ईश्वर की इस सृष्टि में कोई भी रूप कुरूप नहीं है समय-समय पर सब ही सुन्दर लगते हैं । मनुष्य की रुचि जिस समय जिस ओर जितनी होती है, उस समय उस ओर उतनी ही रुचि (शोभा) हो जाती है, अर्थात् वह वस्तु उतनी ही सुन्दर जान पड़ती है ।

स्यों बिरजी..........बरसत रहत ।। 5 ।।

कठिन-शब्दार्थ स्यों=सहित । मनु=मानो । आठो जाम=रात दिन । बरत =बलते रहते हैं ।

अर्थ- हे सखि ! मेरे नेत्र रात-दिन निरन्तर बलते और बरसते रहते हैं, ऐसा प्रतीत होता है मानो विरह ने बिजली सहित मेघों को इन नेत्रों में लाकर बसा दिया है। भाव यह है कि नेत्र विरह के दुःख से आक्रांत होकर आंसू बहाते रहते हैं।

मूड चढ़ायेहु.............. ....पर हारु ॥6॥

कठिन शब्दार्थ --मूंड-मस्तक। कचभार-बालों का वजन।

अर्थ--केशभार सिर पर धारण किये जाने पर भी पीठ पर ही पड़ा है और हार गले में पड़े रहने पर भी हृदय स्थल को प्राप्त करता है। भाव यह है कि नीच व्यक्ति उच्च स्थान प्राप्त करने पर भी निरादृत होता है तथा योग्य व्यक्ति निम्न पद पर रहकर भी पूज्य होता है।

मार्यो मनुहारिन......................बिनु नाहिं ॥7॥

कठिन शब्दार्थ--मनुहारिन=मनोहारी रीतियां। गार्यो=गाली। खरु मिठाहिं=अत्यन्त मधुर। अनरवाहटी=क्रोध।

अर्थ --उसकी मार भी मनोहर रीतियों से भरी होती है, उसकी गाली भी अत्यन्त मधुर लगती है उसका पूर्ण क्रोध भी बिना मुस्कराहट के नहीं होता, अर्थात् उसका क्रोध भी इतना सहज लगता है जितनी उसकी मुस्कराहट।

अरुन सरोरुह ....अनन्द ॥8॥

कठिन शब्दार्थ--अरुन=लाल। सरोरुह=कमल। काहि=किसको।

अर्थ--जिसके (नायिका के) हाथ पैर लाल कमल हैं, खंजन नेत्र हैं, चन्द्रमा मुख है, ऐसी शरद् रूपी सुन्दरी अपने समय पर आकर किसको आनन्दित नहीं करती अर्थात् सभी को आनन्द देती है।

अभ्यास के प्रश्न

अनुराग और भक्ति--

प्रश्न 1. 'तर्यौना' में कौनसा अलंकार है। अर्थ स्पष्ट कर पुष्टि कीजिये।

उत्तर--'तर्यौना' में श्लेष अलंकार है क्योंकि इस एक शब्द में यहां दो अर्थ छिपे हुए हैं --करण भूषण एव अधोवर्ती।

नोट--अर्थका स्पष्टीकरण अर्थभाग में देखें।

प्रश्न 2,'नाक-वास बेसरि रह्यो बसी मुकतन के संग'

उक्त पंक्तियों का लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अधम प्राणी ने भी मुक्तों अर्थात् जीवन युक्त सज्जनों के संग बसकर स्वर्ग निवास प्राप्त किया।

प्रश्न 3.चौथे दोहे में आये अलंकार की परिभाषा लिखिये।

उत्तर--चौथे दोहे में काव्यलिंग अलंकार है।

लक्षण- जब ज्ञापक हेतु द्वारा किसी वस्तु का समर्थन किया जाय अथवा जहां समर्थनीय अर्थ का किसी पदार्थ या वाक्य के द्वारा समर्थन किया जाय, तब काव्यलिंग अलंकार होता है।

प्रश्न 4. भगवान का विरद क्यों धर्म संकट में पड़ गया ? 30 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भगवान का विरद धर्म संकट में बिहारी जैसे महान् पापी के उद्धार-प्रश्न को लेकर पड़ गया है। बिहारी भगवान को आवेश में लाकर अपना स्वयं का उद्धार चाहता है।

प्रश्न 5. नयन भरे होने पर भी नेत्रों की प्यास इसलिए नहीं बुझती क्योंकि प्रियतम दर्शन की लालसा सतत बनी रहती है।

प्रश्न 6. 'नीकि दई........................ बारनु बारि।,

दोहे में कवि का कौन सा भाव व्यक्त हुआ है ?

उत्तर--(ग) भक्ति-भाव।

प्रश्न 7. उक्त दोहे में भक्त ने भगवान को क्या उलाहना दिया है ?

उत्तर—(ग) भगवान् ने उद्धार करने के गुण को त्याग दिया है।

प्रश्न 8. 'जमकरि मुंह तरहरि पर्यो' कवि उक्त पंक्ति में क्या नीति कथन कहना चाहता है ?

उत्तर--(क) मोक्ष हेतु भजन कीर्तन कर।

प्रश्न 9. छठे दोहे में विरोधाभास अलंकार है। उक्त दोहे का आशय बताते हये विरोधाभास को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भाव यह है कि नायक का स्मरण आने पर नायिका भाव विभोर हो उठती है अतः सम्पूर्ण चेतना विहीन होने से सुधि चली जाती है।

उसकी आंखें नायक की आखों से लगी रहती हैं परन्तु आखें नही लगती अर्थात् नायिका को निद्रा नही आती क्यों कि नायक सदैव आखों में बसा रहता है ।

विविध

प्रश्न 10. मयूर और सर्प, मृग और बाघ एक दूसरे के शत्रु होते हुए भी तपोवन में क्यों साथ रहते हैं ?

उत्तर— यद्यपि मयूर एवं सर्प मृग और बाघ एक दूसरे के जन्मजात शत्रु होते हैं परन्तु तपोवन में वे एक साथ इसलिए रहते हैं क्योंकि वहां का वातावरण अत्यन्त पवित्र होता है। इस पवित्र वातावरण के प्रभाव से वे इस पारस्परिक वैमनस्य को भूल जाते हैं ।

प्रश्न 11 कवि ने निर्लज्ज मनुष्यों की मनोवृत्ति का चित्रण किस उदाहरण के माध्यम से किया है ?

उत्तर– कवि ने निर्लज्ज मनुष्यों की मनोवृत्ति का चित्रण कच-भार के उदाहरण द्वारा किया है ।

प्रश्न 12 अरुन सरोरुह-कर-चरन दृग खंजन मुख चन्द ॥
समै आइ सुन्दरि सरद काहि न करत अनन्द ॥

उक्त पद में आये उपमाओं का प्रयोग जिन उपमेयों के लिए किया है उन्हें निम्न शब्दों के समक्ष लिखिए—

उत्तर–(i) कर-चरन=अरुन सरोरुह
(ii) दृग-खंजन
(iii) मुख-चन्द

प्रश्न 13, उपर्युक्त उपमाओं की उपयुक्तता पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर—उपर्युक्त उपमान पूर्णतया उचित हैं। श्रेष्ठ नायिका के चरण रक्त कमल के समान लालिमा लिये हुए होते हैं, नेत्र खंजन सदृश होते हैं तथा मुख चन्द्र सदृश होता है। ये सभी उपमान नवीन नहीं हैं अपितु प्रसिद्ध हैं । इसके अलावा शरद ऋतु पर चूंकि सुन्दरी का आरोप है अतः ये उपमान और भी उपयुक्त हैं क्योंकि शरद में कमल अत्यधिक विकसित होते हैं तथा शरद कालीन चन्द्रमा की कान्ति भी अत्यधिक होती है। खंजन पक्षी इस ऋतु में दिखने लगते हैं ।

प्रश्न 14 कवि द्वारा प्रयुक्त निम्नलिखित रूपकों की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--(1) सुन्दरि-शरद= यह रूपक पूर्णतया उचित है शरद ऋतु सर्व प्रथम अपनी सुन्दरता। स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध है, अतः श्रेष्ठ नायिका का रूपक देना सार्थक है। यहां मानवीकरण है।

(2) दृग खंजन - यह रूपक प्रसिद्ध है। नेत्र पर खंजन का आरोप

(3) मुख-चन्द--मुख पर चन्द्रमा का आरोप भी सर्वथा सार्थक है, तथा रूढ़ है।

प्रश्न 15, संकलित दोहों में आए मुहावरे छांटिए तथा उनका भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मुहावरा भावार्थ

(i) मूड़ चढ़ना-किसी अयोग्य को अधिक प्रतिष्ठा देना।

(ii) गरें परि-गले पड़ना अर्थात् खुशामदी करना।

(iii) हिये हारु-हृदय का हार, अत्यन्त प्रिय।

(iv) समै-समै सुन्दर सबै-समयानुसार सभी वस्तुये सुन्दर होती हैं।

(v) आंख लगाना-प्रेम होना।

प्रश्न 16. उस दोहे को छांटिए जिसकी शैली समास प्रधान हो, शब्द-योजना, नाद सौन्दर्य हो, संयोग शृंगार के अनुकूल प्रवृत्ति हो॥

उत्तर--'अरुन सरोरुह कर चरन..................करित आनन्द॥

प्रश्न 17. यमुना तीर -रमणीय स्थल। कलित-ललित अलिपुंज-भौरों का समूह उस स्थान पर निःशंक होकर गूंजता रहता है क्योंकि वह एकान्त स्थल है।

तमाल तरु मिलित मालती कुंज- जिस प्रकार मालती लता तमाल वृक्ष से पूर्ण रूप से चिपटी हुई है, उसी प्रकार मैं भी तुमसे स्वच्छन्द और परिपूर्ण आलिंगन करूंगी।

प्रश्न. नायक द्वारा लिखे पत्र को 'विरह काटने की कटार' क्यों माना है ?

उत्तर—नायक के पत्रों को विरह काटने की कटार इसलिए माना है क्योंकि नायिका जब उस पत्र को पढ़ती है तो उसके विरह दुख में शान्ति मिलती है। पत्र को पढ़कर नायिका के विरह में कमी होती है।

प्रशस्ति—

प्रश्न 19. अपने आश्रयदाता जयसिंह की प्रशस्ति में कवि ने क्या-क्या कहा है ?

उतर—अपने आश्रयदाता जयसिंह की प्रशस्ति में बिहारी ने कहा है कि जयसिंह के कारण ही वस्तुत:शाहशाह की विजय हुआ करती थी उसकी विजय का मुख्य कारण जयसिंह ही था। बलख देश में शाहजहां की सेना को जयसिंह ने ही बचाया था। जयसिंह की वीरता का कवि ने खुले रूप से वर्णन किया है।

प्रश्न 20. निम्नलिखित सूची के शब्दों (पक्षी नाम) को छांटकर उपयुक्त स्थान पर लिखिए।

उत्तर - समां=श्याम पक्षी। सेन=श्येन, बाज पक्षी। समान=शबान पक्षी। बैं=बया पक्षी। साही=शाही एक विशेष पक्षी। फते=फतह बाज।

८. श्रीधर पाठक

हेमन्त--

बीता कातिक..................सुख मच रहा ॥

कठिन शब्दार्थ—कातिक=कार्तिक। सकल=सब।

अर्थ – कार्तिक मास व्यतीत हो गया है तथा शरद ऋतु समाप्त होती जा रही है। हेमन्त ऋतु सभी को सुखदायक प्रतीत हुई। खेतों में ज्वार बाजरा आदि काट लिये गये। खलिहान के कार्य से किसान निबट गये अर्थात् अनाज आदि निकाल लिया। कुछ समय के लिये बैलों को परिश्रम से अवकाश मिल गया। रबी की फसल के नवीन अंकुर पृथ्वी में जम गये अर्थात् गेहूं जो बो दिये गये। जमीन के स्वामी अर्थात् किसान को अपने खेत की उगाही प्राप्त हो गई है। उसने उस अनाज रूपी उगाही को प्राप्त कर महाजन का ब्याज सहित सम्पूर्ण कर्ज चुका दिया है। जिस किसान के यहां कर्ज चुकाने

के बाद साल भर खाने के लिये भी अनाज बच गया है उसके यहां आनन्द एवं सुख हो रहा है।

जिनको कुछ नहीं....................बांके बनी ॥

कठिन शब्दार्थ — रहट=खेत में पानी देने के साधन। बरहे-पानी की धारे। ठोर=स्थान।

अर्थ--जिन कृषकों के घरों में कर्ज चुकाने के पश्चात् कुछ भी शेष नहीं बचा है, वे अपने कर्मों को दूषण देकर रो रहे हैं। वे अपनी किस्मत को दूषित बनाकर बैठे हुये घरों में रो रहे हैं। खरीफ के खेतों में इस समय चुप्पी है. रबी की फसल पर किसान का इस समय विशेष ध्यान है। रबी के खेतों मे स्थान स्थान पर रहट आदि के द्वारा फसल को पानी दिया जा रहा है। पानी की धाराये इधर उधर निकल रही है। जो, गेहूं के खेतों मे सरसों अत्यधिक सुन्दर बन पड़ी है, उसकी दिन-दिन शोभा बढ़ने लगी है। सुन्दर सौंफ एवं फूलों की क्यारियां सुशोभित हो रही हैं, सूआ या पालक आदि अनेक तरकारियां क्यारियो में लगी हुयी हैं। अपने-अपने स्थानों पर उक्त सभी सुशोभित हो रहे हैं तथा अपनी सुन्दर शोभा से सबके मन को मोहित कर रहे हैं। बहुत गुणों के धनी अनोखे हेमन्त धन्यवाद के पात्र हैं, वे वस्तुओं के बांके सरदार हैं।

भारत गीत--

जय-जय...............भारत देश ॥

कठिन शब्दार्थ— दुलारा-प्यारा। लोकत्रयी-तीनों लोक। राकेश-चन्द्रमा।

अर्थ--प्यारे भारत देश की जय जयकार हो। यह भारतवर्ष सम्पूर्ण संसार से अद्भुत है। संसार का मुकट, ईश्वर का दुलारा हमारा भारत देश सुशोभित हो रहा है। हमारा भारतवर्ष सौभाग्यशाली एवं श्रेष्ठ है।

यह पृथ्वी का स्वर्गिक शीश फूल है तथा तीनों लोकों मे प्रेम का संचार करने वाला है सुन्दर प्रकृति नटी का यह टीका है, अर्थात् प्राकृतिक दृष्टि से वह श्रेष्ठ है जिस प्रकार चन्द्रमा रात्रि का टीका है, उसी प्रकार भारतवर्ष प्रकृति नटी का टीका है। प्यारे भारत देश की जय हो जय हो।

अभ्यास के प्रश्न

हेमन्त—

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 20 शब्दों में लिखिए

(i) हेमन्त ऋतु किस माह के पश्चात् आती है ?

उत्तर हेमन्त ऋतु कार्तिक माह में आती है।

(ii) हेमन्त ऋतु को सुखदायक क्यों कहते हैं ?

उत्तर-क्योंकि इस ऋतु में किसान फसल को काट लेता है तथा अनाज आदि प्राप्त कर सुख अनुभव करता है। साथ ही मच्छर, मक्खी आदि का इस ऋतु में अभाव हो जाता है। गर्मी एवं वर्षा ऋतु में जिन परेशानियों कासामना करना पड़ता है, वे इस ऋतु में नहीं रहती।

(iii) हेमन्त ऋतु में किसान के जीवन में क्या परिवर्तन आता है ?

उत्तर—हेमन्त ऋतु में किसान खलिहान से निबट जाता है तथा रबी की फसल बोने में लगता है। वह खेत की उगाही प्राप्त कर ब्याज सहित कर्जा चुकाता है। जिसके पास खाने को अनाज बचा रहता है, उसके घर पर आनन्द एवं सुख रहता है।

(v) खरीफ की फसल में कौन-कौन से धान उगाये जाते हैं ?

उत्तर—खरीफ की फसल में मोठ, बाजरा, गवार, मूंग मक्का आदि लगाए जाते है।

(v) रबी की फसल के लिए कौन से बीज की आवश्यकता है ?

उत्तर—रवी की फसल के लिए गेहूं जौ, चना, सरसों आदि के बीज आवश्यकता है।

प्रश्न 2. भारत वर्ष की छः ऋतुओं के नाम लिखिये तथा आपको कोन ऋतु अधिक पसन्द है कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -भारतवर्ष की छः ऋतुयें निम्नलिखित है-वर्षा, शरद, हेमन्त शिशिर, वसन्त ग्रीष्म। इन छः ऋतुओं में से वसन्त ऋतु सर्वाधिक पसन्द है क्योंकि इस ऋतु में न अधिक गर्मी रहती है, न अधिक सर्दी रहती है तथा नहीं वर्षा जैसा किसी प्रकार का कीचड वगैरह रहता है। प्रकृति में भी सर्वत्र हरियाली दृष्टिगत होती है।

भारतीय गीत—

प्रश्न 3. कवि ने किन किन उपनामों से भारत को सुशोभित किय[illegible] है ?

उत्तर--कवि ने भारत को अनेक उपनामों से सुशोभित किया है। स[illegible] प्रथम उसे जगत मुकुट एवं जगदीश दुलारा बतलाया है। इसके पश्चात् पृथ्[illegible] का स्वर्गिक शीश फूल बतलाया है। लोकत्रयी का प्रेम मूल भी भारत [illegible] बतलाया है। अंत में प्रकृति नटी का टीका कहकर सम्बोधित किया है।

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिये।

उत्तर (1) जगत मुकुट जगदीश दुलारा—प्रस्तुत पंक्ति में श्री पा[illegible] महोदय ने भारत को संसार का मुकुट से तात्पर्य है अन्य देशों की तुलना [illegible] सर्व श्रेष्ठ। अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण भारतवर्ष जगत मुकुट क[illegible] गया है।

(2)स्वर्गिक शीशफूल पृथ्वी का—भारतवर्ष पृथ्वी का स्वर्गिक श[illegible] फूल है। पृथ्वी रूपी नायिका का भारतवर्ष को मस्तक का आभूषण शीशफ[illegible] कहकर सम्बोधित किया है।

(3) प्रिय लोकत्रयी का-लोकत्रयी से तातपर्य पृथ्वी, आकाश [illegible] पाताल इन तीनों लोकों से है। भारत वर्ष को कवि ने उक्त तीनों लो[illegible] प्रेम का मूल बतलाया है। भाव यह है कि भारतवर्ष तीनों लोकों में स[illegible] करने वाला है।

प्रश्न 5. सकलित कविताओं में से वे पंक्तियां छांटिये जिनमें रूप[illegible] उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार हैं।

उत्तर--रूपक अलंकार वाली पंक्तियां—

(i) जगत मुकट जगदीश दुलारा।

(ii) स्वर्गिक शीशफूल पृथ्वी का।

उपमा अलंकार वाली पंक्ति--

(i) सुललित प्रकृति का टीका ज्यों निशि का राकेश।

उत्प्रेक्षा अलंकार वाली पक्तियां--

(ii) प्रेम मूल प्रिय लोकत्रयी का।

प्रश्न 6. कविता में लक्ष्यार्थ शब्दों के प्रयोग का क्या महत्व है ? स[illegible] कीजिए।

उत्तर—प्रस्तुत कविता में श्री पाठक जी ने देश के भौगोलिक स्वरूप में मानवी मूर्ति की स्थापना की है। इस गीत में उन्होंने भारत को संसार का मुकुट जगदीश्वर का दुलारा, पृथ्वी का स्वर्गिक शीशफूल त्रिलोकी का प्रेममूल प्रकृति नर्तकी का टीका कहकर स्वागत किया है। उक्त लक्ष्यार्थ शब्द भारत देश की श्रेष्ठता एवं उसकी महानता व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 7. निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर श्रीधर पाठक जी की वैयक्तिक विशेषताओं को संकलित कविताओं के उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—(1) प्रकृति के चित्रकार—श्रीधर पाठकप्रकृति के चित्रकारथे उन्होंने अपनी कविताओं में प्रकृति के प्रति विशेष प्रेम प्रदर्शित किया है। हेमन्त वर्णन के अन्तर्गत रबी एवं खरीफ की फसल का जो वर्णन किया है—वहप्रकृति के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त करता है। यह वर्णन आलंकारिक न होकर स्वाभाविक है।

(2) मानव प्रेमी-पाठक जी मानवता के प्रेमी थे। उनकी कविताओं में उनकी उक्त विशेषता स्पष्ट झलकती है। हेमन्त' शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियां उनके मानव प्रेमी स्वभाव की द्योतक है।

'जिनको कुछ नहीं बचा करम को रो रहे,
किस्मत को दे दोष बठ कर रो रहे।"

(3) स्वदेशी प्रेम—पाठक जी देश प्रेम की भावना से ओत प्रोत थे। उनकी कविताओं में स्वदेश प्रेम की भावना स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई है। भारत गीत शीर्षक से लिखी गई रचना उनके स्वदेशप्रेम को स्पष्टतया प्रभावित करती है।

९. मैथिलीशरण गुप्त

उर्मिला-लक्ष्मण संवाद—

सौध सिंह द्वार .... शुक्र यह कौन है।

कठिन शब्दार्थ—सौधसिंह राजभवन का मुख्य द्वार। कीर=तोता। पंजर स्थिति पिंजड़े में बन्द। विस्मित—चकित। सुभाषी-मधुरभाषी। अधर की कांति ओठों की लालिमा। दाड़िम=अनार।

अर्थ—राजभवन के मुख्य द्वार पर इस समय भी वशी में कोई रसभीन राग छोड़ रहा है। उन स्वरों का अनुकरण उर्मिला के महल में बन्द सुन्दर

शरीर वाला एक तोता कर रहा है। इस तोते की ओर उर्मिला ने दृष्टि उठायी दृष्टि क्या उठायी मानों वहां दो खंजनों को उत्पन्न कर दिया। उन नेत्रों की सुन्दरता को देखकर तोता चकित रह गया। उसका बोलना बंद हो गया। वह अपने स्थान पर स्थिर रहकर उन्हें ठगा सा ताकता रह गया।

तोते की ऐसी दशा देखकर उर्मिला ने पूछा, हे मधुरभाषी ! तू सहसा चुप क्यों हो गया। ठीक इसी समय एक कोने से आकर लक्ष्मण ने कहा यदि आप आज्ञा दें, तो इसका कारण मैं बता सकता हूं। बात यह है कि तुम्हारी नासिका में लटकने वाले मोती में तुम्हारे ओठ की लालिमा का प्रति बिम्ब पड़ रहा है, जिसे यह तोते के भ्रम से अनार का दाना समझ बैठता है। और यह नासिका तो है ही तोते के समान। इस दृश्य को देखकर वह तोता सहसा मौन हो गया है और यह सोच रहा है कि अपनी चोंच अनार का दाना लेकर इस महल में दूसरा तोता आखिर कहां से आया ?

यों वचन कहकर.......................आंखों में खिला।।

कठिन शब्दार्थ सहास्य =हंसी हंसी में। मोद=प्रसन्नता। मराल-हंस। चारूचित्रित-सुन्दर चित्रों से युक्त। भित्तियां-दीवारें। आवेग-आवेश।

अर्थ—हंसी हंसी में विनोद की यह बात कहकर तथा वन में उमड़ते आनन्द से स्वय मुग्ध होकर लक्ष्मण उर्मिला के पास स्थिर गति में ठीक उसी प्रकार आकर खड़े हो गये जिस प्रकार प्रेम में डूबा हुआ कोई हंस मंद गति से चलकर कमलिनी के पास आ खड़ा होता है।

उर्मिला लक्ष्मण के मिलन के इस दृश्य को वे दीवारें भी जिन पर सुन्दर चित्र अंकित थे, एकटक देखती खड़ी रह गयी। दोनों का मिलन ऐसा था जैसे प्रीति और आवेश का संयोग, उर्मिला प्रीति की प्रतीक, लक्ष्मण आवेश के। एक दूसरे को देखकर दोनो की अंखों से हृदय का आनन्द झलकने लगा।

मुस्कराकर.......................बात थी ।।

कठिन शब्दार्थ - सरसाना=संचार करना। स्वप्ननिधि नींद। संलाप-वार्तालाप। मोहि ी=मोहित करने वाली।

अर्थ—अपनी मुस्कान में मधुरता उत्पन्न करती हुई तथा लक्ष्मण ने रसिकता की जो बात कही थी, उसमें रस का और अधिक संचार करती हुई

उर्मिला बोली–अरे तुम सचमुच जग गए ।फिर भी इतना बतला दो कि तुम्हारी और नींद की आंखे पहले पहल कब चार हुई।

हे सुन्दरी !हम उसी दिन से अधिक सोने लगे जिस दिन से तुमने मोहन मंत्र पढ़कर हम को नींद में डाल दिया और स्वयं जागरण से प्यार करने लगी।

जागरण ह .... मुझे रखो अहा।

कठिन शब्दार्थ--रुचिविचित्र–निराला स्वभाव ।मंजु-सुन्दर ।मनोज्ञता–मन को आकर्षित करने का गुण।

अर्थ --उर्मिला ने कहा-कुछ भी हो, फिर भी स्वप्न की तुलना में जागरण श्रेष्ठ माना जायेगा। लक्ष्मण बोले-यह स्वार्थ की बात है। प्रेम में कुछ भी बुरा नहीं होता। श्रेष्ठ वही है जिसे हम प्यार करें। उर्मिला ने कहा प्रेम के क्षेत्र की इस विलक्षण धारणा का मैं प्रशंसक हूं, पर क्या जिसे हम प्रेम करते हैं, उसे क्या योग्य नहीं होना चाहिए।

हे प्रिय! तुम्हारी योग्यता का क्या कहना? तूम केवल योग्य ही नहीं हो, आकृति से सभी सुन्दर हो इतनी–सुन्दर कि मन को बरबश आकर्षित करती हो। तुम जैसी रमणी की निकटता प्राप्त कर मैं अपने को धन्य समझता हूं यहां तक कि मैं अपनी गणना तुम्हारे दासों में करने लगा हूं।

उर्मिला ने तुरन्त प्रश्न किया--दास तो तुम हो नहीं फिर यह दास बनने का बहाना किसलिए बना रहे हो। क्या तुम चाहते हो कि लोग मुझे दासी कहें।

मेरी इच्छ है कि तुम मेरे निकट देव रहते और में तुम्हारे निकट-देवी।

बुद्ध देव –

मानिकि मान... .... बुद्ध भगवान।

कठिन शब्दार्थ--मानि-स्वाभिमानिनी। बान-आदत। आत-पीड़ित प्रतिदान–बदले में। क्षुधा सन्धान अमृत की प्यास।

अर्थ--हे मानिनि! अपने मन को छोड़ दो, मान को रखना तो तुमहारी आदत रही है। हे दानिनि ! मैं स्वयं तुम्हारा माननीय व्यक्ति तुम्हारे द्वार पर मांगने आया हूं। मुझे बतलाओ कि मैं किसकी भिक्षा ग्रहण नहीं करु। मेरे लिए तो सभी बराबर है। मेरे द्वारा अपनाने के योग्य वे लोग है

जोकि पीड़ित एवं अनजान हैं। राज भवन के जो विविध भोग हैं उनमें वह जलपान दुर्लभ है जिसका कि स्वाद श्रीराम ने भीलराज एवं शबरी के भोग में प्राप्त किया था, भाव यह है कि शबरी के बेरों के खाने में जो स्वाद मिला था वैसा स्वाद राजभवन के भोगों में नहीं मिल सकता है। उपदेश देने का बदले में जो प्रतिदान स्वरूप भिक्षा भी नहीं दे सका ऐसे लोग भले ही वे लघु हों अथवा महान् उऋण कैसे ही सकते हैं। अर्थात् उनका उऋण होना बडा मुश्किल है।

बुद्ध जी कहते हैं कि हम यह मानने को तैयार है कि गौतम का छिपकर जाना उनकी कमजोरी थी। परन्तु हे शुभे ! उनका परिणाम अच्छा ही हुआ उन्होंने अमृत की खोज करली। हे प्रिये ! शाक्य वंशीय सिद्धार्थ को अपना प्रिय जानकर उसकी निर्दयता को क्षमा करो। वह आज गौतम नहीं है अर्थात् मैत्री करुणा आदि भावों से परिपूर्ण वह शुद्ध बुद्ध भगवान है।

अभ्यास के प्रश्न

ऊर्मिला–लक्ष्मण संवाद

प्रश्न **1**. प्रस्तुत काव्यांश के आधार पर गुप्त जी के काव्य की विशेषताएं बतलाइए।

उत्तर—स्वर्गीय श्री मैथिलीशरण गुप्त अपने समय के प्रतिष्ठित राष्ट कवि थे। उन्होंने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावों को प्रसारित किया। उनके काव्य में भारतीय संस्कृति के सर्वोतम अतीत की जीवन्त चित्रण हैं।

प्रस्तुत काव्यांश उनके प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य साकेत के प्रथम सर्ग से उद्त है। इस काव्यांश में उर्मिला एवं लक्ष्मण का संवाद वर्णित है ।इस काव्यांश के पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि उनका काव्य सरलता एवं सहजता रूपी गुणों से युक्त है। उनके काव्य में व्यंग्य-परिहास सहज एवं काव्यात्मक ढ़ंग से अभिव्यक्त हुआ है। अलंकारों का स्वाभविक प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 2. पति पत्नी के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर—पति पत्नी लक्ष्मण एवं उर्मिला का संवाद व्यंग्य परिहासमय है। संवाद का प्रारम्भ शुक का आधार लेकर हुआ है।उर्मिला विस्मित एव कीर से उसके चुप होने का कारण पूछती है। सौमित्र इस समय अवसर पाकर उर्मिला के समीप आ जाते हैं। वह तोते के चुप होने का कारण

बतलाता है। वह कहता है कि इस तोते ने भ्रम से तुम्हारी नासिका में लटकने वाले मोती को अनार का दाना समझ बैठा है तथा तुम्हारी नासिका को तोता मान बैठा है। उसे आश्चर्य है कि यहां दूसरा तोता कहां से आया ? यह कहकर लक्ष्मण प्रेम मग्न होकर उर्मिला के समीप खड़े हो गये। उर्मिला भी लक्ष्मण को पास देखकर आनन्द विभोर हो गई। उर्मिला ने लक्ष्मण से फिर विनोद करते हुए पूछा–'नींद से तुम्हारो आंखें कब चार हुई ?' लक्ष्मण ने वैसा ही जवाब दिया तथा कहा जिस दिन से तुमने मोहन मंत्र पढ़ा, उसी दिन से यह हाल हुआ हैं। फिर दोनों प्रेम के सम्बन्ध में बातें करने लगे, लक्ष्मण उर्मिला की अनेक प्रकार से प्रशंसा करने लगे यहां तक कि स्वयं को दास बताने लगे। उर्मिला ने कहा ऐसा उचित नहीं इससे लोग उसे भी दासी कहने लगेंगे। उसने कहा कि आप देव रहें तथा मैं आपकी देवी रहूं।

प्रश्न 3. प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—अर्थ भाग देखें।

प्रश्न 4. "रे सुभाषी, बोल चुप क्यों रहा है ?" कीर के चुप होने का लक्ष्मण क्या करण बतलाते हैं ?

उत्तर—लक्ष्मण कहते हैं कि तोते ने उर्मिला की नासिका में लटकने वाले मोती में ओठ की लालिमा जो प्रतिबिम्ब पड़ रहा था, उसे भ्रम से अनार का दाना समझ लिया। नासिका को उसने तोता समझा। यह देखकर तोता मौन हो गया तथा सोचने लगा कि अपनी चोंच में अनार का दाना लेकर दूसरा तोता इस महल में कहां से आ गया ?

प्रश्न 5. 'नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से।'
कीर दाड़िम का बीज किसे समझता है ?

उत्तर—(ख) नाक के मोती को।

प्रश्न 6. 'नाक का मोती अधर की कान्ति से
बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से।"
उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?

उत्तर—(घ) भ्रान्तिमान।

प्रश्न 7. उपर्युक्त पद्यांश में कौन-सा छन्द है। स्पष्ट कीजिये।

उत्तर--उपयुक्त पद्यांश में 'पीयूष वर्ष' छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 19 मात्राएं होती हैं, 10, 9 पर यति तथा चरण के अंत्याक्षर क्रमशः लघु गुरु होते हैं। यति यदि 10, 8 पर रखी जाय तो 'आनन्द वर्धक' छन्द की संज्ञा दी जाती है।

बुद्धदेव--

प्रश्न 1. उपयुक्त गीत के भाव को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर--बुद्धत्व प्राप्त करने के पश्चात् गौतम यशोधरा के द्वार पर आकर उससे भिक्षा याचना करते हैं। वे उसे मानिन, दानिन आदि सम्बोधनों से सम्बोधित करते हैं। साथ ही वे 'राजभोगों के प्रति अपनी अनिच्छा व्यक्त करते हैं तथा आर्त अजानों के प्रति प्रेम व्यक्त करते हैं। वे छुपकर जाने को अपनी दुर्बलता मानते हैं परन्तु कहते हैं कि उसका परिणाम श्रेष्ठ ही हुआ क्योंकि वे अमृत की खोज करने में सफल रहे। वे अपनी निर्दयता हेतु यशोधरा से क्षमा मांगते हैं तथा कहते हैं कि आज वे मैत्री करुण भावना से ओत प्रोत शुद्ध बुद्ध हैं।

प्रश्न 2. गीत के आधार पर बुद्ध देव का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर--बुद्ध देव गीत को पढने पर बुद्धदेव के चरित्र की स्पष्ट झलक हमारे सामने उपस्थित होती है। बुद्धदेव बुद्धत्व प्राप्त करने के बाद भोग वासनाओं के प्रति निर्लिप्त हो चुके हैं। उनके हृदय में आर्त एवं अनजान लोगों के लिए स्थान है वे प्रेम के पक्षपाती हैं। वे अपनी दुर्बलता को मानने को तैयार है तथा निर्दयता पूर्ण व्यवहार के लिए यशोधरा में क्षमा भी मांगने को तत्पर हैं। मैत्री एवं करुणा से उनका हृदय परिपूर्ण है।

प्रश्न 3. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए--

उत्तर--"राजभवन के भोगों में था, दुर्लभ यह जलपान।
किया राम ने गुह शबरी में जिसका स्वाद बखान॥"

भाव--उक्त पंक्तियों में प्रेम के महत्व को प्रदर्शित किया है। गुह-शबरी के बेर भगवान राम को प्रिय एवं स्वादिष्ट लगे क्योंकि उनमें शबरी की प्रेम भावना व्याप्त थी। राजभवन के भोगों में वैसा स्वाद नहीं मिल सकता था उनमें प्रेम त्याग आदि की की गंध तक नहीं थी।

(ii) "माना दुर्बलता ही थी गौतम छिपकर गया निदान।"

भाव—इस पंक्ति में गौतम के उस कृत्य को जिसमें कि वह रात्रि में चुपचाप निकल गया था—एक दुर्बलता बताया गया है परन्तु उस दुर्बलता के पीछे जिस लक्ष्य की प्राप्ति हुई उसे देखते हुए दुर्बलता पर विचार नहीं किया जाना चाहिये।

प्रश्न 4 "मानिनि मान तजो लो, रही तुम्हारी आन।"
यशोधरा मानिनि क्यों है ?

उत्तर—(घ) क्योंकि वह सम्मान को अधिक महत्व देती है।

प्रश्न 5. 'किन्तु शुभे परिणाम भला हो हुआ सुधा-सन्धान।"
'सुधा-सन्धान' से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर—(क) अमृत की खोज।

प्रश्न 6. "क्षमा करो सिद्धार्थ शाक्य की निर्दयता प्रिय जान।"
किस निर्दयता के कारण वे यशोधरा से क्षमा प्रार्थी हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गौतम ज्ञान प्राप्ति के लक्ष्य से अपने महलों को रात्रि में चुपचाप छोड़कर निकले थे। उस समय यशोधरा महलों में सो रही थी। उन्होंने उससे पूछा तक नहीं था। अपने हृदय को कठोर बनाकर चुपचाप निकल गये थे। इसी निर्दयता के कारण वे यशोधरा से क्षमा प्रार्थी हैं।

प्रश्न 7. गीत के आधार पर बुद्धत्व के गुणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—गीत में बुद्धत्व के निम्नलिखित गुण व्यक्त हुए है—

प्रेम, दया, मैत्री, करुणा, क्षमा, भोग वासनाओं के प्रति उपेक्षा।

प्रश्न 8. निम्नांकित शब्दों का राजस्थानी रूप लिखिये—

उत्तर—(क) भिक्षा=भीख। (ख) अन्नान=अनजाण। (ग) बखान=बखाण। (घ) दुर्बल=दूबला। (च) क्षमा=छमा।

प्रश्न 9 गुह और शबरी की अन्तर्कथा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर नोट पाठ्य पुस्तक के परिशिष्ट में देखें।

१०. जयशंकर प्रसाद

ईर्ष्या—

"मैंने तो एक..........................मुख साभिमान ?"

कठिन शब्दार्थ--कुटीर–गृह । अधीर-बेचैन । पुआलों-गेहूं के तिनके । छाजल-छत ।

अर्थ--श्रद्धा ने मनु की अपना कुटीर देखने के लिए निवेदन किया, निवेदन के साथ ही मनु को हाथ पकड़ कर अधीर भाव से वह उसे वहां ले गई । वहां पर गुफा के पास में गेहूं के तिनकों की छोटी सी छत सी बनी हुई थी वहां पूर्णतया शांति थी कोमल बेलों की डालियां परस्पर मिलकर उसे सघन कुंज सा बना रही थी । मनु अपनी गृह लक्ष्मी के उस नवीन गृह-निर्माण को आश्चर्य की मुद्रा में देख रहे थे परन्तु उसे देखकर मनु के मन में ईर्ष्या भाव जागृत हो चुका था, अत; उन्हें वह अच्छा प्रतीत नहीं हुआ । उनके मन में प्रश्न उठा--यह सब क्यों किया जा रहा है ? यहां कौन बड़ गर्व के साथ सुख का उपभोग करेगा ?

चप थ पर..........................मकरन्द घोल ।।

कठिन शब्दार्थ--नीड़ घौंसला । कलरव=मधुर ध्वनि । आकुल= लालायित । निर्जनता=सूनापन । पैठ=प्रवेश करके । आगन्तुक=नवजात शिशु । निर्वसन=नग्न, बिना वस्त्र पहने । मग्न=लीन । मलयज=सुगन्धपूर्ण पवन । मसृण=चिकने । स्मिति=हंसी । प्रवाल-कोमल पत्ते ।

अर्थ-मनु श्रद्धा के उस अदभुत कुटीर को चुपचाप देख रहे थे और उनके मन में द्वन्द्व चल रहा था, परन्तु उनको चुप देखकर श्रद्धा ही कहने लगी—देखो, अब अपने घोंसला तैयार हो गया, परन्तु अभी तक इसमें मधुर ध्वनि करने वाले बच्चों की भीड जमा नहीं हुई है अर्थात् अभी तक हमें सन्तान प्राप्त नहीं हुई है ।

श्रद्धा मनु से कहती है--जब तुम शिकार खेलने के लिए जंगल में अधिक दूर निकल जाते हो, तब मैं यहा अकेली रह जाती हूं और इस निर्जनता में अकेले मेरा मन नहीं लगता । उस समय मैं तकली और ऊन लेकर अपनी इस नीरव कुटिया में आकर बैठ जाती हु और यहां आकर तकली पर ऊन कातती रहती हूं ।

श्रद्धा कहती है कि मैं यहां इस तरह गाती रहतीहुं – हे तकली ! तेरी अनुकम्पा से अब मेरा वह नवजात शिशु इस गुफा में पशुओं की तरह वस्त्रहीन

होकर तंगा न रह सकेगा। मैं उसके सभी अभावों का दूर कर दूंगी' जिससे सारे अभावों का कुछ ज्ञान ही हो सकेगा और वह किसी भांति अनुभवहीन एवं मूर्ख की तरह जीवन व्यतीत न कर सकेगा !

वह मेरे समीप इस प्रकार आयेगा, जिस तरह वसन्त ऋतु में दक्षिण का शीतल मंद सुगन्धित पवन आता है उस समय वह मुझे देखते ही हंसी करेगा और उसके अधरों पर छाई हुई माधुर्य पूर्ण हंसी इस कुटिया में इस तरह फैल जाया करेगी, जिस तरह एक सुन्दर लता के छा जाने पर उसके कोमल-कोमल पत्ते चारों ओर फैल जाते हैं।

श्रद्धा मनु से कहती है—जब मेरा वह शिशु अपनी जिव्हा से मधुर वाणी बोलेगा, तब उसे सुनते ही मेरी व्यथा और वेदनायें दूर सो जायेंगी और मुझे ऐसा अनुभव होगा मानो मेरे घावों पर वह फूलों के रस में पराग घोलकर उस शीतल एवं सुगन्धित जल को छिड़क रहा हो।

तुम फूल उठोगी..........बन एक तत्व।

कठिन शब्दार्थ लतिका=बेल। कम्पित कर=सिहरन पैदा करते हुये। कस्तूरी कुरंग=नाभि वाला मृग। ममत्व=प्यार।

अर्थ श्रद्धा की प्रेम एवं वात्सल्य भरी हुई बातें सुनकर अत्यन्त क्षुभित होकर मनु कहने लगे—हे श्रद्धे! ठीक है, तुम तो शिशु पाकर एक लता के समान प्रफुल्लित हो उठोगी और जैसे फूलों की सुगन्धी की लहरें लता के अन्दर कम्पन पैदा करती हुई उसे आनन्द विभोर बनाये रखती हैं, वैसे ही सिरहन का सा अनुभव करती हुई आनन्द विभोर हो जाओगी। परन्तु मैं उस सुख के लिए इस तरह भटकता रहूंगा, जिस तरह कस्तूरी का मृग कस्तूरी को अपनी नाभि में रहने पर, भी उसकी गंध को खोजता हुआ सारे वन में ढूढ़ता फिरता है।

मनु कहते हैं श्रद्धे। मैं इस अतिरिक्त वेदना को सहन नहीं कर सकता, जो तुम्हारी उपेक्षा के कारण मेरे हृदय में पैदा हो रही है। मै नहीं चाहता कि तुम्हारा प्रेम किसी और को प्राप्त हो। उस प्रेम पर एक मात्र मेरा अधिकार है, और वह प्रेम केवल मुझे ही प्राप्त होना चाहिए। मेरी इच्छा तो यह है कि मैं इस पंच भौतिक जगत में सदैव अकेला ही तुम्हारे साथ सुख पूर्वक रमण करता हुआ जीवन व्यतीत करु और मेरे उस सुखमय

जीवन में कोई भी आकर बाधा उत्पन्न न करे।

लो चलो आज.......रहो अधीर श्रांत ।।

कठिन शब्दार्थ--संचित=एकत्रित। संवेदन=भार-पुंज' अभावजन्य सुखानुभूति के भार का समूह। कांटे मिलें=कठिनाइयां प्राप्त हों। ज्वलन शील ईर्ष्या की आग से जलता हुआ। निर्मोही निष्ठुर। अधीर=बेचैन। श्रांत =थकी हुई।

अर्थ- मनु कहते हैं--श्रद्धे! आजतक मेरे जीवन में जितने अभाव रहे हैं। और उन अभावों की अनुभूतियों का जितना भी भार मेरे हृदय में संचित है, आज उस समस्त भार को यहीं छोड़कर तथा अब मैं पूर्णतया स्वतन्त्र होकर यहां से दूर जा रहा हूं। अब भले ही मुझे जीवन में कष्ट क्यों न मिलें, फिर भी अपने को धन्य समझूंगा। ये फूलों की कुंज और कुटीर तुम्हें ही सुख प्रदान करें इनसे मेरा अब कोई सम्बन्ध नहीं।

श्रद्धा से इतना कहने के उपरांत मनु वहां फिर एक क्षण भी नहीं रुके और ईर्ष्या की तीव्र आग से जलता हुआ हृदय लेकर वहां के तुरन्त चल दिए। अब वह प्रान्त बिल्कुल शून्य हो गया था और वहां खड़ी-खड़ी श्रद्धा अत्यन्त विह्वल एवं थकी हुई सी होकर यह पुकार रही थी। 'अरे निष्ठुर! थोड़ी देर रुक कर मेरी बात तो सुन ले।' परन्तु मनु ने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा और बराबर आगे बढ़ते गये।

रहस्यवादी गीत—

,मेरी आंखों..........स्थिति का चित्र बना जा रे।

कठिन शब्दार्थ-स्पन्दन=धड़कन। अभिनन्दन=स्वागत। लेखा= क्रिया।

प्रसंग—यह रहस्यवादी गीत है। इसमें रहस्यवाद के द्वितीय सोपान की सत्ता को पहचानकर उसे पाने की व्याकुलता का वर्णन है।

अर्थ—असह वियोग में सकरुण हो साधक कहता है-हे प्रियतम! आ कर मेरी आंखों में समा जा, जिससे मेरा हृदय संगीत मय हो जाए। क्योंकि मुझे मालूम है कि प्रियतम से एकाकार होने पर ही सृष्टि का कण-कण नव स्थिति से भर जायेगा, मन में मलय समीर सा सुगन्ध संचार होगा और हृदय

में कोमल मधुर और माननीय भावनाओं का उदय होगा। इसलिए वह इस प्रकार के जीवन का गीत सुनाना चाहता है।

साधक समझता है कि प्रियतम से एकत्व स्थापित हो जाने पर ही उसके अधरों पर मधुर मुस्कान की रेखा अंकित हो सकती है और वह ऐसी मधुमति भूमिका में पहुँच सकता है जब सम्पूर्ण विश्व उसे आश्चर्य चकित होकर देखेगा। इसलिए वह कहता है। 'मेरे अधर पर जैसी मुस्कान खिले कि वह विश्व देखता ही रह जाये।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. मनु किस कारण ईर्ष्या के वशीभूत हो गये थे ?

उत्तर-- मनु श्रद्धा के सुख को देखकर ईर्ष्या के वशीभूत हो गये थे।

प्रश्न 2. 'चल कर देखो मेरी कुटीर' ये शब्द कहकर श्रद्धा मनु की हाथ पकड़कर अधीरता से कहां ले चली ? (सीमा 20 शब्द

उतर -यह कहकर श्रद्धा मनु का हाथ पकड़कर अपनी कुटिया की ओर बड़ी उत्सुकता के साथ मनु को लेकर चल दी

प्रश्न 3. श्रद्धा को अपनी नीड़ में कौनसी कमी खल रही थी ?

उत्तर--श्रद्धा को अपनी नीड़ में मधुर ध्वनि करने वाले बच्चों की भीड़ की कमी खल रही थी।

प्रश्न 4. मनु की अनुपस्थिति में श्रद्धा अपना समय किस प्रकार काटती है ?

उत्तर -- मनु क. अनुपस्थिति में श्रद्धा तकली लेकर उससे ऊन काता करती थी - तथा तकली घूमने की मधुर ध्वनि में लीन होकर अपना समय बिताती थी।

प्रश्न 5. 'अपनी मीठी रसना से वह, बोलेगा ऐसे मधुर बोल "श्रद्धा मधुर बोलों की क्या कल्पना कर रही थी ?

उत्तर– श्रद्धा अपने होने वाले नवजात शिशु के सम्बन्ध में कल्पना करती हुई मनु से कह रही थी कि वह शिशु अपनी जिव्हा से मधुर वाणी जब बोलेगी तब सुनते ही मेरी व्यथा दूर हो जायेगी, तथा उस समय ऐसा अनुभव

होगा मानो मेरे घावों पर वह फूलों के रस में पराग घोलकर उस सुगन्धि एवं शीतल जल को छिड़क रहा हो ।

प्रश्न 6. 'मेरी पीड़ा पर छिड़केगा' जो कुसुम धूलि मकरन्द घोल । श्रद्धा अपनी पीड़ा का अन्त कैसे मानती है ?

उत्तर –श्रद्धा अपनी पीड़ा का अन्त अपने भावी नवजात शिशु के मधु शब्दों को सुनकर उससे मिलने वाले आनन्द की प्राप्ति के परिणाम स्वरू मानती है । वह मानती है कि उस बालक के बोल उसके घावों के लिए मक रन्द घोल घोल तुल्य होंगे ।

प्रश्न 7. रेखांकित शब्दों का आशय समझाइए—

उत्तर—(क) पंचभूत की रचना में क्षिति, जल पावक, गगन औ समीर नामक पंच तत्वों से बनी हुई यह सृष्टि ।

(ख) ज्वलनशील अन्तर – असूयाभाव से उत्पन्न वेदना युक्त हृदय ।

उत्तर—'मुझ को काँटे ही मिले धन्य ।'

प्रश्न 8. 'मुझ को कांटे ही मिले धन्य ।' कांटे से कवि का क्य आशय है ?

उत्तर—(घ) विपत्तियां ।

प्रश्न 9. कह, ज्वलनशील अन्तर लेकर

मनु चले गये, था शून्य प्रांत''

उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर मनु का जो चरित्र उभरता है ।

उत्तर—(घ) ईर्ष्यालु एवं स्वार्थी थे ।

प्रश्न 10. रुक जा सुनले ओ निर्मोही वह कहती रही अर्ध श्रांत ।'

उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर श्रद्धा की मनः स्थिति का विश्लेषण कीजिए ।

उत्तर—उक्त पंक्तियों से श्रद्धा के हृदय की व्यथा टीस एवं अन्तर्द अभिव्यक्त हुआ है । साथ ही उसके हृदय की ग्लानि एवं विह्वलता भी इ पंक्तियों में व्यक्त हुई है ।

प्रश्न 11. यदि श्रद्धा और मनु के वार्तालाप छिपकर सुन र होते तो आपके हृदय में श्रद्धा के चरित्र के प्रति कैसे विचार उत्पन्न होते ?

उत्तर—यदि हम श्रद्धा एवं मनु के वार्तालाप को सुन रहे होते तो हमें श्रद्धा के प्रति सहानुभूति एवं दया के विचार उत्पन्न होते। हम मन ही मन उसकी विवशता एवं उसके साथ जो व्यवहार मनु द्वारा किया गया उस पर अफसोस करते हुये सोचते बेचारी नारी के साथ निष्ठुर पुरुष द्वारा अच्छा व्यवहार नहीं किया गया।'

प्रश्न 12. 'तुम फूल उठोगी सौरभ तरंग'

उपर्युक्त पंक्ति के कलात्मक सौन्दर्य एवं अलंकार को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—उपर्युक्त पंक्ति में आलंकारिक वर्णन है। मनु कहते हैं कि हे श्रद्धे! तुम शिशु पाकर लता के समान प्रफुल्लित हो उठोगी। जैसे फूलों की सुगन्धित लहरें लता के अन्दर कम्पन पैदा करती हुई उसे आनन्द विभोर बनाये रखती हैं, वैसे ही तुम भी शिशु से प्राप्त सुख की लहरों में मग्न होकर आनन्द विभोर हो जाओगी।

'सुख सौरभ तरंग' में रूपक अलंकार है। 'लतिका सी' में उपमा अलंकार है।

प्रश्न 13. मनु के चले जाने पर श्रद्धा की दिनचर्या क्या रही होगी?

कल्पना के आधार पर 50 शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर—मनु के चले जाने पर श्रद्धा का जीवन परिवर्तित हो गया होगा। वह उसके बाद विरहिणी के रूप में प्रोषित पति का नायिका के रूप में अपना जीवन व्यतीत करने लग गई होगी। उसकी दिनचर्या वही रही होगी जो एक विरहिणी स्त्री की अपने पति के वियोग में रहती है।

प्रश्न 14. मनु में ईर्ष्या उपयुक्त थी या श्रद्धा में ममत्व 150 शब्दों में लिखिए।

उत्तर ईर्ष्या एवं ममत्व वस्तुतः दोनों स्वाभाविक भाव हैं जो कि प्राणियों में उत्पन्न हो जाते हैं। माता के हृदय में ममत्व भाव जागृत होना अस्वाभिक नहीं कहा जायेगा उसी प्रकार दूसरे के सुख को देखकर ईर्ष्या भाव का जागृत होना भी एक स्वाभविक बात है। परन्तु मनु चूंकि उसके पति थे अतः उस रूप में ईर्ष्या भाव उत्पन्न होना उचित प्रतीत नहीं होता

वे यदि चाहते तो अपने पर नियन्त्रण भी कर सकते थे परन्तु उन्हें सांसारिक जीवन अभीष्ट नहीं था। वे एकान्त में शांत जीवन व्यतीत करना चाहते थे।

रहस्यवादी गीत--

प्रश्न--1.'रहस्यवादी गीत' की निम्न पंक्तियों के रेखांकित शब्दों का आशय स्पष्ट कीजिए -

उत्तर -'बनकर प्राण' - साधक को एक क्षण का वियोग असहनीय है अतः वह प्रियतम को अपने हृदय में बसा लेना चाहता है।

प्रियतम से साकार होना चाहता है।

प्रश्न 2. 'यह जीवन गीत सुना जा रे' कवि ने जीवन के कौनसे गीत को सुनने के लिए किससे कहा है ?

उत्तर-- साधक ने प्रेम गीत सुनने के लिए अपने प्रियतम से विनती की है। क्योंकि वह प्रियतम के वियोग में व्याकुल है। वह प्रियतम से उस गीत को सुनना चाहता है जिससे उसके हृदय में मलय समीर सा सुगन्ध संचार हो तथा मानवीय भावनाओं का उदय हो।

प्रश्न 3. 'मन में मलयानिल चन्दन हो' -मलयानिल चन्दन से कवि का क्य तात्पर्य है ?

उत्तर--'मलयानिल चन्दन' से कवि का तात्पर्य है कि प्रियतम का एकाकार होने के पश्चात् उसके हृदय में मलय समीर सा सुगन्ध संचार होगा अर्थात् उसका मन श्रेष्ठ भानाओं से युक्त होग। उसमें किसी प्रकार का कालुष्य नहीं रहेगा।

प्रश्न 4. 'करुणा का नव अभिनन्दन हो' 'नवअभिनन्दन' के भाव विशेष को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'नव अभिनन्दन' शब्दों का भाव यह है कि हृदय में इसके पूर्व ऐसे भाव विद्यमान नहीं थे, अब एकाकार होने पर करुणा भाव उत्पन्न हुए अतः यह एक रूप में उनका नवीन अभिनन्दन होगा। मानवीय भावनाओं का नये सिरे से उदय होगा।

प्रश्न 5. गीत में कवि प्रसाद ने कैसे चित्र को बनाने के लिए कहा है ?

उत्तर -साधक ऐसी मधुमति भूमिका में पहुंचना चाहता है जहां

पहुंचने पर सम्पूर्ण विश्व उसे आश्चर्य चकित देखें। प्रसाद ने कहा है कि 'मेरे अधर पर ऐसी मुस्कान खिले कि यह विश्व देखता ही रह जावे ' यह स्थिति एकात्मकता एवं तादात्म्य स्थापित होने के पश्चात् संभव होती ।

प्रश्न 5. 'रहस्यवादी गीत' में प्रसाद जी के मूल दृष्टि कोण को स्पष्ट कीजिए ।

उतर –'रहस्यवादी गीत' प्रसाद जी विरचित 'लहर' रचना से लिया गया है । यह गीत पूर्णरूपेण रहस्यवादी है। 'रहस्यवादी' मूलतः अव्यक्त को व्यक्त करने और आत्मा परमात्मा में एकत्व स्थापित करने का प्रयत्न है। रहस्यादी उस विराट की अनन्त सौन्दर्य राशि से अभिभूत होता है। आलोच्य गीत में रहस्यवाद के द्वितीय सोपान ब्रह्मकी सत्ता को पहचानकर उसे पाने की व्याकुलता का वर्णन है। कवि ब्रह्म के साथ तायात्म्य स्थापित करने को लालायित है।

प्रश्न 7. रहस्यवादी गीत का केन्द्रीय भाव 30 शब्दों में लिखिए।

उत्तर – 'रहस्यवादी गीत' का केन्द्रीय भाव यह है कि साधक प्रियतम से मिलने को आतुर है। उसे एक क्षण का विछोह भी असहनीय । अतः वह प्रियतम से साक्षात्कार करना चाहता है। प्रियतम से एकाकार हुये बिना वह जीवन को नीरस एवं जगत को निस्सार मानता है। इसलिए वह सकरुण ही कहता है -

"मेरी आंखों की पुतली में
तू बनकर प्राण समा जा रे।"

प्रश्न 8. 'तू बनकर प्राण समा जा रे' –उक्त पंक्ति में 'तू' का भावार्थ है–

उत्तर - (घ) स्वयं में प्रेमी को समा लेने की कामना

11. सुमित्रानन्दन पन्त

ज्योतिर्मय जीवन–

जग के उर्वर........................सुख यौवन ।।

कठिन शब्दार्थ -ज्योतिर्मय–प्रकाशमय। तृण=घास, तिनका। अव्यय अक्षय, न घटने वाला। उर्वर–उपजाऊ।

अर्थ –कविवर पन्त कामना करता है कि प्रकाशयुक्त जीवन की संसा के उपजाऊ आंगन में वर्षा हो अर्थात सम्पूर्ण संसार में अंधकार समाप्त हो तथा विस्तार का प्रकाश हो। छोटे से छोटे तिनके एवं वृक्ष पर है चिर अव्यय ! हे चिर नूतन ! ज्योतिमय जीवन तुम बरसो। ज्योतिर्मय जीवन को कवि ने कभी न घटने वाला अर्थात सदैव एक ही रूप में रहने वाला एवं चिर नूतन कहकर सम्बोधित किया है।

कवि कहता है कि हे प्रकाश युक्त जीवन ! तुम पुष्पों में मधु बनकर बरसो अर्थात् पुष्पों में मधु प्रचुर मात्रा में सदैव भरा रहे। प्राणों में कभी न मृत होने वाला प्रणय धन प्रेम रूपी धन होकर बरसो। भाव यह है कि सभी प्राणियों का हृदय सदैव प्रेम से ओत प्रोत रहे। अधर रूपी पलकों पर स्मित-स्वप्न के रूप में बरसो अर्थात् समस्त प्राणियों के ओठों पर सदैव मुस्कान बनी रहे। उनके हृदय एवं अंगों में सुख का यौवन व्याप्त रहे अर्थात् वे सदैव आनन्दित रहें।

छू छू जग ....संसृति के पावन ॥

कठिन शब्दार्थ- मरण–मृत्यु । सुषमा शोभा । संसृति–संसार ।

अर्थ– हे ज्योतिर्मय जीवन ! संसार के मृत रज कणों को स्पर्श करके उन्हें तृण एवं तरु में चेतन कर दो अर्थात् मृत में चेतना का संचार करो प्राणों का आलिंगन प्रदान कर तुम संसार के मृष्मरण को बांध दो अर्थात् मृत्यु पर विजय प्राप्त करो। लोगों की परेशानियों को दूर करो जिससे वे मरने को तत्पर न हों तथा जीने की कामना करें।

कवि अन्त तक में कहता है कि संसार रूपी जीवन के धन तुम सुख बनकर संसार में बरसो, शोभा बनकर संसार में बरसो। हे संसार के पावन ! हर दिशा में तुम प्रतिक्षण बरसो। कवि की कामना यह है कि ज्योतिर्मय जीवन की वर्षा उसी प्रकार हो जैसे श्रावण में बादल बरसते हैं।

गाता खग –

गाता खग ....आंखे नीरव ॥

कठिन शब्दार्थ– अपलक–बिना पलक झुकाए। तिरावलि–तारों की पंक्ति। अवलोक-देखकर। नीरव-शब्द रहित।

अर्थ-कवि श्री पन्त का कथन है कि प्रातः काल पक्षी उठकर जो गीत गाता है, उसका भाव यह है कि संसार का जीवन सुन्दर एवं सुखमय है

वह पक्षी जब संध्या के समय तट पर गीत गाता है तो उसका भाव है–ससार का जीवन मंगलमय एवं मधुमय है, मिठास से भरा हुआ है।

बिना पलक झकाये तारों की पंक्ति जो कि आकाश में शोभायमान है, अपने नेत्रों का अनुभव कहती है। वह कहती है कि संसार में आंसू भरी आंखे देखकर नीरव आखे भी आंसू से भर आती हैं अर्थात् दूसरे को दुःखी देखकर मानव दुःखी हो उठता है।

हंसमुख प्रसून······ ············आशय सारा ।।

कठिन शब्दार्थ प्रसून=पुष्प । उर=हृदय । सौरभ=सुगन्धि । कूल–किनारा। विलोक–देखना। उमंग लहर। विलीन–समा जाना।

अर्थ - खिले हुए प्रसूनों के माध्यम से कवि प्रेरणा देता हुआ कहता है कि हंसमुख रह यह शिक्षा देते हैं कि इस संसार में यदि पल भर भी हंस सको तो हंस लो तथा हंसी के साथ अपने हृदय की सुगन्धि से सम्पूर्ण संसार का आंगन भर दो! अर्थात् अपनी हंसी को सारे संसार में फैला दो।

समुद्र की लहरें बार-बार उठकर यह प्रेरणा देती है कि उन्हें कभी भी किनारा दिखाई नहीं देता है परन्तु वे किनारा प्राप्त करने की उमंग में बहती हुई सदैव आगे बढती जाती है। भाव यह है कि लहरें मानव को आगे बढते रहने की प्रेरणा प्रदान करती हैं।

हिलोरें कांप-कांप कर रह जाती हैं परन्तु उन्हें किनारा प्राप्त नहीं होता परन्तु पानी का बुलबुला चुपचाप सागर में विलीन हो जाता है तथा सम्पूर्ण आशय को प्राप्त कर लेता है समझ लेता है।

सुख-दुख -

अर्थ कवि पन्त सुख दुख को समान रूप से सब में विभाजित करने की कामना से कहता है कि वह न तो अधिक सुख की इच्छा रखता है और न ही अत्यधिक सुख चाहता है। वह चाहता है कि जीवन में सुख एवं दुख एक के बाद एक क्रमशः आते रहें। ऐसे ही वातावरण में जीवन का विकास हो।

कवि की कामना है कि सुख एवं दुख के मधुर मिलन से उसका जीवन परिपूर्ण हो। जीवन आकाश में कभी चन्द्रमा ओझल हो अर्थात् सुख का अभाव हो तथा फिर एक चन्द्रमा के प्रकाश से बादल ओझल हो जाये अर्थात् अत्यधिक सुख से युक्त जीवन हो।

यह संसार वस्तुत ; दोनों ही प्रकार की अति से पीड़ित है अत्यधिक दुख एवं अत्यधिक सुख दोनों ही बातों से यह जग दुखी है। अतः कवि की कामना है कि मनुष्यों के संसार में सुख एवं दुख एक दूसरे से विभाजित हो जावे। भाव यह हैं कि संसार के प्राणियों का जीवन सुख दुखमय बने। अति किसी का भी न हो।

कवि पन्त की मान्यता है कि निरन्तर दुख एवं निरन्तर सुख दोनों ही पीड़ादायक हैं। उनकी कामना है कि सुख दुख रूपी रात एवं दिन में संसार के प्राणियों का जीवन सोता रहे।

संध्या एव उषा वस्तुतः विरह एवं मिलन के प्रतीक हैं, दोनों का आलिंगन एक प्रकार से विरह एवं मिलन आलिंगन है। कवि कामना करता है कि चिरकाल तक मानव जीवन का आनन हास एवं अश्रुमय रहे अर्थात् सुख एवं दुख जीवन में सदैव बना रहे।

अभ्यास के प्रश्न

ज्योतिर्मय जीवन

प्रश्न 1. प्रस्तुत कविता के भाव को सरल शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--प्रस्तुत कविता में कवि ने संसार के प्राणियों की सुखद जीवन की कामना की गई है। कवि की कामना है कि संसार में अन्धकार समाप्त हो जाये तथा प्रकृति एवं मानव को सुखी एवं आनन्दित करने के लिए ज्योतिर्मय जीवन की वर्षा होवे। वर्षा भी हल्की नहीं अपितु श्रावण में जिस प्रकार उमड़ घुमड़ कर बादल बरसते हैं, उस रूप में ज्योतिर्मय जीवन की वर्षा हो।

प्रश्न 2 निम्नलिखित पँक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिये

उत्तर -- अर्थभाग को देखें

प्रश्न 3 'बरसो ज्योतिर्मय जीवन' ज्योतिर्मय जीवन बरसने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर- (ख) सात्विक भावों का समाज में विस्तार होना ।

प्रश्न 4. 'बरसो जग जीवन के घन' किसका सम्बोधन है ?

उत्तर- (ग) सात्विक भावों का

प्रश्न 5 छायावादी कोमल कान्त शब्दावली के दस वाक्य छांटिए

उत्तर--जग, उर्वर, लघु, मधु, अमरप्रणय-भव, स्मित स्वप्न, मृत रज-कण, सुख, सुखमा, पल-पल ।

गाता खग--

प्रश्न 1 प्रस्तुत गीत में खग क्या गाता है ? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर--प्रस्तुत गीत में खग प्रातः उठकर सुन्दर एवं सुखमय जीवन के गीत गाता है तो संध्या के समय वह मगल एवं मधुमय जीवन के गीत गाता है ।

प्रश्न 2 हंसमुख प्रसून क्या सिखलाते हैं ? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर--हंसमुख प्रसून संसार के प्राणियों को हंसते रहने की प्रेरणा प्रदान करता है । वे कहते हैं कि अपने हृदय की सुगन्ध से संसार के आंगन को परिपूर्ण करो । ' अर्थात् सम्पूर्ण संसार में अपनी मृदु हंसी को फैलाओ ।

प्रश्न 3 निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिये -

उत्तर—भाव अर्थ भाग में देखें ।

प्रश्न 4. मंगल मधुमय जीवन से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 5. 'अलोक आख-आंसू की ।

भर आती आखें नीरव ।'

आंखे क्यों भर आती हैं ?

उत्तर--(ग) दूसरे की करुणाजनक स्थिति को देखकर ।

प्रश्न 6 प्रस्तुत कविता में प्रकृति के जो उपकरण आये हैं, उनमें से 5 का उल्लेख कीजिये ।

उत्तर--प्रकृति के उपकरण --खग, संध्यातट, तारावलि,प्रसून, लहरे, हिलोर ।

सुख - दु:ख--

प्रश्न 1. प्रस्तुत गीत में मूल भाव क्या है ? स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर--प्रस्तुत गीत में मूल भाव यह है कि जीवन सुख दु:खमय है । सुख एवं दुख दोनों जीवन में एक दूसरे के पूरक हैं । दोनों में से किसी भी एक का अधिक होना उत्पीड़न करता है । अतः कवि को दोनों को समान रूप से सब में विभाजित करने की कामना करता है।

प्रश्न 2. सुख दु:ख के मधुर मिलन से जीवन किस प्रकार परिपूर्ण हो सकता है ? स्पष्ट कीजिये । (सीमा 40 शब्द)

उत्तर - सुख दु:ख के मधुर मिलन से जीवन पूर्णरूपेण सफल हो सकता है क्योंकि किसी भी बात की अधिकता उचित प्रतीत नहीं होती तथा एक जैसी स्थिति सदैव अच्छी भी नहीं लगती । सुख भी वही अच्छा लगता है जो एक दु:ख के बाद प्राप्त हो । जिसने कभी दुख का अनुभव नहीं किया है, वह सुख के महत्व को नहीं समझ सकता है अतः कवि का यह कहना सत्य है कि सुख दुख के मधुर मिलन से जीवन परिपूर्ण होता है ।

प्रश्न 3. भाव स्पष्ट कीजिये –

उत्तर—अर्थ भाग देखे ।

प्रश्न 4. 'चिर ह्रास अश्रुमय आनन' मानव जीवन हास अश्रुमय क्यों है ?

उत्तर--(ग) क्योंकि मानव जीवन में सुख और दुख दोनों हैं ।

प्रश्न 5. मानव जग में बंट जावे

दु:ख सु:ख से और सुख दुख दोनों से ।

कवि मानव जग में सुख दुख को बांटने की किस आधार पर कल्पना करता है ?

उत्तर--(क) दया के आधार पर

प्रश्न 6. सुख दुख के दर्शन की प्रकृति के किन उपकरणों के माध्यम से कवि ने अभिव्यक्त किया है ? उदाहरण दीजिए।

उत्तर—सुख दुख के दर्शन को कवि ने क्रमशः शीश एवं धन निशा-दिवा सांझ- उषा आदि उपकरणों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उदाहरणार्थ कवि ने लिखा है कि बादल में चन्द्रमा ओझल हो जाता है तो कभी चन्द्रमा अपने प्रकाश से घन को ओझल बना देता है। इस प्रकार ही सुख एवं दुःख दोनों ही जीवन में एक दूसरे के पूरक हैं।

12. महादेवी वर्मा

'पन्थ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला'

पंथ होने दो………होगी कहानी।

कठिन शब्दार्थ— अमा=अमावस्या। आर्द्र=गीला। शूल=पीड़ा।

प्रसंग—महादेवी वर्मा की आत्मा किसी परोक्ष प्रियतम से मिलने हेतु आतुर है। वेदना असह्य होते हुए भी उन्हें अधिक प्रिय है। यद्यपि उनके लिए मार्ग अपरिचित है परन्तु वे किसी का अवलम्बन नहीं चाहती हैं। वे विश्वास भरे हृदय को लेकर आगे बढ़ रही हैं—

अर्थ— प्रियतम के समीप पहुंचने तक का मार्ग भले ही अपरिचित रहे तथा मेरे प्राण उस मार्ग पर अकेले ही रहें उससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है। कवयित्री के हृदय में विश्वास एवं आत्मा में बल है। भले ही अंधकार को यह छाया अमा बनाकर घेर ले। आज कज्जल मिश्रित अश्रुओं की भले ही वर्षा होने लग जाये फिर भी मेरे नेत्र सूखे ही रहेंगे, नेत्रों में उदासीनता रहेगी एवं पलकें रुक्ष ही रहेंगी सैकड़ों बिजलियों में मेरी दीप रूपी आत्मा खेलती रहेगी अर्थात् हर परिस्थिति में कवयित्री आगे बढ़ती रहेगी।

कवयित्री कहती है कि वे किसी और के ही चरण होंगे जो हार मान जायें। सम्पूर्ण संकल्पों की एक मात्र पीड़ा के कारण छोड़कर जाने वाले और ही लोग होंगे, मैं ऐसा करने वाली नहीं हूं। दुःख के व्रत को धारणकरने वाले एवं निर्माण के लिये उन्मत्त मेरे पद अमरता को नापने वाले हैं अर्थात् अमरत्व

तक पहुंचने वाले हैं। वे मेरे चरण अन्धकार में स्वर्णिम वेला की सृष्टि करेंगे। इस प्रकार एक दूसरी ही कहानी बनेगी।

शून्य में जिसके ...... रहने दो अकेला।

कठिन शब्दार्थ—विस्मित=आश्चर्यमय। भूभंगिमा=भौहें तिरछी करना।

अर्थ—शून्य में जिसके स्वर नहीं सुनाई देंगे तथा धूलि में जिसकी कोई निशानी दिखाई नहीं देगी। कवयित्री कहती है आज मेरे सिर पर प्रलय विस्मित हो रही है, परन्तु मैं कोई परवाह न करके लगातार मार्ग पर आगे बढ़ रही हूं। मैं उस मार्ग पर मोतियों की दुकान एवं चिनगारियों का मेला लगाती हुई चली जा रही हूं। (यहां पर मोती अश्रु के प्रतीक हैं) मेरे लिये भले ही हास रूपी मधुमास दूत भेजो! रोष में भरी भृकुटि पतझार को भले ही सहन करे। परन्तु इन सब से मेरा हृदय चंचल नहीं होगा। वेदना जल मेरे हृदय में भरा हुआ है परन्तु वह वेदना मेरे लिये दुख नहीं है, इसी में मुझे आनन्दानुभूति हो रही है। उसमें कमल विकसित हो चुके हैं। यह वस्तुतः कवयित्री के लिये परमात्मा के साथ एकाकी मिलन है, विरह में भी वस्तुतः वह अकेली नहीं है उसकी आत्मा का परमात्मा के साथ साक्षात्कार हो चुका है। विरहावस्था में भी संयोगावस्था का आनन्द महसूस हो रहा है।

मेरा जीवन

शून्य से बन जाओ.......... हे प्यारे जीवन ।7।

कठिन शब्दार्थ--कांटों में=कठिनाइयों। विच्छेद=वियोग।

अर्थ--कवियित्री महादेवी वर्मा प्रस्तुत कविता में संसार के प्राणियों को प्रेरणा देती हुई कह रही है--

हे मनुष्य! जीवन में शून्यता देखकर निराश मत हो अपितु गम्भीर बनो। त्याग की झंकार बनने का प्रयास करो अर्थात् अपने हृदय में त्याग की प्रबल भावना को स्थान दो। इस जीवन रूपी छोटे से प्याले में सम्पूर्ण संसार को डुबो डालो अर्थात् हृदय में विवेक जन्य विरक्ति को स्थान दो।

इस प्रकार के छोटे जीवन बनो जिससे कि यर मुग्ध पुष्प भी लज्जा महसूस करें।

हे मित्र ! यह सांसारिक जीवन वस्तुतः माया का देश है, जिस प्रकार माया देश में सब कुछ अस्थायी एवं क्षणिक होता है वैसे ही स्थिति इस जीवन की है। हे बन्धु! इस जीवन में सजीले फूलों का रस रंग उन्हें ही मिलता है जो विपत्तियों का मुकाबला करते हैं, कठिनाइयों को सहन करते हैं। भाव यह है कि मनुष्य जीवन में उन्हें ही सुख प्राप्त हो सकता है जो कांटों पर चलना जानते हैं अन्त में कवयित्री कहती है कि हे प्यारे जीवन! एक बात याद अवश्य रखो कि संसार में एक न एक दिन वियोग अवश्य सहन करना है क्योंकि जीवन क्षण भंगुर है।

मृत्यु से –

प्राणों के अन्तिम..........बे सुध जीवन।

कठिन शब्दार्थ--पाहुना=अतिथि। अंजन=काजल। सुरभित=सुगन्धित। वारिद=बादल। श्रांत=थका हुआ। पथिक=राहगीर।

अर्थ– कवयित्री ने मृत्यु को जीवन का अन्तिम अतिथि बताया है। वह कहती है –हे प्राणों के अन्तिम अतिथि। चांदनी से धुला हुआ, अंजन सदृश विद्युत रूपी पखों से उड़कर जिस प्रकार बादल आकाश में घिर आता है। उसी प्रकार तुम मेरे लिए बनकर आना। अर्थात् जिस प्रकार बादल विश्व वेदना को शांत कर देते हैं, उसी प्रकार मृत्यु भी जीवन की विषमता को विलुप्त करे, यह आकांक्षा है।

जिस प्रकार एक थके हुये राहगीर पर रात्रि छाया के समान आकर मुस्कराने लगती है वह उस राहगीर की बोझिल पलकों में शनैःशनैः निद्रा का मधु घुलवाती है अर्थात् उसे मदमस्त बना देती है, वैसे ही तुम भी मेरे जीवन को आकर बे सुख कर देना। भाव यह है कि मृत्यु भी जीवन के पथ से थके हुए जीव को विश्रान्ति माधुर्य तथा सरसता प्रदान करने वाला बनकर आये यही कवयित्री को अपेक्षित है।

कितने युग बीत............गिन गिन।

कठिन शब्दार्थ —निधियों=खजानें। क्रय=खरीदना। विसर्जन=समाप्त। दृग=नेत्र। अतिथि=मेहमान।

हे प्राणों के अन्तिम अतिथि। हमें अनेक प्रकार की विभूतियों के खजानों का संचय करते हुए अनेक युग समाप्त हो गये। तुम थोड़े से आंसू प्रदान कर इन सम्पूर्ण संकलित विभूतियां हमारे से खरीद लेना अब यह व्यापार समाप्त हो अर्थात हमारी लीला समाप्त हो जाये। जीवन में सुख दुखात्मक अनुभूति से जो भी संग्रह हुआ उसे समर्पित करके साधिका मृत्यु के भी रागात्मक संवेदनाओं से युक्त बनाना चाहती है।

हे मृत्यु रूपी अतिथि। तुम्हारी छत्र छाया में यह अभिमानी संसार दिन भर हंसता रहता है अर्थात् जिन्दगी भर सुख से रहता है। तुम एक मात्र इस प्रकार के अतिथि हो जिसका कि इन्तजार अगणित नेत्र अपनी आखरी सांसों में घड़ी गिन गिन कर रहे हैं। भाव यह है कि जीवन के अन्तिम लक्ष्य इस पाहुन के पथ में समस्त संसार अपनी आंखे बिछाये रहता है। यहीं आकर जीवन की गति रुक जाती है।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न । (क) "पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला"
उपर्युक्त पंक्ति में महादेवी जी का कौन भाव व्यक्त हुआ है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - उपर्युक्त पंक्ति में महादेवी का आत्म विश्वास एवं चारित्रिक दृढ़ता अभिव्यंक्त हुए हैं। कवयित्री को अपने पर पूरा विश्वास है तथा वह अपने मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु किसी प्रकार का अवलम्बन नहीं चाहती है।

(ख) "अमा" से कवयित्री का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर अमा का शाब्दिक अर्थ अमावस्या है। कवयित्री ने इस शब्द का प्रयोग अन्धकार एवं विपत्ति के अर्थ में किया है।

(ग) शूल किसका प्रतीक है ? कवयित्री के अभिप्राय को व्यक्त कीजिए ।

उत्तर — शूल' कष्ट एवं आपत्ति का प्रतीक है । कवयित्री का अभिप्राय यह है कि वे लोग दूसरे ही होंगे जो आपत्तियों को देखकर अपने संकल्प छोड़ देंगे तथा लक्ष्य से अलग हो जायेगे । वह स्वयं शूल से घबराने वाली नहीं है ।

प्रश्न 2. उन पंक्तियों को छांटिये जिनमें कवयित्री का अक्षय धैर्य एवं विश्वास व्यक्त हुआ है ?

उत्तर— (i) 'पंथ होने दो अपरिचित प्राण रहने दो अकेला ।'

(ii) "और हैं जो लौटते दे शूल को संकल्प सारे,
दुखव्रती निर्माण उन्मद
यह अमरता नापते पद..............दूसरी होगी कहानी ॥"

प्रश्न 3. महादेवी जी किसी अभाव में नहीं पली फिर भी उन्हें विरह वेदना प्रिय क्यों है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—महादेवी जी की कविता उसकी आत्मा का सौन्दर्य है । अतः उनकी कविता में अभिव्यक्त वेदनानुभूति भी आत्मा का सौन्दर्य है । महादेवी जी की विरह वेदना किसी अभाव अथवा दुख की नहीं है अपितु एक दार्शनिक विरह वेदना है । उन्होंने स्वय लिखा है 'दुख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे ससार को एक सूत्र में बांध रखने की क्षमता रखता है ।" संक्षेप में उनकी वेदना में चिन्तन प्रिय के प्रति आकुल प्रणय निवेदन का भाव निहित है जो उनकी आत्मा का सौन्दर्य है ।

प्रश्न 4. 'मृत्यु' को अंतिम 'पाहुन' क्यों कहा है ? भाव को स्पष्ट कीजिये ।

उत्तर—'मृत्यु' को अन्तिम 'पाहुन' क्यों कहा है क्योंकि संसार की प्रत्येक प्राणयुक्त इकाई का अन्तिम लक्ष्य मृत्यु ही है । रहस्यवादी काव्यधारा में मृत्यु को असीम से मिलने का एक साधन माना गया है । इसलिए प्रस्तुत गीत में श्रीमती वर्मा ने मृत्यु को जीवन का अन्तिम पाहुना का रूप देकर उसे

जीवन की विविधता से सम्बन्ध किया है। साथ ही अन्य लोगों को मृत्यु से भयभीत न होने की प्रेरणा प्रदान का है (हृदय का स्पन्दन,

प्रश्न 5 शून्य से गंभीर, त्याग की झंकार, छोटा प्याला, मेरा जीवन कविता में आये लक्ष्यार्थ प्रतीकों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--शून्य से गंभीर—शून्य से गंभीर शब्दों का प्रयोग कवयित्री ने नैराश्य भाव छोड़कर विवेक धारण करने के अर्थ में किया है। 'शून्य; यहां 'नैराश्य; का प्रतीक है तो गंभीर 'विवेक' का।

त्याग की झंकार त्याग की प्रबल भावना हृदय में उत्पन्न करने की प्रेरणा देना कवयित्री को अभिप्रेत है।

छोटा प्याला-'क्षणिक जीवन- अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग किया है। सन्तों ने 'प्याली' शब्द का प्रतीकार्थ पंचभूत शरीर भी लिया है।

प्रश्न 6. संकलित पदों में से छायावादी शैली की विशेषताओं यथा मानवीकरण, प्रतीक प्रयोग, रूपकालंकार की पंक्तियों को छाटिये।

उतर--मानवीकरण सम्बन्धी पंक्तियां

(i) 'इसी छोटे प्याले में आज, डुबो डालो सारा संसार।

(ii)-'हास का मधुदूत भेजो'

प्रतीक प्रयोग--

(i) 'घेर ले छाया अमावस'

(ii) 'शत विद्युतों में दीप खेला'

(iii) 'दे शूल को संकल्प सारे'

(iV) मोतियों की हार और चिनगारियों का एक मेला।

रुपकालंकार सम्बन्धी पंक्तियां —

(i) 'ले मिलेगा उर अचंचल
बेदना जल, स्वप्न शतदल।'

(ii) 'प्राणों के अंतिम पाहुन'

(iii) सुरभित समीर पंखो से उड़कर जो नभ में घिरआता।

प्रश्न 7. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय 30 शब्दों में स्पष्ट कीजिए—

–उत्तर-(क) घेर ले छाया अमावन इस पंक्ति का प्रयोग कवयित्री ने विपत्ति समूह से घिर जाने के अर्थ में किया है। आशय यह है कि अपरिचित पंथ पर कवयित्री को छाया अमावस्या बनकर भले ही घेर ले अर्थात् अनेक आपत्तियों से वह घिर जाय फिर भी वह बढ़ती ही रहेगी।

(ख) तिल बुझे और पलक सूखे—आशय यह है कि आर्द्र चितवन होने पर भी कवयित्री की पलकें आर्द्र नहीं होगी वे सूखी ही रहेगी। हां, उदासी अवश्य बनी रहेगी।

(ग) दुखव्रती निर्माण उन्मद यह अमरता नापते पद।

उत्तर—अर्थ भाग में देखें। वहां इसे समझा दिया गया है।

(घ) मोतियों की हाट चिनगारियों का एक मेला-मोतियों की हाट यहां आंसू की लड़ियों का प्रतीक है तथा चिनगारियां आंखों में निकलने वाली ज्योतिर्मय किरणों की प्रतीक है। आशय यह है कि कवयित्री का जीवन वेदनामय बन गया है तथा उसे वेदना में ही आनन्दानुभूति हो रही है।

(ङ) इसी छोटे प्याले में आज डुबा डालो सारा संसार–

नोट – अर्थ भाग को देखें।

(च) 'जानलो यह मिलन एकाकी
विरह में अकेला।'

नोट अर्थ भाग को देखें।

प्रश्न 8. अन्य होंगे चरण हारे,
और है जो लौटते दे शूल को संकल्प सारे,

उपयुक्त पंक्तियों में कवयित्री की कौन सी विशेषता प्रकट होती है।

उत्तर—(ग) दृढ़ता।

प्रश्न 9. 'मेरा जीवन कविता का मूलभाव है?

उत्तर—(ख) विरक्ति।

प्रश्न 10. निम्नलिखित विकल्पों में महादेवीजी के लिए कौनसा विकल्प अनुपयुक्त है।

उत्तर (ग) महादेवीजी की कविता शृङ्गारिक है।

प्रश्न 11. मेरा जीवन कविता के संकलित पक्षों में कवयित्री ने जीवन में क्या-क्या अपेक्षाएं की हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--मेरा जीवन कविता में श्रीमती वर्मा ने जीवन की क्षणभंगुरता को दर्शाया है। परन्तु कवयित्री ने क्षणिक जीवन में भी अनेक अपेक्षायें की हैं। कवयित्री ने सर्व प्रथम त्याग की प्रबल भावना की अपेक्षा की है साथ ही सतत कार्य करने की भी अपेक्षा की है। विच्छेद सहन करने का सामर्थ्य भी जीवन में होना चाहिए।

प्रश्न 12, कल्पना कीजिए कि आपके समक्ष एक भ्रमित निराश प्रेमी खड़ा है। उसे अपने भ्रम से मुक्ति दिलाने हेतु मेरा जीवन कविता के कौन से सर्वाधिक उपयुक्त पद का अनुशीलन करने की सलाह देंगे और क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--हम हमारे सामने उपस्थित भ्रमित निराश प्रेमी को भ्रम से मुक्ति दिलाने हेतु मेरा जीवन कविता के निम्नलिखित पद का अनुशीलन करने की सलाह देंगे—

"सखे ! यह माया का देश
क्षणिक है तेरा मेरा संग
यहां मिलता कांटों में बंधु
सजीला सा फूलों का रंग,
तुम्हे करना विच्छेद सहन
न भूले हे प्यारे जीवन।"

इस पद में अनुशीलन करने की सलाह हम इसलिये देंगे क्योंकि इसके अनुशीलन से उसका भ्रम दूर हो जायेगा तथा वस्तु स्थिति को समझकर वह फिर से अपनी प्रेमिका से प्रेम करने लगेगा।

13. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर ························प्राकार ।। (पृष्ट76)

कठिन शब्दार्थ— पथ=राह । नत=झुके हुये । रत=लीन । प्राकार= परकोटा ।

अर्थ—कवि कहता है कि मैंने इलाहाबाद के मार्ग पर उसे पत्थर तोड़ते हुये देखा था । वह जहां बैठी हुई पत्थर तोड़ रही थी, वहां पर कोई भी छायादार पेड़ नहीं था । उसका सम्पूर्ण शरीर काला था परन्तु उस शरीर में यौवन व्याप्त था । उसके नेत्र झुके हुये थे तथा उसका मन अपने प्रिय कर्म में लीन था । अर्थात् वह अपने कार्य में पूर्णतया दत्त चित्त थी । भारी हथौड़े को हाथ में लिये हुये वह बार बार प्रहार कर रही थी । वह जहां यह कठोर परिश्रम युक्त कार्य कर रही थी, उसी के सामने वृक्षों की पंक्तियां विशाल हवेलियां एवं परकोटा था ।

चढ़ रही थी······ ···············तोड़ती पत्थर ।। (पृष्ठ 76)

कठिन शब्दार्थ -तमतमाता=अत्यन्त गर्म । भू=पृथ्वी । गर्द=धूल । छिन्नतार=क्लात । सुधर=सुडौल । सीकर=पसीने की बूंद ।

अर्थ धूप शनैं शनैं चढ़ रही थी, गर्मियों के दिन थे दिन तमतमाते रूप में था अर्थात् अत्यधिक उष्मा युक्त दिन था । शरीर को झुलसा देने वाली गर्म लू उठने लगी । रुई के समान पृथ्वी जलने लगी । सर्वत्र धूल की चिनगारियां छा गई । इस प्रकार दुपहरी हो गई और वह पत्थर तोडती रही ।

उसने मुझे तो केवल एक बार ही देखते हुये देखा परन्तु सामने जो विशाल भवन खड़ा था. उसे वह क्लान्त भाव से लगातार देखती रही ।उसे देखने के पश्चात् उसने मेरी ओर पुनः उस दृष्टि से जो देखा जो कि मार खाकर न रोने वाले व्यक्ति की दृष्टि थी अर्थात् दीनता भरी दृष्टि से देखा

इसके पश्चात् उसने सहज भाव से अपने शरीर रूपी सितार को सजाया । मैंने उससे वह झंकार तो नहीं सुनी जो वास्तव में सितार की होती

है परन्तु उसमें से कुछ सुना अवश्य। एक क्षण के बाद वह सुडौल मजदूरिन कांपने लगी, उसके मस्तक से ढुलक कर पसीने की बूंद गिरने लगी, फिर उसने अपने आपको उसी पत्थर के कार्य में लीन करते हुये जैसे मानो मै पत्थर तोड़ रही हूं।

पैर बढाओ

जल्द जल्द पैर......................बढाओ।। (पृष्ठ 77)

कठिन शब्दार्थ - पासी—जाति विशेष। ऐठें =गर्व युक्त।

अर्थ – समाजवादी परिवर्तन के इच्छुक श्री निराला ने जन साधारण को क्रान्ति के लिये ललकारते हुये कहा है–

जल्दी जल्दी आगे बढ़ो, सब लोग आगे आओ, बढ़ो। आज अमीरों की हवेलिया किसानों की पाटशालायें होंगी अर्थात् अमीरों से हवेलिया छीन कर उन्हें किसानों की पाठशालायें बनाया जायेगा। अब धोबी, पासी, चमार एवं तेली अंधेरे का ताला खोलेगें अर्थात् अज्ञान युक्त पुरातन पंथी विचारो से मुक्त होंगे। सभी मिल कर एक पाठ पढेंगे, टाट बिछाओ अर्थात् जाजिम बिछाओ सब एक साथ मिलकर बैठो।

आप सब लोग उस स्थान पर किसानों का बैंक खुलाओ जहां पर सेठ जी बैठे थे जो अपनी बनियां वाली आंखे दिखाते हुये लोगों को ठगते रहते थे, लोगों को धोखा देने का जहां काम करते थे। कवि पूंजीवादी व्यवस्था को परिवर्तित करना चाहता है।

निराला जी अपनी समाजवादी धारणा को व्यक्त करते हुये कहते हैं कि सम्पूर्ण सम्पत्ति देश की हो अर्थात् सम्पत्ति का राष्ट्रीकरण हो। सम्पूर्ण सम्पत्ति देश की बने सामूहिक रूप से सभी समस्याओं पर विचार किया जाये। सम्पूर्ण जनता एक वर्ग विशेष की हो अर्थात् अलग अलग वर्ग एवं समुदाय न होकर सभी का एक वर्ग हों। अन्य वाद प्रचलित न हो केवल यही विवाद ठने कि कांटा कांटे से कढाओ अर्थात् कठोर के साथ कठोरता का व्यवहार करो।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1 कवि मजदूरिन को किस रूप में देखता है ? (सीमा 20 शब्द)

उत्तर— कवि मजदूरिन को शोषण से पीड़ित मजदूरिन के रूप में

देखता है। परंतु कवि को उसमें स्वाभिमान एवं कर्म में लीन रहने की भावना स्पष्ट दिखाई देती है।

प्रश्न 2. इस कविता में कवि किस आशय को प्रकट करना चाहता है ?

उत्तर—इस कविता में कवि श्रमजीवियों एवं गरीबों के प्रति सद्भाव एवं पूंजीपति वर्ग के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करना चाहता है।

प्रश्न 3. इस कविता में कवि का प्रगतिशील दृष्टिकोण किस प्रकार प्रकट हुआ है ? (सीमा 40 शब्द)

उत्तर इस कविता में कवि का प्रगतिशील दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है। 'प्रगतिशील दृष्टिकोण' वस्तुत; वह दृष्टिकोण है, जिसमें यथार्थ की झलक हो एवं कल्पना का अभाव हो। प्रस्तुत कविता में 'भारतीय मजदूरिन' का यथार्थ चित्रण कर अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण को प्रकट सिया है। कवि के हृदय में कर्म के प्रति जहां आशक्ति है वहां शोषण के प्रति हृदय में आक्रोश है।

प्रश्न 4. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए—

उत्तर – अर्थ भाग को देखें।

प्रश्न 5. मजदूरिन गुरु हथोड़ा हाथ में लेकर बार-बार प्रहार करते हुये तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार की ओर क्यों देखती है ?

उत्तर—(घ) पूंजीवाद के प्रति आक्रोश प्रकट करती हैं।

प्रश्न 6. 'देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खाई रोई नहीं।'
उसने कवि को किस दृष्टि से देखा ?

उत्तर (ग) स्वाभिमान का दृष्टि से।

प्रश्न 7. निम्नांकित पक्तियों में कौन से अलंकार हैं ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – (क) रूई ज्यों जलती हुई भू—इस पंक्ति में उपमा अलंकार है। भू' के जलने की समानता रूई के जलने से की है।

(ख) 'सजा सहज सितार'
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार'।

प्रथम पंक्ति में 'स' वर्ण की आवृति होने से वृत्यनुप्रास' अलंकार है।

पैर बढ़ाओ

प्रश्न 1. 'अमीरों की हवेली किसानों की पाठशाला होने से क्या अर्थ है ? स्पष्ट कीजिये। (सीमा 20 शब्द)

उत्तर—इसका अर्थ यह है कि सम्पत्ति का समान वितरण हो। पूंजीवादियों से सम्पत्ति छीनकर उसे अन्य लोगों में वितरित किया जाये। ऊंच-नीच का भेदभाव न हो।

प्रश्न 2. क्या इसे जनवादी कविता कहेंगे ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर—यह वस्तुतः जनवादी कविता कही जा सकती है। क्योंकि इस कविता में सामान्य जन के हित की बात निहित है। इस कविता में कवि ने ऐसे समाज की रचना करने के लिये जन सामान्य को ललकारा है जिसमें ऊंच नीच का भेद भाव नहीं हो एवं जाति पाति जैसी कोई बुराई का समावेश उसमें न हो। समतावादी समाज की रचना करने की कामना इस कविता में की गई है।

प्रश्न 3. कविता के मूल भाव को स्पष्ट करते हुये, उसके काव्यसौन्दर्य पर प्रकाश डालिये। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर—प्रस्तुत कविता का मूल भाव 'समाजवादी व्यवस्था' की स्थापना करना है। कवि ने इस कविता में जन सामान्य को क्रान्ति के लिये आमंत्रित किया है। कवि पूंजीवादी व्यवस्था का उन्मूलन कर उसके स्थान पर समतावादी समाज की रचना चाहता है।

काव्य की दृष्टि से यह कविता सरल भाषा में गहन भावों को संजोये हुये है। भाषा सरल होते हुये भी मुहावरेदार एवं भाव प्रधान है। कहीं कहीं तीखा व्यंग्य भी है।

प्रश्न 4. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिये—

उत्तर--पंक्तियों का अर्थ देखें। भाव भी स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न 5. क्या इस कविता में जनवादी सहज भाषा का प्रयोग हुआ है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये। (सीमा 30 शब्द)

उत्तर – वस्तुतः इस कविता में जनवादी सहज भाषा का प्रयोग हुआ है। साथ ही मुहावरों का प्रयोग भी उस रूप में हुआ है।

उदाहरणार्थ—'कांटा काटे से कढाओ' मुहावरा ग्रामीण भाषा में सामान्य रूप से प्रयोग में लाया जाता है। इसी प्रकार निम्न पंक्ति भी जनवादी सहज भाषा युक्त है--

"यहां जहां सेठ जी बैठे थे
बनिये की आंख दिखाते हुए.
उनके ऐंठा ये ऐंठ थे
धोखा पर धोखा खाते हुए।

प्रश्न 6. अर्थ स्पष्ट कीजिए--

उत्तर---(क) खोलेंगें अंधेरे का ताला-- अज्ञानता एवं अन्ध विश्वासों को दूर करेंगे।

(ख) धोखे पर धोखा खाते हुए--भोले ग्रामीणों को सेठ लोग धोखा देकर लूटते रहते थे।

(ग) बनिए की आंख दिखाते हुए— बनावटी गुस्सा दिखाते हुए

(घ) कांटे से काटा कढ़ाओ--जो जैसा है उसके साथ वैसा व्यवहार करो।

प्रश्न 7. इस कविता में आये मुहावरों का अन्य वाक्यों में प्रयोग कीजिए—

उत्तर--(i) आजकल के छात्र हर बात पर अपने गुरु को आंख दिखाते हैं।

(ii) धोखा एक बार ही खाया जा सकता है सदैव नहीं।

(iii) आजकल बात बात पर नेताओं में विवाद ठनने लगा है।

(vi) वह काटों से कांटा कढ़ाने में विश्वास रखता है।

प्रश्न 8. कवि जल्द पैर बढाओ का क्यों निर्देश देता है।

उत्तर--(ख) क्रांति करने के लिए।

१४. त्रिलोचन

आमों का निराला ढंग--

बन्धु हैं हमारे······················निराला है॥

कठिन शब्दार्थ--निराला=अनोखा, विचित्र। अलमाकर=अलग करके। अपनाव-अपनापन। अमवारी=आमों का बगीचा।

अर्थ --कविवर त्रिलोचन गांव की अमवारी का सरल शब्दों में वर्णन कर रहे हैं। वे कहते हैं कि आम हमारे बन्धु है, वैसे न केवल आम अपितु अन्य भी सम्पूर्ण वनस्पति वर्ग बन्धु ही हैं परन्तु कवि की मान्यता है कि इन आमों का ढ़ंग अन्य वनस्पति से अलग ही प्रकार का है।

कवि का कथन है कि वैसे तो सभी लोग वनस्पतियों के अलग-अलग नामों से परिचित हैं तथा उन्हें उन नामों से पहचानते हैं। उनके गुणों एवं स्वभाव को भी जानते हैं परन्तु जिन नामों से परिचित हैं वे प्रायः सामूहिक रूप में होते हैं, उनकी पृथक्शः जानकारी नहीं होती हैं। जब उन सामूहिक नाम वाली वनस्पतियों से अलग करके किसी एक पर विचार किया जाय तो अपनापन नहीं होता है। अपनापन उसी स्थिति में ही अधिक होता है जब कि उसका अलग अलग नाम न होकर एक ही नाम होता है।

कवि कहता है कि वैसे तो आमों के बगीचे में आम ही प्रचुर मात्रा में होते हैं परन्तु वहां पर जिसके जितनी संख्या में पेड हैं, उन सबके नाम भी एक न होकर पृथक् पृथक् हैं। इसीलिए आम का ढंग बिचित्र सा ही है।

आमों में बौर..........................ढंग ही निराला है।

कठिन शब्दार्थ--कृमि=कीट। कल्लों=कोंपलों। अंतराकर=अन्तर से बौर लेता है फलता है।

अर्थ - कवि कहता है कि आमों के प्रति वर्ष बौर नहीं आते हैं अर्थात् आम हर वर्ष नहीं फलते हैं। वैज्ञानिकों का कथन है कि कोई कीट होता है जो कि आंखों से स्पष्टतया दिखाई नहीं देता है वह कीट पत्तों से कोपलों एवं इसके पश्चात् शनैः शनैः भीतर विकास करता हुआ टहनियों में पहुंच जाता है। इससे नई नई टहनियों में गांठें पड जाती हैं। गाठें पड़ जाने से आमों में बौर नहीं आते। इस प्रकार सभी वृक्षों एवं फिर सम्पूर्ण आम की बगीची में होता है अर्थात् किसी में भी बौर नहीं आता। कवि का कथन है--कि लोगों का विश्वास यह है कि आम एक वर्ष के अन्तर के बाद फलता फूलता है अर्थात् आम के प्रति वर्ष बौर न आकर हर एक वर्ष के बाद आता है। आमों का ढंग ही विचित्र है।

आमों के बौर.............................ढंग ही निराला है॥

कठिन शब्दार्थ परागरस=पराग पैदा होना। पतझार=पत्तों का गिरना।

अर्थ - आमों में ज्यों ही बोर आते हैं, त्यों ही कोयलों का उन पर आगमन होता है तथा उनका पंचम स्वर दिशा दिशा में गूंज उठता है। बोरों में जिस प्रकार शनैः शनैः विकास होता है अर्थात् ज्यों ज्यों उनमें वृद्धि होती है, वैसे ही कीड़े मकोड़े एवं मक्खियां उन्हें घेर लेती हैं। कवि कहता है कि लोगों की मान्यता है कि आमों में पराग इन्हीं कीड़े मकोड़ों एवं मक्खियों से उत्पन्न होता है। परागण बनने में शेष कार्य हवा पूरा कर देती है।

आमों में पूरा पतझार नहीं होता है अर्थात् आम के पत्ते कभी भी सारे के सारे एक साथ नहीं झड़ते हैं। उनमें क्रमशः एक एक कर पत्ते झड़ते है तथा दूसरे नवीन पत्ते निकलते रहते हैं। आमों को नम्रता पसन्द नहीं है। परन्तु जिन आमों में पत्ते नहीं आते हैं, कवि कहता है कि हम यह नहीं जानते कि उनमें बोर नहीं आता है अर्थात् बोर तो उनमें आता है तथा जिन आमों में बोर नहीं आता है उन आमों में पत्ते भी पुराने ही रहते हैं टहनियां भी पुरानी रहती हैं। केवल उनमें नवीन बौर आते हैं। इस प्रकार आमों का ढ़ंग विचित्र ही हैं।

कभी कभी कोई ....निराला है ।।

कठिन शब्दार्थ पल्लव-पत्ते। सहकार=आमों में सुगन्ध और रस होना। चैता चैती हो=चैत मास में गाये जाने वाला लोक गीत।

अर्थ—कवि कहता है कि कभी कभी कोई आम का वृक्ष आधे पत्तेतो नवीन ग्रहण करता है अर्थात् उसके आधे पत्ते नवीन आ जाते हैं, तथा शेष आधे पुराने ही रहते हैं मानो वह अपनी पहचान कायम रखने के लिये उन्हें धारण किये रहता है इसलिये वह बौर भी धारण करता है। कवि को आश्चर्य है कि ऐसा क्यों होता है? आमों का ढग ही कुछ विचित्र सा है।

आमों का विकास सदैव सामूहिक रूप से होता है। इसी सामूहिक विकास के कारण उनमें सहकार होता है। आम के बोरों की गंध से आस पास की सम्पूर्ण हवा सुगन्धित रहती है। उस सुगन्धित हवा से साँसो में जीवन के नवीन राग जागृत होते हैं भाव यह है कि उस सुगन्ध से लोगों के हृदयों में रागात्मक भाव उत्पन्न होते हैं। होली में गाये जाने वाले गीत अब कलेवर बदल कर चैत्र मास में गाये जाने वाले लोक गीतों का रूप ले लेते हैं। जब तक मनुष्य आम की बगीची में रहता है तब उसका मन अत्यन्त प्रफुल्लित रहता है। बच्चे लोग प्रसन्नता के साथ आमों की रखवाली करते हैं तथा वहां

अनेक प्रकार के खेल खेलते रहते हैं। उस समय बस्ती एवं बाग का भेद मिट जाता है। भाव यह कि है उस समय ऊंच नीच का कोई भेद भाव नहीं रहता है। वस्तुतः आमों का ढंग ही अन्य वनस्पतियों की तुलना में विचित्र है।

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. आमों का निराला ढंग कविता में कवि क्या कहना चाहता है ? स्पष्ट कीजिये (सीमा 50 शब्द)

उत्तर— कवि त्रिलोचन जन सामान्य एवं ग्रामीण आँचलिक बोध के कवि हैं। उनकी कवितायें भारतीय जन जीवन के खुरदरेपन एवं आंचलिक प्रभाव से प्रभावित हैं। आमों का निराला ढंग' कविता भी इसी कोटि की है। इसमें एक ओर गांव की अमवारी का सरल शब्दों में सरल चित्र करना चाहता है, वहां दूसरी ओर उससे भावना समाज को प्रेरणा भी प्रदान करना करना चाहता है। आम ग्रामांचल में 'सहकार' की भावना किस प्रकार जगाते हैं तथा आम फलने के दिनों में किस प्रकार लोगों में ऊंच नीच का भेद भाव दूर हो जाता है यह सब भी प्रदर्शित करना कवि को अभिप्रेत है।

प्रश्न 2. प्रस्तुत कविता में वनस्पति-शास्त्र का ज्ञान कैसे प्रकट होता है ? स्पष्ट कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर–प्रस्तुत कविता में आमों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गई है जिससे वनस्पति शास्त्र का ज्ञान व्यक्त होता है। जैसे आमों के बगीचे में बोर कब आते हैं तथा किस कारण से कभी–कभी उनमें बोर नहीं आते हैं आम क्यों पकते हैं उनका ढंग निराला क्यों है, आदि।

प्रश्न 3. अमवारी में आम होने पर बस्ती एवं बाग का अन्तर किसे प्रकार मिट जाता है ? स्पष्ट कीजिए (सीमा 40 शब्द)

उतर–अमवारी में जब आम फलते हैं तो उस बस्ती के लोगों का एक पांव बस्ती में रहता है तो दूसरा पांव अमवारी में रहता है। दिन में अनेक बार आना–जाना होता रहता है। अतः बस्ती एवं बाग में कोई अन्तर उस समय नहीं रहता द्वितीय अर्थ यह है भी है कि आम फलने के दिनों में लोगों में ऊंच नीच का भेदभाव विलीन हो जाता है।

प्रश्न 4. प्रस्तुत कविता में नई कविता की क्या विशेषतायें हैं। चार विशेषतायें बताइये।

उत्तर--प्रस्तुत कविता परम्परा से हटकर लिखी गई है। यह नई कविताओं की विशेषता से युक्त है। नई कविता की निम्नलिखित चार विशेषतायें इनमें दृष्टव्य हैं--

(i) ग्रामीण अंचल की कविता को सरल शब्दों में अभिव्यक्ति प्रदान की है।

(ii) ग्रामीण शब्दों को सही अर्थवक्ता प्रदान की गई है ।

(iii) यथार्थ बोध पर विशेष ध्यान दिया गया है।

(iv) अंग्रेजी की परम्परा के अनुरूप चौदह पंक्तियों के सोनेट लिखे गये है।

प्रश्न 5. अर्थ स्पष्ट कीजिए--

उत्तर--(क) बन्धु हैं हमारे ग्राम-ग्रामों के प्रति अपनत्व प्रदर्शित करते हुए कवि ने उन्हें बन्धु कहा है।

(ख) 'अपनाव तक घनिष्ट होता है
जब उसका एक नाम होता है,

उत्तर—कवि की उक्त पंक्तियां सार गर्भित हैं। इनका भाव यह है कि परम्परा अपनापन उस स्थिति में अधिक मजबूत होता है जबकि उसका एक नाम निर्धारित होता है। वैसे भी किसी एक पर ध्यान का केन्द्रित होना उसके प्रति घनिष्ठता उत्पन्न करता है। अलग अलग नाम होने पर घनिष्ठता नहीं रह पाती क्योंकि वह विभाजित हो जाती है।

(ग) होली चैताल चहकरा बदल कर
चैता चैती और घाटों हो जाते हैं।

चैत्र मास में ग्राम के बोरों की महक से सभी आनन्दित हो लोकगीत गाने लगते हैं

प्रश्न 6, ग्रामों का ढंग निराला क्यों है ?

उत्तर -(ग) ग्राम ग्रामीण अंचल में सहकार की भावना और खुशियां भर देता है।

प्रश्न 7. अमवारी में ग्राम होने तक मन सावन क्यों रहता है ?

उत्तर—(क) अमवारी के सौन्दर्य को देखकर।

प्रश्न 8. अमवारी का वातावरण हमारी लोक--संस्कृति का अंश क्यों बन जाता।

उत्तर---मिलजुल कर चैत के गीत गाने के कारण ।

प्रश्न 9. निम्नलिखित शब्दों की अर्थवत्ता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर –(क) अलगाकर-- यह ग्रामीण शब्द है। कवि ने इसे उचित अर्थ-वत्ता प्रदान की है तथा इसे 'अलग करके' अर्थ में प्रयुक्त किया है। 'अलगाकर' अर्थात् न लग कर अर्थात् अलग-अलग।

(ग) अन्तराकार – 'अन्तर करके' एक वर्ष का बीच में अन्तर देकर। ग्रामीण भाषा में यह शब्द आंतरा के रूप में प्रयुक्त होता है जिसका वहा पर भी अर्थ भेद अथवा फर्क ही है ।

(ग) परागण—पराग ,पैदा होना' प्रेम भाव उत्पन्न होना।

(घ) सहकार—अंगों से सामूहिक विकाश होने के कारण सहकार शब्द स्पष्ट रूपेण अपनी अथ वक्ता व्यक्त करता है।

प्रश्न 10 त्रिलोचन आंचलिक बोध के कवि हैं। कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–त्रिलोचन जी के सम्बन्ध में उक्त रचना पूर्णतया सत्य है। प्रस्तुत कविता इस सम्बन्ध में प्रमाण रूप में विद्यमान है। इस कविता का विषय प्रथम ग्रामीण है, साथ ही जो शब्दावली प्रयुत की गई है वह भी आंचलिक प्रभाव को व्यक्त करती है। आमों की फसल आने प गांवों में जो वातावरण देखने में आता है उसी सजीव भाषा में कवि ने व्यक्त किया है।

प्रश्न 11. अमवारी के प्राकृतिक सौन्दर्य पर एक शब्द चित्र प्रस्तुत कीजिये।

उत्तर —चैत्र मास में अमराई की शोभा अपने आप में दर्शनीय होती है। आमों में बोर आते हैं; बोर आते ही कोयल उनमें कूकना प्रारम्भ कर देती है। बोरों की महक से आस पास का सम्पूर्ण वातावरण सुरभित एवं रंगीन बन जाती है। लोग आमों की महक से मस्त होकर लोकगीत गाने लगते हैं। अमवारी में जब तक रहते है मनसावन सा रहता है।

----

15 नागार्जुन

अकाल और उसके बाद—

कई दिनों तक..............................दिनों के बाद।

कठिन शब्दार्थ—गश्त=दौरा। शिकस्त=पतली, खराब।

अर्थ—प्रस्तुत कविता में अकाल एवं उसके बाद का यथार्थ चित्रण करते हुये कवि ने कहा कि कई दिनों तक चूल्हा रोया तथा चक्की उदास रही भाव यह है कि अकाल के कारण सम्पूर्ण अनाज नष्ट हो गया, अतः उसके अभाव में न तो चूल्हा ही जलाया गया, न चक्की ही चलाई गई। अकाल की चपेट में पशु भी आ गये अतः कानी कुतिया पास में सोई। कई दिनों तकछिपकलियां दीवार पर चक्कर लगाती रही। कई दिनों तक चूल्हों की हालत पतली रही। भाव यह है कि उन्हें भी खाने को नहीं मिला। घर में अनाज के दाने कई दिनों के बाद दिखाई दिये। कई दिनों के बाद ही आंगन के ऊपर धुआं उठी अर्थात्, अकाल के समय में कई दिनों बाद घर में चूल्हा जलाया गया। कई दिनों के बाद ही घर में रहने वाले लोगों की आंखें चमक पाई। अकाल के समय उनके नेत्र ज्योतिविहीन हो गये थे, अतः उनमें चमक दिखाई नहीं देती थी। अकाल के समय कौए ने पंख खुजलाना भी छोड़ दिया था। अकाल से कुछ राहत मिलने पर उसने पख खुजलाए।

खुरदरे पैर—

कठिन-शब्दार्थ--खुब गये=गड़ गये। गट्ठला=गांठ। गट्ठ= लगने से शरीर पर पड़ने वाले चिह्न। कुलिश=वज्र। त्रिविक्रम=तीन लोकों को विजय करने वाला। अनहद=सीमा रहित।

प्रसंग—प्रस्तुत कविता में रिक्शेवाले के कठोर श्रम का कवि ने यथार्थ चित्रण किया है। रिक्शेवाले के बिवाई फटे पैरों को देखकर कवि के हृदय में जो भाव उत्पन्न होते हैं उन्हें वहां व्यक्त किया गया है--

अर्थ- कवि की दूधिया दृष्टि में रिक्शे वाले के फटी बिवाइयों वाले पैर सदैव के लिए गड़ गये अर्थात् वे हमेशा के लिए कवि के नेत्र में समा गये। कवि के पुष्प सदृश कोमल मन में गांठों एवं घावों के चिह्नों वाले पैर हमेशा के लिए बस गये। वे पैर जो कि रबड़ 'रहित ठूंठ पैडीलों

को गति प्रदान कर रहे थे। वे पैर न केवल एक ही चक्र को चला रहे थे अपि तीन-तीन पहियों को एक साथ चला रहे थे। कवि कहता है कि वे त्रिविक्रमतु अर्थात् विष्णु, जिन्होंने कि वामन अवतार धारण किया था, के पैरों को भी शिकस्त दे रहे थे। वे पैर निःसीम दूरी नाप रहे थे। प्रति घण्टे के हिसाब से सवारी का वजन वहन किया जा रहा था उस दिन कवि की आंखों से रिक्शे वाले के पैर काफी समय तक टकराये अर्थात् बहुत समय तक कवि ने उन्हें गौर से देखा। कवि कहता है कि मैं उन पैरों को कभी नहीं भूल पाऊंगा क्योंकि पैरों की फटी बिवाइयां दूधिया निगाहों में समा गई है तथा कुसुम सदृश कोमल मन में वे गहन प्रभाव कर गई हैं।

लाल बहादुर—

सब खड़े रहे........................यशः पूत।

कठिन शब्दार्थ—सहमी=सकुचाना, शांत। नथनों में नाक के छेदों में। जरामरणजित=वृद्धावस्था एवं मृत्यु को जीतने वाला। यशः पूत=कीर्तिमान।

अर्थ—सभी लोग लाल बहादुर शास्त्री जी की बलिवेदी के समीप नतमस्तक उनके सम्मान मे खड़े रहे। अग्नि की लो देखते-देखते बिल्कुल ऊपर चली गईऔर आकाश दीप रिक्त रह गया। आत्मा परमात्मा में विलीन हो गई, पृथ्वी पर केवल खाली शरीर पड़ा रह गया। पता नहीं शांत रणचण्डी किस प्रकार तरुणाई तथा उसने यह सब खेल रचा। गर्वीले दानवों (पाकिस्तानियों) के नाकों में वह नकेल डाल गया। तानाशाही के सीने पर मानों वह वज्र कील गाड गया अर्थात् तानाशाही लोगों को वह अच्छा समय सिखा गया। वह हिंसा पर पंच शील के सिद्धान्त लाद गया। वह शक्ति का दूत होने के साथ-साथ शान्ति का दूत था। वह बुढ़ापे एवं मृत्यु को जीतने वाला एवं कीर्तिवान था।

वह वामन का........................आकाश दीप।

कठिन शब्दार्थ—ओज=कान्ति। पूर-पूर=भग्न हुआ। आडम्बर=दिखावा। अकिंचन=कुछ न रखने वाला, निर्धन। रक्ताभ=रक्तिम आभा वाली। उतुंग=उच्च। सानु=शिखर। भानु=सूर्य।

अर्थ–कवि का कथन है कि शास्त्री जी वामन के परमावतार थे अर्थात् विष्णु के ही वे अवतारस्वरूप थे। अपनी मिट्टी की महिमा का वह विचित्र कलाकार था अर्थात् उसकी प्रकृति अपने आप में महान थी। वह अत्यन्त साधारण परिवार का व्यक्ति था। परन्तु अपने गुणों के कारण अति महान् था। कान्ति एवं तेज से वह कीर्तिमान था सादगी एवं विनय रूपी गुण उनमें प्रचुर मात्रा में विद्यमान थे, दिखावा उन्हें पसन्द नहीं था, वे अत्यन्त निर्धन परन्तु कर्मठ एवं सत्य की खोज में रत रहने वाले थे। बारूद की बदबू पर वे चंदन की गंध के समान थे। रक्तिम आभा वाली पृथ्वी पर उनके कारण फिर से नवीन अंकुर अंकुरित हो गये थे। फिर सम्पूर्ण संसार के मंच पर भारत की जन लक्ष्मी के नूपुर बज उठे अर्थात् भारत की ख्याति सम्पूर्णसंसार में फैल गई थी। हिमालय के उच्च शिखर उनके कारण एक बार फिर से चमकने लगे थे। फिर से भारत माता का भाग्य सूर्य प्रखर हो उठा था। अर्थात् उनके समय विश्व मंच पर भारत की कीर्ति एक बार फिर से उच्च शिखर पर पहुंच गई थी। उनकी मृत्यु के बाद बलिवेदी पर सब लोग चुपचाप खड़े देखते रहे, लौ ऊपर चली गई और रिक्त आकाश दीप वहीं रह गया।

अभ्यास के प्रश्न

अकाल और उसके बाद

प्रश्न 1. अपनी कल्पना से अकाल की स्थिति का चित्रण कीजिये तथा अकाल के बचाव के उपाय सुझाइये।

उत्तर विद्यार्थी स्वयं अपनी-अपनी कल्पनानुसार अकाल की स्थिति का चित्रण करें एवं उसके बचाव के उपाय बतावें।

प्रश्न 2. क्या इस कविता में सहज और सरलता का गुण है ? उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

उत्तर इस कविता में सहजता एवं सरलता का गुण विद्यमान है। कवि ने जिस शब्दावली को कविता में अपनाया है वह दैनिक जीवन में काम में आने वाली है साथ ही अकाल के कारण जो हालात बनते हैं, उनका यथार्थ चित्रण किया गया है। कहीं भी बनावटीपन दिखाई नही देता। कविता की प्रारम्भिक दो पंक्तियों में ही सहजता एवं सरलता स्पष्टतया झलकती है।

प्रश्न 3. आज भी अकाल गांवों में अधिक प्रभावी है। क्या इस

कविता में ग्रामीण बोध का यथार्थ चित्रण हुआ है ? समीक्षा कीजिए। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर आलोच्य कविता में ग्रामीण बोध का यथार्थ चित्रण हुआ है। अकाल के समय एवं उसके बाद होने वाली जिस स्थिति का कवि ने चित्रण किया है, वह सब गांव से सम्बन्धित है। अकाल के समय वास्तव में गांवों में ऐसी ही स्थिति हो जाती है। कई दिनों तक लोगों के चूल्हे, चाकी बन्द पड़े रहते हैं। खाने का दाना भी शेष नहीं रहता है।

प्रश्न 4. भाषा-शैली की दृष्टि से कविता की समीक्षा कीजिये। (सीमा 40 शब्द)

उत्तर-बाबा के नाम से प्रसिद्ध श्री नागार्जुन जनवादी कवि हैं। उन्होंने जो भी कवितायें लिखी हैं उनकी भाषा सहज एवं सरल है। भाषा पर ग्रामीण आंचलिक का पूर्ण प्रभाव आलोच्य है। कविता सरल एव सहज भाषा में लिखी है शब्दावली को कवि ने इस कविता में अपनाया है वह सहज होने के साथ-साथ भावानुकूल है।

प्रश्न 5. अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-नोट-कविता का अर्थ देखें।

प्रश्न 6, कौए ने पांख क्यों खुजलाई ?

उत्तर-(ख) घर में दाने आने के कारण।

प्रश्न *. कवि ने अकाल के बाद की स्थिति का चित्रण किस माध्यम सेकिया है ?

उत्तर-(घ) भुखमरी से।

प्रश्न 8 कवि ने अकाल के बाद की स्थिति का चित्रण किस माध्यम से किया है ?

उत्तर-(क) खाद्य सामग्री से।

खुरदरे पैर

प्रश्न-1. कविता के आधार पर रिक्शे वाले का अपने शब्दों में चित्रण कीजिये।

उत्तर-कविवर नागार्जुन ने जिस रिक्शे वाले को देखा, उसके पैर अत्यन्त खुरदरे थे। पैरों में बिवाइयां फटी हुई थी तथा अनेक घावों के चिन्ह उन पर बने हुए थे पैरों पर गांठें बन गई थीं तथा वे अत्यन्त कठोर बन गये

थे। वह उन पैरों से जिस किसी प्रकार रिक्शे को चला रहा था। पृथ्वी के निसीम फासले को वह घण्टों के हिसाब में तय कर रहा था लेखक की आंखों एवं मन में उसका चित्र हमेशा के लिए समा गया था।

प्रश्न 7. यह जनवादी कविता क्यों है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर यह जनवादी कविता इसलिये है क्योंकि कविता का विषय जिस रिक्शेवाले को बनाया गया वह एक सामान्य है साथ ही उसकी स्थिति का जो चित्रण किया गया है वह पूर्णतया यथार्थ है एवं सहज भाषा में किया गया है श्रमजीवी रिक्शे वाले का रूप हमेशा के लिए कवि के हृदय में समा गया है।

प्रश्न 3. रिक्शे वाले के पैरों को कवि क्यों नहीं भूल पावेगा ?

उत्तर--(ग) शोषण के प्रतीक रिक्शे वाले की शारीरिक स्थिति एवं परिश्रम को देखकर।

प्रश्न 4. रिक्शे वाले के पैर कैसे हैं ?

उत्तर (ख) फटी बिवाइयों वाले खुरदरे।

प्रश्न 5. अर्थ स्पष्ट कीजिये।

उत्तर-अर्थ भाग देखें।

प्रश्न 6. निम्नांकित से पांच प्रगतिवादी शब्द में छांटिये।

उतर – (1) खुरदरे पैर (5) गुठल (3) ठूंठ पैडल (4) कुलिश कठोर (5) घट्टों वाले।

प्रश्न 7. खुरदरे पैर कविता का लक्ष्य क्या है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'खुरदरे पैर' कविता का लक्ष्य पूंजीवाद के प्रति आक्रोश व्यक्त करना है। कवि कविता के माध्यम से अपने मार्क्सवादी विचारों को व्यक्त करना चहता है। शोषण के प्रति कवि के हृदय में आक्रोश है, श्रमजीवियों के प्रति उसका प्रेम है

लाल बहादुर–

प्रश्न 1. कविता के आधार पर स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के चरित्र के गुण बताइये।

उत्तर–कविता के आधार पर उनके चरित्र में निम्नलिखित 8 गुण विद्यमान थे- (i) शांतिदूत (ii) यशदूत (iv) अतिसाधारण

(v) अभिमहान (iv) सादगी–विनय से भरपूर (vii) कर्मवीर (viii) आडम्बर से कोसों दूर रहने वाला।

प्रश्न 2. श्रद्धांजलि रचना किसे कहते हैं? क्या यह श्रद्धांजलि रचना है?

उत्तर--श्रद्धांजलि रचना किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय लिखी जाती है। 'लाल बहादुर' शीर्षक से लिखी गई कविता एक श्रद्धांजलि रचना ही है क्योंकि इसकी रचना स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के समय ही की गई है। इसमें स्वर्गीय शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सहज भाषा में उजागर किया गया है।

प्रश्न 3. भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर--कविता का अर्थ देखें।

प्रश्न 4. श्री लाल बहादुर शास्त्री को वामन का अवतार क्यों कहा गया है?

उत्तर--(ख) छोटे रहने पर भी उनके कार्य महान् थे?

प्रश्न 5. 'वह शक्ति दूत वह शांति दूत' इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर -(ग)शान्ति चाहते थे पर शक्ति में भी कम नहीं थे।

प्रश्न 6. निम्न लिखित शब्दों की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए--

उत्तर--(क) लौ चली गई=आत्मा चली गई पंछी उड गया। (ख) वज्र कील=अत्यन्त कठोर। (ग) अकिंचन=रिश्वत से कोसों दूर, निर्धन। (घ) मंगल गन्ध=पवित्र चरित्र वाले। (च) रक्ताभ भूमि=रक्त से सनी हुई।

प्रश्न 7. स्वर्गीग शास्त्रीजी ने देश को ऊंचा उठाने में कैसे योगदान दिया है?

उत्तर--स्वर्गीय शास्त्रीजी ने अपने प्रधान मन्त्री काल में देश को स्वच्छ एवं स्वस्थ प्रशासन प्रदान किया। उसके समय में देश ने हर क्षेत्र में उन्नति की। इसके अलावा पाकिस्तान के आक्रमण का जिस वीरता के साथ मुकाबला किया गया तथा उन्हें जिस तरह पराजित किया गया, उससे देश की कीर्ति में और भी चार चांद लग गये वे देश के महान् सपूत थे।

16. भवानी प्रसाद मिश्र

कवि--

कलम अपनी............................हो सकी (पृ० 92–93)

कठिन शब्दार्थ-भरन-सामर्थ्य। सुख-रस=सुख और आनन्द। संचारी ...लने वाले। कारा=जेल। विशद=बड़ा, स्वच्छ। अपना=अपनाओ।

अर्थ-प्रस्तुत कविता में कवि मिश्रजी कवियों को सम्बधित कर कहते हैं कि कवि, तुम अपनी कलम साधो और अपने मन की बिल्कुल सह बात को कहो। इसमें तुम्हें किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है। यदि तुम्हें किसी विषय की पूर्ण जानकारी है या किसी विषय को जानने की सामर्थ्य रखते हो, तो उसी ढंग में सीधे साधे शब्दों में अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करो जिस तरह हम रकसकते हैं, उस बात को इसी सच्चाई के साथ लिखो और यदि तुम अपने को समर्थ समझते हो, तो हमारे अनुभव से भी अधिक बड़ी बात लिखो। तुम इस ससार को ऐसी रचनाएं दो, जिनका स्वाद सभी को आनन्दित करे तथा तुम ऐसे साहित्य की रचना करो. जिसमें सुन्दर भावों का चित्रण हो और जिससे मानव के कल्याणकारी कार्यों में वृद्धि हो। अर्थात् अच्छे बीज को बोने से वह बेल बन कर फैल जाती है और उस पर सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। इसी प्रकार अच्छे साहित्य का निर्माण करने से मानवीय करुणा रूपी बेल बढ़ जाती है और उससे संसार में सुख और आनन्द रूपी फूल खिल जाते हैं। उन सुख-रस रूपी फूलों की सुगन्ध से मानव को शक्ति मिले और उसके प्राण मानव-कल्याण के लिये गतिशील हो जावे। अतः हे कवि, तुम्हारी रचना मात्र साहित्य की शोभा नहीं होनी चाहिए, अपितु वह कल्याण भाव जगाने वाली होनी चाहिये।

हे कवि, तुम सीधी बात को अटपटे और टेढ़े-मेढ़े ढंग से प्राप्त मत करो, अपितु उसे तीर की सीधी गति के समान सरलता से व्यक्त कर दो तथा उससे पाप एवं बुरी भावनाओं को नष्ट करो और झूठ को स्वप्न की तरह सिद्ध कर दो। तुम्हारी कलम से चाहे विंध्याचल, लहरों, फूलों फलों, बरसात या गरमी, अपने प्रियजनों की कष्ट-कथा या क्रोध अथवा नरमी का चित्रण हो अथवा देश या विदेश, अपना या पराया, बहुत बडे विस्तार वाले या एक छोटे घेरे (दायरे) वाले विषय का चित्रण हो, तुम अपनी कलम से जिसका भी स्पर्श कर दो, उसका मार्ग कल्याणकारी हो जावे। अर्थात् तुम्हारी कलम चाहे जिस भी विषय पर चले, उन सभी में निर्भीकता के साथ तुम लिखो और आडम्बर का त्यागकर मानव-कल्याण का स्वर व्यक्त करो। तुम जिस

विषय को अपनी कविता में गा दो, उसका सदा के लिए कल्याण हो ऐसी रचना तुम प्रस्तुत करो।

वे हँसे और आया वसन्त --

वे हँसे और ....पीतगात। (पृष्ठ 9)

कठिन शब्दार्थ --टेसू एक प्रकार का लाल फूल। अमराई-आमों का बाग। मौर-सेहरा, मुकुट। पीतग त-पीला शरीर।

अर्थ कवि कहता है कि किसी विरहिणी प्रिया के प्रियतम हँसे और वसन्त आया। वसन्त के आते ही चारों ओर खिले हुए फूलों से डालियां भर गई। उस पर भौंरों ने अपनी गुंजार प्रारम्भ कर दी, पेड़ पौधों के पत्ते हिलते-डुलते तालिया जैसे बजाने लगे। प्रत्येक फूल अपनी सुन्दर नयी पोशाक पहनकर संसार रूपी आंगन में झूमने लग गया और हरेक भौंरा वसन्त की मादकता से मस्त होकर नये नये फूलों को चूमकर उनके रस का पान करने लगा।

वसन्त के आते ही खेतों में सरसों के पौधे खिल उठे उन पर पीले फूल आ गये तथा वनों में टेसू के फूलों की लालिमा फैल गई। वसन्त से पहले जो हवा तेज चलती थी, उसकी गति अब मन्द मन्द हो गई। अब तक आमों का बाग सूना था, परन्तु वसन्त आते ही उसमें चहल पहल बढ़ गई अर्थात् बौर आने से वहां भौंरे मंडराने लगे, कोयल कूकने लगी तथा बच्चे अमराई में खेलने कूदने लगे। अब आम के पेडों ने बोरों के रूप में सेहरा धारण कर लिया है और उस बड़े आम का शरीर अत्यधिक बौरों के कारण पीला पड़ गया है।

किरणों का सोना...........बरदान मिला। (पृष्ठ 9)

कठिन शब्दार्थ – कुहकी करती –काली कोयल कूकने लगी। आली-सहेली। शूल-कांटे। दुकूल--दुपट्टा, सिर का रेशमी पल्ला। शाप-श्राप, बुरे वचन।

अर्थ—कवि कहता है कि वसन्त के आते ही सूर्य की प्रातःकालीन सुनहरी किरणें फैल गई और झरनों, नदी-तालाबों का पानी निर्मल हो गया। उस प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर प्रत्येक प्राणी मस्त होने लगा और उसका मन अपने प्रियजन से मिलन के लिए आतुर होने लगा। बसन्त में काली कोयल बार-बार कुहकने लगी और उसके मधुर शब्द से आमों का बाग गूंजने

लग गया। वसन्तागमन से न जाने कौनसा जादू हुआ कि सारी दुनियां, सम्पूर्ण प्रकृति एकदम नई हो गई अर्थात् इस समय प्रकृति फूल पत्ते, पराग आदि से नये शृंगार में सजधज गई।

कोई विरहिणी प्रिया अपनी सहेली से कहती है कि वसन्त में खिले हुए फूलों का अर्थ हमारे लिए बदल गया है क्योंकि वे फूल हमारे विरही हृदय में कांटों की तरह चुभकर पीड़ा (विरह-वेदना) कर रहे हैं। ऐसे समय मैं स्वयं विरह में बेसुध पड़ी हुई कि तभी अनजाने में मेरे सिर का पल्ला (घूंघट) खिसक गया मैंने देखा कि प्रियतम मेरे सामने खड़े होकर हंस रहे हैं और उनकी कटु हंसी में मैं भी स्वयं हँसने लग गई हूं। हे सखि, मेरे प्रियतम वसन्तागमन पर मुझे मिल गये। तू बता कि यह मिलन मेरे लिए शाप है कि या वरदान जैसा हुआ है।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

कवि

प्रश्न 1. प्रस्तुत कविता में मिश्रजी कवि को क्या निर्देश देते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (सीमा 50 शब्द)

उत्तर—प्रस्तुत कविता में श्री भवानी प्रसाद मिश्र कवि कर्म पर टिप्पणी करते हुए कवि को निर्देश देते हैं कि वह जो कुछ भी लिखे निर्भीक होकर लिखे तथा उसे ऐसा लिखे ताकि उसमें पूरी सच्चाई हो उसकी रचना आडम्बर को समाप्त करने वाली बुराई की निन्दा करनेवाली तथा मानव कल्याण के भावों को जगाने वाली हो अतः उसे चाहिए कि ऐसी रचना लिखे, जिसका स्वाद पाकर प्रत्येक व्यक्ति कुछ सोचने विचारने के लिए मजबूर हो जावे तथा उसमें जिसका भी चित्रण हो वह मानव के लिए वरदान बने। कवि की रचना में सरलता हो, भावो की सादगी हो और उद्देश्य महान् हो। यदि ऐसी रचना प्रस्तुत करे, तो तभी उसका कवि कर्म सफल हो सकता है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—पंक्तियों के भाव कविता के अर्थ में देखिये।

प्रश्न 3. कवि ने कविता की क्या विशेषतायें बतलाई हैं? कविता के आधार पर चार विशेषतायें लिखिये।

उत्तर-प्रस्तुत कविता में मिश्रजी ने कविता की अनेक विशेषताएं बतलाई हैं। उनमें से चार विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

(1) कविता में ऐसे भावों का समावेश हो, जिससे मानव-कल्याण की भावना जाग्रत हो।

(2) कविता में विषय का प्रतिपादन सरलता, सादगी और सच्चाई से युक्त हो।

(3) कविता में बुराई की निन्दा हो और भलाई का गुणगान हो।

(4) कविता में कल्पना की उड़ान न हो, उसमें मन की सच्ची बात हो।

प्रश्न 4. 'चीज ऐसी दे कि जिसका स्वाद सिर चढ़ जाये' कविता का स्वाद सिर चढ़ जाने से क्या अर्थ है ?

उत्तर-(ग) कविता पाठक को सोचने के लिए मजबूर कर दे।

प्रश्न 5. बीज ऐसा बो-कि जिसकी बेल बन बढ़ जाये' बीज बोने और बेल बढ़ने से क्या अर्थ है?

उत्तर-(घ) कविता में उत्तम भाव हो जो मानव के लिए कल्याण-कारी हो।

प्रश्न 6 प्रस्तुत कविता में प्रयुक्त निम्नांकित मुहावरों की व्याख्या कीजिये।

उत्तर-(क) बड़ा दिखना-सामान्य से अधिक महत्वपूर्ण मानना। अर्थात् जिसका महत्व हमें मालूम नहीं है, उसे अपनी कविता में स्थान देकर महत्वपूर्ण सिद्ध करना।

(ख) स्वाद सिर चढ़ना-कविता को सुनकर या पढ़कर आनन्दित होना तथा उसके भावों को सोचने के लिये मजबूर होना।

(ग) टेढ़ पैदा करना-सपना प्रायः असत्य होता है उसी प्रकार कविता से झूठ को असत्य करना।

प्रश्न 7. कवि भवानी प्रसाद मिश्र की भाषा कैसी है ?

उत्तर-(ख) सहज।

वे हंसे बसन्त आया

प्रश्न 1. प्रस्तुत कविता में कवि का आशय क्या है, स्पष्ट कीजिये।

उत्तर प्रस्तुत कविता में कवि का आशय वसन्त का लुभावना चित्रण प्रस्तुत करना है। कवि कहता है कि वसन्त के आते ही सारे पेड़ पौधे नये पत्तों तथा फूलों से भर जाते हैं उनकी सौरभ से भौंरे मँडराने लगते हैं। अमराई में कोयल कुहकने लगती है और आम पर बौर आ जाने से वातावरण महक उठता है। वसन्त में हवा भी मन्द चलती है पानी भी निर्मल शीतल हो जाता है। इस तरह वसन्त के आने पर सम्पूर्ण प्रकृति शृंगार करने लग जाती है, पशु पक्षी आनन्दित हो उठते हैं तथा प्रिया अपने प्रियतम से मिलन के लिए आतुर हो उठती है।

प्रश्न 2. प्रस्तुत कविता का शीर्षक की सार्थकथा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–प्रस्तुत कविता का शीर्षक 'वे हंसे और आया वसन्त' है जो कि भावात्मक दृष्टि से बड़ा आकर्षक है। इधर विरहिणी-प्रिया के पास उनका प्रियतम आता है और मधुर हंसता है तथा उधर वसन्त का आवागमन हो जाता है, जिसमें सम्पूर्ण प्रकृति मादक बन जाती है। इस प्रकार प्रियतम के मिलन और वसन्त ऋतु के वर्णन का एक साथ प्रयोग होने से कविता का शीर्षक सार्थक ही है।

प्रश्न 3. इस कविता में कविता के चार उत्तम गुणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - प्रस्तुत कविता में कविता के चार गुण (1) भाषा भावनुकूल है। (2) प्रकृति के शृंगारमय वर्णन में सहजता एवं स्वाभाविकता है (3) काल्पनिकता का अभाव है। (4) नये बिम्बों तथा मुहावरों का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 4. यह कविता किस भाव पर आधारित हैं ?

उत्तर—(ग) वसन्त के आवागमन पर,

प्रश्न 5. इस कविता में वसन्त के पांच उपकरणों पर सही का चिन्ह लगाइए।

उत्तर–(क) खिल गये फूल लद गयी डाल, (ख) खेतों में सरसों फूल उठी ,(ग) कुहकी कोयल' (घ) आमों में बौर आ गये, (च) भौंरे मस्ती में गा उठें।

प्रश्न 6. वसन्त के आवागमन पर सारी दुनियां नयी क्यों हो गई ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर वसन्त के आवागमन पर पेड़पौधों एवं लताओं में नये पत्ते एवं

कोपलें आ गई। उनकी डालियों पर रंग बिरंगे फूल खिल गये और फूलों के पराग के लोभी भौंरे उन पर मंडराने लग गये। खेतों में सरसों के पीले फूल खिल गये। आमों में बोर आ गये तथा उनकी झाड़ में कोयल मीठा गीत गाने लगी। मन्द सुगन्ध हवा बहने लगी। सूर्य की किरणें सम शीतोष्ण होकर चमकने लग गई। और नदी-तालाबों का पानी निर्मल-शीतल हो गया। इस प्रकार वसन्त के आवागमन से सारी प्रकृति नये वातावरण से युक्त हो गई और उससे दुनियां नयी हो गई।

प्रश्न 7. निम्नांकित शब्दों के बिम्बों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-(क) जग के आँगन में घूमना सम्पूर्ण प्रकृति में डालियों पर फूल खिल गये तथा वे मन्द हवा में हिलने डुलने लगे।

(ख) सूनी अमराई में बरात उतरना=वसन्त के आने पर आमों के बाग में बोर आ गये जिससे वहाँ भौंरों और कोयल का मधुर स्वर सुनाई देने लगा तथा ग्रामीण लोगों की चहल पहल वहाँ बढ़ने लग गई।

(ग) किरणों का सोना बिखेरना=वसन्त में प्रातः कालीन सूर्य की सुनहरी किरणें फैलनें लग गई।

(घ) लहरों पर नया पानी=नदी तालाब आदि के पानी में निर्मलता आ गई और वे स्वच्छ दिखाई देने लगे

प्रश्न 8. निम्नांकित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-(क) आँखों का पानी उतरना=मन का उदास होना (ख) जी में शूल गड़ना =हृदय व्यथा से भर जाना। (ग) चाल धीमी होना=मस्त गति से चलना। (घ) मतलब बदलना=समय के अनुसार स्वरूप बदल जाना।

प्रश्न 9. प्रिया को प्रियतम के हँसने पर शाप मिला या कि वरदान स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-प्रियतम के हँसने पर प्रिया को वरदान मिला। क्योंकि वसन्त के आवागमन से सारा वातावरण मादक बन गया था और प्रिया अपने प्रियतम के विरह में पीड़ित थी। विरह व्यथा के कारण वह बे सुध पड़ी थी। वह ऐसे समय पर अपने प्रियतम से मिलने के लिए आतुर थी। अत उसके प्रियतम के आते ही मधुर हँसी के साथ जब उसे निहारा, तो उसकी सारी व्यथा

समाप्त हो गई और वसन्त के मस्ती भरे वातवरण में आनन्दित हो उठी।

17. केदारनाथ सिंह

दीप-दान

जाना, फिर.......... ... .दीख जाती है। (पृ० 97-98)

कठिन-शब्दार्थ - अड़हूल- लाल रंग का फूल। गुल्ले - अंकुर। गगरी - कलशी। जंगले–लकडी का बना जालीदार छज्जा।

अर्थ - कवि कहता है कि दीपदान के लिए नदी के उस पार के तट पर फिर चले जाना और वहां दीपक जला आना। परन्तु उससे पहले अपना यह आंगन जो कुछ कह रहा है: उसे भी सुन लेना। अपना आंगन कहता कि तुम्हारे उठते हुए पल्ले से (साडी के छोर से) जो अड़हल (जावा कुसुम) की डाल बार-बार उलझ जाती है, तुम एक दीपक वहां पर भी जलाना। इसके बाद नदी के पास चले जाना। परन्तु जाने से पहले एक दीपक वहां पर भी जलाना जहां पर नयी-नयी दूब के अंकुर जमी को फोड कर उग आये हैं। एक दीपक वहाँ पर जलाना जहां पर कि उस छोटे से गेंदे के पौधे ने अभी-अभी अपनी पहली पखुडियां खोली हैं अर्थात् गेंदे की कलियां अभी आई हैं।

जाने से पहले एक दीपक वहां पर जलाना, जहां पर पानी की गागर रखी है और एक दीपक वहां पर जलाना, जहां पर बर्तन मांजने से छोटा सा गड्ढा बनगया है। एक दीपक वहां पर भी रखना, जहां कि अभी-अभी धोये गये चांवलों का सुगन्धित पानी फैल रहा है। एक दीपक उस घर में और जलाना जहां पर नयी फसल रखी है तथा उसकी गन्ध चारों ओर फैल रहा है और दीपक उस जंगले पर जलाना, जहां पर खड़े होकर नदी में प्रायः नावे तैरती हुई दिखाई देती हैं।

एक........................जला आना।

कठिन- शब्दार्थ धवरा–सफेद बछड़ा। पियरी–गाय। भवरा–कुत्ता राहे=रास्ता। चौखटे चबूतरे। तरवे-ताखु। बरगद बड का पेड।

अर्थ कवि कहता है कि एक दीपक उस जगह जलाना, जहां पर सफेद बछडा बांधा जाता है और एक दीपक उस स्थान पर, जलाना, जहां पर प्यारी गाय दुही जाती है। एक दीपक उस जगह पर जलाना, जहां पर

अपना प्यारा कुत्ता दिन भर सोता रहता है। एक दीपक उस पगडंडी (आ-पतला रास्ता) पर जलाना. जो सुदूर तक फैले हुए कुहरे के बीच में विलीन हो जाती है और दीपक उस चौहराहे पर जलाना, जो विवश मन की सारी राहे छीन लेता है अर्थात् जिस पर जाते ही हमें अपने मार्ग का निर्णय करना कठिन हो जाता है। एक दीपक उस चबूतरे पर, एक दीपक उस ताख पर और एक दीपक इस बड के पेड केनीचे जलाना। उसके बाद फिर नदी के इस पार वाले तट पर जाना और वहां जाकर दीपक जला कर लौट आना।

अभ्यास के प्रश्नोतर

प्रश्न 1.दीपदान से हमारी संस्कृति का क्या सम्बन्ध है?उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर — हमारी संस्कृति पवित्र आत्माओं से व्याप्त है। त्यौहारों के अवसर पर देवी देवताओं के मन्दिरों तथा पूजा स्थानों में तथा मांगलिक कार्य में दीपक जलाने की परम्परा भारतीय संस्कृति की महान देन है। इस कारण दीपदान के द्वारा ज्ञान आनन्द और शान्ति का भाव व्यक्त होता है। दीपक को हमारी संस्कृति में प्रकाश एवं मंगल का प्रतीक माना जाता है। दीपावली के दिन इसी मंगल भावना को व्यक्त करने के लिए घर-घर घी के दीप जलाये जाते हैं। अपने मृत प्रियजनों की आत्मा को शान्ति प्रदान करने के लिए अक्सर नदी-तालाबों में दीपदान की परम्परा भी है। मांगलिक अवसरों पर सर्वप्रथम दीप पूजन किया जाता है। तथा आपत्तियों के अन्धकार से मुक्ति की कामना की जाती है। इस प्रकार देखा जाय तो दीपदान हमारी संस्कृति के मंगलमय पक्ष में है।

प्रश्न 2. दीपदान कविता के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

उत्तर— दीपदान कविता भारतीय संस्कृति की कल्याणमयी भावनाओं से युक्त है। इसमें कवि ने सरलता, सहजता और स्वाभाविकता के साथ अपनी बात को कहीं है। इसमें भाषा सरस है तथा आंचलिक शब्दों के साथ ही स्वाभाविकता का गुण आ गया है। शब्दों में नये बिम्बों का विधान प्रस्तुत कविता की मुख्य विशेषता है। अलंकारों की जटिलता नाम मात्र भी नहीं है। ताजा मुक्त-छन्द की मधुरता प्रशंसनीय है। भाषा शैली एवं नवीन भाव बोध का अच्छा समन्वय है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत रचना में

नयी कविता के सभी गुण मौजूद हैं, जिसका इसका काव्य-सौन्दर्य निखर गया है।

प्रश्न ६. इस कविता में नयी कविता की क्या विशेषता मिलती है ?

उत्तर-(ख) इसमें आंचलिक-बोध का सुन्दर चित्रण है।

प्रश्न 4. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर भाव के लिये कविता का अर्थ देखिये।

प्रश्न 5. जाना, फिर जाना

उस तट पर भी जाकर

दिया जला, आना।'

इस कविता में उस तट से क्या अर्थ है ?

उत्तर-(ख) नदी का दूसरा किनारा।

प्रश्न 6. इस कविता में प्रयुक्त पांच आंचलिक शब्दों को छांटिये।

उत्तर-प्रस्तुत कविता में आये पांच आंचलिक शब्द-
(1) बखरा (2) पियरी, (3) भवरा, (4) ताखे, (5) कुल्हे।

प्रश्न 7. पर पहले अपना यह आगन कुछ कहता है।' अपना आंगन-क्या कहता है ?

उत्तर- (क) दूसरे पर ध्यान देने से पूर्व अपने पर भी ध्यान दो।

प्रश्न 8. अपनी कल्पना के आधार पर दीपोत्सव का चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर दीपोत्सव का वास्तविक चित्र हमें दीपावली त्यौहार पर दिखाई देता है। दीपावली का अर्थ है, दीपो की अवली या दीपकों की पंक्तियां। वस्तुतः हम इस त्यौहार पर जब रात्रि में प्रत्येक मकान, घर, द्वार गांव नगर आदि को देखते हैं, तो चारों ओर दीपक ही दीपक नजर आते है और उनके सुनहरे पीले प्रकाश में सारा वातावरण मनोहर बन जाता है। दीपावली का त्योहार हंसी-खुशी और सुख-समृद्धि का सूचक है। साथ ही इस अन्धकार पर प्रकाश का, अज्ञान पर ज्ञान का और विघटन पर सामाजिक एकता का प्रतीक मानते है। हमारी भारतीय संस्कृति का लोक-कल्याणकारी रूप इस त्योहार पर अधिक स्पष्ट हो जाता है। यही कारण है कि चाहे गरीब घर हो, चाहे अमीर घर, सभी ओर दीपक की जगमगाती कतारें इस दिन दिखाई देती हैं। प्राचीन समय में, जब भारत में घी-दूध की की मौज थीं,

तो उस समय इस अवसर पर शुद्ध घी के दीप जलाये जाते थे। परन्तु आज विद्युत युग आ गया है। इस कारण अब बिजली के रंगीन बल्वों ने दीपकों का स्थान ले लिया है। फिर भी इससे दीपावली की शोभा में कोई कमी नहीं आ पाई है। इस तरह प्रतिवर्ष हमारे देश में यह त्यौहार बड़े आनन्द एवं उल्लास के साथ मनाया जाता है।

१८. हरीश भादानी

जागरण गान

जग जाने.............................घड़ी है। पृ० 101--102

कठिन शब्दार्थ—भोर=प्रातःकाल। नीड़=घोंसला। इकतारा=एक तार वाला वीणा जैसा वाद्य। भवरों=भौंरो। सुगबुगी=हलचल।

अर्थ—कवि मानव को सम्बोधित कर कहता है कि प्रातःकाल हो गया है, अतः यह तुम्हारे जाग जाने का समय है। पूर्व दिशा में सूर्य उग आया है और घोसलों में पक्षियों का मधुर कलरव होने लगा है। इसलिये अरे मानव तुम अपनी नींद रूपी जंजीरें को खोलो। तुम्हारे दरवाजे की सीढ़ी पर प्रातःकालीन सूर्य की सुनहरी किरण तुम्हारे स्वागत के लिए खड़ी है।

प्रातःकाल हो जाने से फूलों की सुगन्धित हवा चारों ओर फैल रही है और उसके आकर्षण से भौंरे मंडराने लग गये हैं। फूल की कलियों में भी हलचल मच गई है। घास के छोटे तिनकों के ऊपर ओस की छोटी-छोटी बूंद जमी हुई है और रात उन बूंदों से भी छोटी रह गई है अर्थात् रात पूरी तरह समाप्त हो गई है।

प्रातःकाल के कारण सारे आकाश में पक्षियों आदि का कोलाहल फैलने लग गया है। अतः तुम भी अपना आलस्य त्यागकर अपने चरणों में हलचल पैदा कर दो, अपने कर्म में जुट जाओ और उसमें इतनी होड़ लगाओ कि तुम्हारा मार्ग आसानी से पूरा हो जावे, तुम्हारी गांव बड़ी रह और मार्ग की दूरी छोटी हो जावे। अर्थात् आलस्य त्याग कर पूरी लगन एवं शक्ति से अपने कर्म को पूरा कर डालो। यह प्रातःकाल का समय है अतः यह तुम्हारे जाग जाने की घड़ी है।

मैंने नहीं

मैंने नहीं.............................बुलाया है।

कठिन शब्दार्थ आबनूसी एक प्रकार की मजबूत लकड़ी। शेष-बाकी। सफे पन्ने। अजनबी अपरिचित।

अर्थ–नगरों में मशीनयुग के प्रभाव को देखकर कवि आने वाले कल को सम्बोधित कर कहता है कि मैंने नहीं, अपितु आने वाले कल ने खुशहाली को बुलाया है। आज के युग में नगरों में खामोशियों की छतें है अर्थात् चारों ओर खामोश वातावरण है तथा प्रत्येक शहरी मानव अपने घरों में आबनूसी लकड़ी के किवाड़ों में बन्द हैं। आज के मानवों में एक दूसरे के बीच अनेक प्रकार की दीवारें खड़ी हो गई हैं। अर्थात् मशीनी युग के प्रभाव से शहरी मानव एक दूसरे से कट गया है। अतः कवि कहता है कि आने वाले कल ने खुशहाली की छेनियों को लेकर बुलया है, ताकि मानव–मानव के बीच की दीवारों को तोड़ा जा सके और, उनमें मानवीय सम्बन्ध स्थापित किये जा सके।

आज का मानव इतना व्यस्त है कि वह बाजार में मिलों में और दफ्तरों आदि में भागता हुआ लम्बी–लम्बी सांसें लेता हुआ जाता है। इससे उसकी सांस सीटी की तरह शब्द करने लग जाती हैं। रात में वह निर्जीव मुर्दे की तरह पड़ा रहता है, यही अलगाव की दशा उसमें दिन में दिखाई देती है। इसी कारण वह अपने आस पास के लिये अजनबी–परिचित हो गया है। अतः कवि कहता है कि आने वाले कल को इसलिए बुलाया है, ताकि वह शहरी मानव के मन को खोल सके और मानव मानव में तथा बुद्धि का सन्तुलन स्थापित करे।

कवि कहता है कि आज आधुनीकरण का युग है' इस कारण बिजली की रोशनी है, परन्तु वह सुन्दर कांच के झरोखों में बन्द है। उन झरोखों से सिर्फ उसकी परछाई फुटपाथ पर (सड़क के किनारे पैदल मार्ग पर) उतरती रहती है। आज के शहरी मानव की तरह व्यस्त तथा अजनबी जिन्दगी के कई पन्ने हमने पढ लिये अर्थात् आज के नगर-बोध को हम अच्छी तरह समझ गये हैं। अतः हे आने वाले कल, तुम्हें इस शहरी मानव के आने वाले जीवन के पन्ने को पढ़ने के लिये बुलाया है। तुम्हें मैंने नहीं बुलाया है, अपितु तुम्हें आने वाले कल की खुशहाली ने बुलया है।

एक अक्षर जिन्दगी

एक अक्षर.................................तेरे लिए।(पृ0 10)

कठिन शब्दार्थ- रोशनाई=स्याही । लेखनी=कलम । संकल्प=दृढ़ निश्चय । उजली=उज्ज्वल । ईंधन-लकड़ी आदि आग जलाने के साधन ।

अर्थ-कवि कहता है कि मेरी कलम से लिखा जाने वाला एक-एक अक्षर आने वाली पीढ़ी के सुनहले कल के लिये होवे । मेरे लेखक कर्म में मेरी सांस स्याही है, सांस रूपी बहुत गहरी काली स्याही दृढ़ संकल्प रूपी कलम के द्वारा मेरा लेखन कर्म अबाध चलता रहे और वर्तमान काल रूपी कागज पर लिखा जाने वाला मेरे लेखन का एक-एक अक्षर भविष्य के लिए नयी-चेतना का संचार करे ।

कवि कहता है कि मेरा लेखन उज्ज्वल विचारों का बने, जो कि मानव मानव के फटे हुए मन को एकता से बांध सके । जिस प्रकार चमकदार सुई की सहायता से फटे हुये कपड़े को सिलकर इस प्रकार गूंथा जाता है कि वह काफी समय तक मजबूत बना रहता है, उसी प्रकार मेरे लेखन से मानव-मानव के मन इस तरह आपस में जुड़ जावें कि वे आने वाले कल में खूब फलने पर भी मजबूत रहें । अर्थात् आने वाली पीढ़ी में एकता स्थापित हो सके, वे अपना व अपने समाज का उत्थान करें— यही मेरें लेखन-कर्म की अभिलाषा है ।

कवि कहता है कि मेरे लेखन के एक-एक अक्षर में आने वाली पीढ़ी में नव-चेतना जागृत हो, धरती से आग रूप चेतना की लपटें उठें और वे घाटियों में घूमती हुई पर्वतो को छू जावें अर्थात् सर्वत्र नव चेतना का संचार होवे । इस नव-चेतना रूपी आग को जलाये रखने के लिये ईंधन के रूप में मेरा एक-एक अक्षर समर्पित है इस तरह मैं आने वाली पीढ़ी के सुनहले कल के लिये अपनी रचना का एक-एक अक्षर न्योछावर करना चाहता हूं-यही मेरी कामना है ।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. जागरण गीत से आप क्या तात्पर्य समझते है ? प्रस्तुत गीत के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए । (सीमा 60 शब्द)

उत्तर- जागरण गीत का तात्पर्य यह है कि उस गीत में प्रभात होने पर जागरण की प्रेरणा दी जाती है । सामान्य अर्थ में जागरण अर्थात् जाग जाना ही ऐसे गीतो का भाव रहता है परन्तु नयी कविता में आलस्य, प्रमाद

निराशा एवं कुण्ठा आदि भावों को त्यागने तथा नव चेतना कर्म में जुट जाना, आशावान् बने रहना तथा आपत्तियों का सामना करने के लिए कमर कस लेना आदि बातों की प्रेरणा देने के लिए भी जागरण गीत की रचना की जाती है। इस प्रकार विस्तृत अर्थ के रूप में जिस गीत में हरेक प्रकार सेसजग सतर्क तथा जागृत रहने की प्रेरणा दी जाती है, उसे जागरण गीत कहते हैं।

प्रस्तुत गीत में कवि ने प्रातःकालीन शोभा का चित्रण करते हुये मानव को आलस्य त्यागकर अपने कार्यों में जुट जाने की प्रेरणा दी है। अतः इस प्रकार की प्रेरणात्मक रचना होने से इसका शीर्षक 'जागरण गीत सार्थक है।

प्रश्न 2. नवगीत की विशेषतायें बतलाइये। क्या इसे नवगीत कहेंगे ?

उत्तर—हिन्दी साहित्य के वर्तमान काल में नयी कविता का नवगीत का स्वर अधिक मधुर है। नव गीत रचना की अपनी अनेक विशेषताएं मानी गई हैं। डैसेकि ( ) नवगीत में शब्दों का बिम्ब विधान अनूठा होना चाहिये। ( ) भाषा-शैली स्पष्ट तथा सहज होनी चाहिये। (3) यथासम्भव प्रतीक योजना होनी चाहिये। (4) वाक्य विन्यास स्वल्प व चमत्कारी होना चाहिये। (5) मुक्त छन्द रचना में गेयता भी होनी चाहिये। (6) आंचलिक तथा नगर-बोध का उसमें पूर्ण समावेश होना चाहिये। इन विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत 'जागरण-गीत' को नवनीत कहा जा सकता है क्योंकि इसमें भी नवीन बिम्ब वि ग्रान, सहज भषा-शैली, आकर्षक प्रतीक योजना, छंद-मुक्त गेयता तथा सामाजिक-बोध को अपनाया गया है। कुछ नवीन प्रयोगों से तो इसमें नवनीत की पूरी ताजगी आ गई है। अतः यह एक श्रेष्ठ भावात्मक नवगीत है।

प्रश्न 3. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भाव के लिये कविता का अर्थ देखिये।

प्रश्न 4. 'जाग जाने की घड़ी' क्यों है ?

उत्तर—(क) भोर का तारा उग आया, इसलिये।

प्रश्न 5. प्रस्तुत जागरण गीत में कवि के किस भाव को प्रकट करना चाहता है।

उत्तर—(ख) आलस्य त्यागकर कर्मठ होने की प्रेरणा देता है।

प्रश्न 6. कवि द्वारा प्रयुक्त निम्नांकित प्रतीकों का अर्थ स्पष्ट कीजिये।

उत्तर — (क) नीड़ इकतारा बना है - घोसलों पर पक्षियों का मधुर कलरव होने लगा है। यहां मधुर कलरव के लिए 'इकतारा' प्रतीक बनाया गया है।

(ख) नींद की सांकल उतारो— नींद के बन्धन को त्यागो । यहां सांकल (जंजीर) शब्द नींद के पराश्रय भाव का प्रतीक है। जिस प्रकार सांकल (जंजीर या बेड़ी) उतारने पर व्यक्ति मुक्त हो जाता है। उसी प्रकार नींद को त्यागने पर यह जागृत हो जाता है ।

(ग) किरण ड्योढ़ी पर खड़ी है प्रातःकालीन सूर्य की किरण दरवाजे पर पड़ रही है। यहां किरण को जगाने वाली चेतना का प्रतीक माना गया है और जगने पर उसे उस व्यक्ति का स्वागत करने के लिये दरवाजे पर खड़ी बताया है।

मैंने नहीं

प्रश्न 1. इस गीत में नव गीत की जो विशेषतायें, उनका संकेत कीजिये।

उत्तर यह एक नवगीत है इसमें नवगीत को विशेषताएं निम्न है —

(1) भाषा-शैली सहज और सपाट है।

(2) प्रतीक योजना अत्युत्तम है। 'छेनियां, 'जिल्द, सफे आदि शब्दों के ऐसे प्रतीक हैं ।

(3)'खामोशियों की छतें ठंडी पुतलियों रात के मुर्दे' आदि में नवीन बिम्ब-योजना है।

(4)प्रस्तुत गीत में आधुनिकीकरण से प्रभावित नगर-बोध का चित्रण है।

(5)मुक्त छन्द योजना है तथा अलंकारों का प्रयोग नगण्य है।

प्रश्न 2, यह गीत नगर-बोध का गीत है? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर यह गीत नगर-बोध से सम्बन्धित है। कवि ने इसमें बताया है कि मशीनी युग के प्रभाव से आज का शहरी वातावरण बदल गया है। आज का शहरी मानव अपने आप में इतना व्यस्त रहता है कि उसे किसी दूसरे से मेल-मिलाप करने की फुरसत नहीं हैं वह अपने घर में अपने मानसिक तनाव के बीच पड़ा रहता है। इस कारण आज मानव-मानव के बीच मानसिक स्तर

पर अनेक दीवारें खड़ी हो गई है और मानव एक दूसरे से कट गया है। मशीनीकरण के प्रभाव में आज के शहरी मानव की बुद्धि और हृदय मे संतुलन नहीं है इस कारण उसके जीवन में बनावटी खुशहाली है। इस प्रकार आज के सभ्य कहे जाने वाले शहरी मानव के लिए यह स्थिति एक विडम्बना है।

प्रश्न 3. निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - पंक्तियों का भाव कविता के अर्थ में देखिए।

प्रश्न 4. कवि छेनियां लेकर क्यों बुलाना चाहता है ?

उत्तर—(ग) मन की दूरी समाप्त करने के लिए।

प्रश्न 5. 'तुम्हे अगला सफा पढ़ने बुलाया है'—क्यों बुलाया है ?

उत्तर—(ग) आधुनिक मशीनी संस्कृति मे घुटन है, इस कारण।

प्रश्न 6. 'जिन्दगी की जिल्द
ऐसे सफे तो पढ लिए'—

इन पंक्तियों में किस प्रकार के सफे पढ़ लेने से अर्थ है ? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर - इन पंक्तियों में कवि का आशय नगर-बोध के ऐसे सफे पढ़ लेने से है, जिनमें आज के नगर-जीवन में घुटन का वातावरण है, एक आदमी दूसरे आदमी के लिए अपरिचित है तथा शहरी मानव का मन दूसरों से कट गया है। कवि का तथ्य यह है कि आज मशीनी संस्कृति का प्रभाव नगर के जीवन में बढता जा रहा है इस कारण मानव का जीवन भी मशीन की तरह व्यस्त हो गया है। उसमें सामाजिक हेल मेल का भाव नहीं है। यद्यपि शहरो में मकान पास-पास है, फिर भी मानसिक तनाव के कारण शहरी मानव अपने घर में खामोशी की छाया में पड़ा है। शहरी मानव की जिन्दगी के ऐसे पन्ने सभी ने पढ लिये हैं। इसलिए कवि भविष्य की खुशहाली का आह्वान करता है।

एक अक्षर जिन्दगी

प्रश्न 1. 'एक अक्षर जिन्दगी' गीत के भाव सरल शब्दों में लिखिए।

उत्तर—'एक अक्षर जिन्दगी' नवगीत में कवि ने अपनी लेखनी से निकलने वाले एक-एक अक्षर को समाज के उत्थान के लिए तथा उसमें नई चेतना पैदा करने के लिए समर्पित करना चाहता है। इसलिए वह कहता है कि मैं अपनी सांस रहने तक अपने दृढ़ संकल्प को लेकर वर्तमान काल में सामा—

जिक बोध को इस ढंग से चित्रित करता रहूंगा ताकि उसमें मानव-मानव के एक दूसरे से कटे-फटे मन में एकता स्थापित हो सके और उसमें सुनहले आने वाले कल का निर्माण हो सके। सामाजिक जीवन में नयी चेतना का संचार करने के लिए मेरे लेखन का एक एक अक्षर यज्ञ में ईंधन की तरह काम आवे और उसमें आने वाली पीढ़ी के सुनहले कल का निर्माण हो सके। इसी बात के लिए मैं अपना लेखन न्यौछावर करना चाहता हूं।

प्रश्न 2. भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - भाव के लिए कवितार्थ देखिए।

प्रश्न 3. 'उजली नजर की सुई' से क्या अर्थ है तथा उससे कवि क्या अर्थ लेना चाहता है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—'उजली नगर की सूई' का अर्थ है चमकती पैनी नोक वाली सूई। कवि का इसमे भिन्न आशय है। वह अपने उज्ज्वल विचारों को उजली सुई बताकर कहना चाहता है कि जिस प्रकार सुई के कटे-फटे कपड़े को सिला जाती है उसी तरह मेरे उज्ज्वल विचारों से कटे-फटे मानव मन में एकता आ सकती है और तब वे सामाजिक उत्थान में जुट सकते हैं।

प्रश्न 4. निम्नांकित नवीन बिम्बों से गीत में जो अर्थ गाम्भीर्य आया है, उसे सरल शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - (क) सांस की रोशनाई —कवि ने अपनी सांस को स्याही कहा है। जिस प्रकार गहरी स्याही से अक्षर लिख जाते हैं उसी प्रकार कवि भी अपनी सांस से लेखन कर्म को चलाये रखना चाहता है।

(ख) संकल्प की लेखनी—-दृढ़ निश्चय को कलम कहा गया है। कवि अपने दृढ निश्चय के आधार पर आने वाले सुनहले कल का निर्माण करना चाहता है। लेखनी के द्वारा सुन्दर अक्षरों की रचना होती है, तो दृढ निश्चय से अच्छी रचना का निर्माण होता है।

(ग) उजली नजर की सुई --उज्ज्वल विचारों का दृष्टिकोण। जिस प्रकार सूई के कटे-फटे कपड़े को जोड़ा जाता है, उसी प्रकार लेखक अपनी रचना में व्यक्त उज्जवल वैचारिक दृष्टिकोण से मानव-मानव के हृदय में एकता लाना चाहता है।

(घ) अक्षरों की जिन्दगी—-एक-एक अक्षर मे गूंथी जाने वाली रचना जिससे आने वाले सुनहले कल की नव चेतना की प्रेरणा मिल सकती है।

प्रश्न 5. कवि एक अक्षर जिन्दगी किसको समर्पित करना चाहता है ?

उत्तर--(घ) आने वाले समय को।

प्रश्न 6. निम्नांकित शब्दों को राजस्थानी में लिखिए।

उत्तर—(क) सा.ल—सकलप, (ख) उजजी—उजलो,

(ग) अक्षर—आखर, (घ) ईंधन—बलीतो।

१६. धूमिल

मोचीराम—

रांपी से उठी ....लड़खड़ा रही है। (पृ० 108-109)

कठिन-शब्दार्थ - रांपी=चमड़ा छीलने-काटने का औजार। पतियाये=विश्वास करते हुए। एक जोड़ी जूता=समान महत्व। नवैयत=सम्पत्ति रखने की शर्त। चकतियां=चमड़े की छोटी गोल पतियां।

अर्थ कवि कहता है कि जूती गाठने वाले मोचीराम ने रांपी से अपनी नजर हटाकर मुझे देखा, क्षण भर में मेरे हृदय के भावों को जानने की चेष्टा और उसके बाद मुझ पर विश्वास करता हुआ-सा वह हसते हुए बोला बाबू जी मैं आपसे सच कहता हूं मेरी नजर में जूती गंठवाने के लिए मेरे पास आने वाले सभी व्यक्ति समान हैं। उनमें से मेरे लिए न कोई छोटा है और न कोई बड़ा है। मेरे लिए हरएक आदमी एक जोड़ी जूते के समान बराबर है। मेरे सामने जूते की मरम्मत करवाने के लिए जो भी खड़ा है, उसका मेरे लिए समान महत्व है। वास्तविकता यह है कि वह व्यक्ति चाहे कैसा भी हो नहीं का भी हो या जितने भी महत्व का हो, वह आदमी सीमा से बाहर नहीं है। आज के लोकतान्त्रिक युग में हर एक आदमी की सीमा है और उससे कोई भी बाहर नहीं है। फिर भी अपने पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का ख्याल रखता हूं, क्योंकि मेरा पेशा ऐसा ही है। मेरे पेशेवर हाथों और फटे हुए जूतों के बीच कहीं चेतन मानव है। अर्थात् यद्यपि लोग मुझ से जूते की मरम्मत करवा कर पूरी मजदूरी नहीं देते हैं और मेरा शोषण करते है फिर भी मै अपने पेशे के प्रति पूरी ईमानदारी रखता हूं और मानवता के व्यवहार की सभी से आशा करता हूं। जूते और मेरे हाथों के बीच ऐसा ही श्रमजीवी मानव सम्बन्ध है। इस प्रकार जिन फटे हुए जूतों में पहनने वाली की अंगुलियां बाहर झांकती हैं और जिन जूतों पर मैं टांके लगाता हूं तथा हथौड़े से जिनकी मरम्मत करता हूं, उन सभी कार्यों के प्रति मैं ईमानदारी रखता हूं। यही मेरे पेशे का मानवीय पक्ष है।

मोचीराम पुनः कहता है कि मेरे पास मरम्मत के लिए तरह-तरह के जूते आते हैं और उन जूतों से उनको पहनने वाले व्यक्ति का परिचय आसानी से हो जाता है। प्रत्येक जूते की शक्ल अलग-अलग होती है और उनको पहनने वाले की अलग-अलग शैली होती है। यह सब उस व्यक्ति के जूते से मालूम हो जाता है। उदाहरण के लिए एक जूता ऐसा आता है, जिस पर चमड़े की छोटी-छोटी पत्तियों का जाल बना हुआ है उसे देखकर ऐसा लगता है कि जूता नहीं अपितु चकतियों की थैली है। उससे यह भी पता चल जाता है कि उसे पहनने वाले व्यक्ति का चेहरा चेचक के धब्बों से व्याप्त है अर्थात् चेचक ने उसके चेहरे को चुग लिया है। उसके ऐसे मलिन चेहरे पर एक ऐसी हंसी होती है जिसमें जूता ठीक हो जाने की अशाभरी लकीरें होती है। उसके चेहरे पर जबान ऐसी लड़खड़ाती है मानो किसी टेलीफोन के खम्भे पर कोई पतंग फंसी है और वह बार-बार खड़खड़ शब्द कर रही है।

बबूजी इस……………चढ़ जाता है। (पृ० 109—110)

कठिन शब्दार्थ—यकीन=विश्वास। अक्लमन्द=मूर्ख। बिसाति=फेरी लगाकर फुटकर सामान बेचने वाला। बिसूरता है=चिन्ता प्रकट करता है। खटवाता-मेहनत करवाता। नामा-पैसा। चिहुंककर-चौंक कर।

मोचीराम उस आदमी से कहना चाहता है कि बाबूजी, इस जूते पर मरम्मत करवाने में पैसा क्यों बरबाद करते हो। परन्तु वह कहना चाहता हुआ भी नहीं कह पाता है, उसकी जबान लड़खड़ा जाती है। अतः मोचीराम कहता है कि मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि उस समय मेरे अन्तःकरण में ऐसी आवाज आती है, जो मुझे कहती है कि तुम कैसे आदमी हो जो कि अपने ही पेशे को गिराते हो? अर्थात् शोषण के इस युग में ईमानदारी से पेशा पाकर अपनी ही हानि कर रहे हो अन्तकरण की इस आवाज पर मैं उस जूते पर छोटी-छोटी पत्तियों की जगह बड़े-बड़े टुकड़े लगा देता हूं। आप मेरा विश्वास माने मैं इस तरह पेशे में पड़े हुए अपने को बड़ी मुश्किल से निबाहता हूं अपने पेशे की रक्षा मुश्किल से कर पाता हूं।

एक दूसरी तरह का जूता मेरे पास मरम्मत के लिए आता है। उसको पहनने वाला व्यक्ति केवल जूते की नाप जानता है अर्थात् उसका रख-रखाव ठीक ढंग से नहीं करता। वह न तो मूर्ख ही है न समय का पाबन्द ही है। उसकी आंखों में लालच है, उसके हाथ में घड़ी है और उसे कहीं भी नहीं

जाता है परन्तु उसके चेहरे पर बड़ी हड़बड़ी है। अर्थात् उसे कोई काम नहीं है, फिर भी वह ऐसा भाव जताता है कि मानों वह बहुत व्यस्त हो। वह शायद कोई बनिया है या बिसाती हैं अर्थात् शोषक का प्रतीक है इसलिये वह ऐसा रोब जमाता है कि मानों वह हिटलर का नाती (बेटी का लड़का) है। आशय यह है कि वह हिटलर की तरह तानाशाही प्रवृति का है और शोषण करना अपना कर्तव्य समझता है। इसलिए वह आते ही कहने लगता है कि जूते को इधर से टांका लगाओ उस पत्ती को का-ो, यहां पर कील ठोको, इस जगह पर हथौड़े से पीटो, थोड़ा सा रगड़ं लगाओ जूते को ऐसा चमकाओ और ऐसा वैसा बनाओ। अरे, आज तो बडो गर्मी है! ऐसा करकर वह रूमाल से हवा करने लगता है। तथा गर्म मौसम के नाम पर चिन्ता प्रकट करने लगता है। वह मेरे सामने खड़ा खड़ा सड़क पर आने जाने वाले लोगों की बन्दर की तरह घूरता रहता है और अपने काम के लिए मुझसे घण्टों तक मेहनत करवाता है। परन्तु जब मजदूरी देने का समय आता है, तो वह साफ साफ नट जाता है और फटकारता हुआ मुझे कहता है कि 'बीच सडक पर श ीफ लोगों को लूटते हो ? ऐसा कहकर और मजदूरी के बदले में कुछ पंसे मेरे सामने फेककर वह आगे बढ़ जाता है तभी अचानक चौंककर वह सड़क से उछल कर फुटपाथ पर चढ जाता है और अपने गन्तव्य स्थान की ओर चा जाता है।

चोट जब..............................सहता है। (पृ0 10)

कठिन शब्दार्थ–चोर कील=विरोधी भावना। गलतफहमी=भ्रम। सड़ती=चुभती।

अर्थ–मोचीराम आगे कहता है कि इस तरह जब मेरी पेशे पर चोट पड़ती है अर्थाथ् जब मेरे श्रम का शोषण होता है, तो मन में कहीं न कहीं विरोधी भावना छिपी रहती है जो विरोध करने के लिये व्यक्त हो जाती है। जिस प्रकार जूते के अन्दर कोई चोर कील (जो कील दिखाई न दे) दबी रह जाती है और चलते समय वह उभर कर पैर में चुबने लग जाती है, उसी प्रकार अपने शोषण के खिलाफ मन में कोई अव्यक्त भावना रहती है जो समय पाकर जागरूकता उत्पन्न करती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मुझे कोई भ्रम है या में गलती पर हूं। मतद यह हैं क्रि मैं हर वक्त यह ख्याल रखता हूं कि मेरे पेशे और मरम्मत के लिए आने वाले जूते के बीच कोई न कोई अज्ञात मानवीय सम्बन्ध है, जिस पर मेरा जीवन चलता है और जिनके कारण जूता

पहनने वाला व्यक्ति अपनी छाती पर हथौडे की चोट की तरह फटे हुए जूते से बाहर निकलने वाली अंगुलियों पर चोटे सहता है। अर्थात् मानवीय दृष्टि-कोण अपना कर मैं अपने पेशे मै ईमानदारी बरतता हूं तथा अपने साथ किये जा रहे शौषण के प्रति भी जागरूक रहता हूं। इसी भावना से मैं जूतिया गांठता हुआ जीवन-यापन करता हूं।

अभ्यास के प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'मोचीराम' कविता के आधार पर कवि धूमिल की पांच विशेषताए बतलाइये। (सीमा 50 शब्द)

उतअ—मोचीराम कविता के आधार पर कवि धूमिल की विशेतायें म्नि प्रकार है—

(1) इनकी कविता में नवीन बिम्बों का सुन्वर प्रयोग हुआ है।

(2) इन्होंने अपनी कविता के लिये अछूते विषयों को चुना है।

(3) इनकी भाषा में सड़क छाप सपाट ढग और सड़क छाप सामान्य आरमी की पहचान है यह इनकी निजी विशेषता हैं।

(4) ये भावात्मक स्तर की अपेक्षा बौद्धिक स्तर को प्राथमिकता देते हैं।

(5) इनकी कविता में सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रामता तथा निर्भीकता का स्वर है तथा व्यग्त की धार तीखी है।

प्रश्न 2 प्रस्तुत कविता में मोचीराम के चरित्र को किस प्रकार उभारा है ? उदाहरण ससित स्हष्ट कीजिए।

उत्तर-प्रस्तुत कविता में कवि ने मौचीराम की मनः स्थिति का चित्रण करते हुए उसकी चारित्रिक विशेसताओ को व्यक्त किया है। मोचीराम साधारण श्रमजीवी तथा निम्न वर्ग का पात्र है, फिर भी उसमें अपने कर्म के प्रति ईमानदारी है। इसी बात का पता उसके इस कथन से चलता है—

,फिर भी मुझे ख्याल ररता है
कि पेशेवर हाथों और फटे हुये जूतों के बीच
कहीं न कहीं एक अदद आदमी है ....'

मोचीराम शोसण के प्रति जागरूक रहने के लिये भी तैयार रहता है। इसी कारण वई कहता है कि—

'चोट जब पेशे पर पड़ती है

तो कहीं न नहीं एक चोर कील दबी रह जाती है ।'

मोची राम सड़क छाप सामान्य व्यक्ति है । वह सभी के साथ समानता का व्यवहार करतां है । क्योंकि उसके लिए प्रत्येक आदमी 'एक जोडी चूता' है, फिर भी वह मानवीय सम्बन्ध को बनाये रखने की चेष्टा करता है । वह आदमी की पहचान भी जानता है । इसी बात को वह इस प्रकार कहता है--

यहां तरह-तरह के चूते आते है
और आदमी अलग अगल नीयत बतलाते हैं'

इस प्रकार प्रस्तुत कविता में कवि ने विभिन्न कथनों के माध्यम से मोचीराम का चरित्र बडी कुशलता से भरा है ।

प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता में शोषण का यथार्थ चित्रण किस प्रकार हुआ है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—प्रस्तुत कविता में कवि ने शोषण का यथार्थ चित्रण कियाहै। मोचीराम के पास ऐसे व्यक्ति आते रहते हैं, जो कि उससे मेहनत तो पूरी करवाते हैं अथवा जब मजदूरी देने का समय आता है, तो वे साफ नट जाते हैं अथवा कम मजदूरी देकर किसक जाते हैं । साथ ही मोचीराम को डांटते हैं कि वह बीच सड़क पर शरीफ लोगो को लूटता है । वस्तुत: ये स्थिति आज प्रत्येक सड़क छाप मोची की है । वह बेचारा फुटपाथ के सहारे खुले आसमान की छाया में जूतियां गांठने का काम करता है तथा अपने काम में पूरी इमानदारी बरतता है, फिर भी लोग उसे चोर उचक्का कहने में नहीं चूकते जसे लोग प्राय: अपनी झूठी शान तथा शेखी बखानते है और शक्ति में पेश आना अपना रोब समझते हैं कवि ने प्रस्तुत कविता में इन सब बातों का सोदाहरण यथार्थ--चित्रण किया है ।

प्रश्न 4. मोचीराम के लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता क्यों है ?

उत्तर--(ख) क्योंकि उसके सामने कोई छोटा बड़ा नहीं ।

प्रश्न 5. कोई आदमी जूते की नाप से बाहर क्यों नहीं है ?

उत्तर--(ख) जनतांत्रिक पद्धति में हर आदमी एक सीमा होती है ।

प्रश्न 6. भाव स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर--भाव के लिए कविता का अर्थ देखिए ।

प्रश्न 7. काले छपे शब्दों की अर्थवत्ता स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर—(क) पतियायें—मोचीराम को जब यह विश्वास हो जाता है कि यह व्यक्ति शोषण कर्ता नहीं है, तब वह ऐसे स्वर में कहता है।

(च) मवैयत--जूते को देखकर उसके पहनने वाले व्यक्ति को पहचान हो जाती है कि वह अपनी वस्तु की कितनी सार-सम्भाल करता है।

(ग) चकतिग्गें--छोटी-पत्तियों के लगने से जूते का स्वरूप बिगड़ जाता है इस कारण वह अच्छा नहीं दिखाई देता है।

(घ) घटनाता – कठोर मेहनत करवाता है।

(च) चोर कील -- जैसे जूते में कोई दवी कील अचानक उभर कर पैर में चुभ जाती है, वैसे ही शोषण के विरूद्ध मन में दबी हुई भावना व्यक्त हो जाती हैं।

प्रश्न 8· मोर्चीराम सड़क छाप आदमी की कविता है। उदाहरण सहित स्कष्ट कीजिए।

उत्तर– प्रस्तुत कविता में मोंचीराम का व्यक्तित्व सड़क छाप भाषा में सपाट ढंग से करके सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ चोट की गई है। निम्न वर्ग का जूता गाठने वाला व्यक्ति, जिसके बैठने का स्थान खुले फुटपाथ का किनारा है और जिसका पेशा अत्यन्त हीन तथा जिस वर्ग को सभ्य कहे जाने वाला व्यक्ति दुत्कारता फटकारता रहता है, उसे अपने काव्य में स्थान देकर कवि ने अपनी सामान्य आदमी की पहचान को उजागर किया है। वह सड़क छाप व्यक्ति शोषण से पीड़ित हैं, फिर भी उसके मन से अपने कर्म के प्रति ईमानदारी और मानवीयता है। अतःकवि ने ऐसे विषय को अपनाकर सच्चे रूप से सड़क छाप आदमी पर कविता रची है। इसी कारण इसे सडक छाप आदमी की कविता कहना सर्वथा उचित है

मोचीराम कविता में धूमिल का क्या लक्ष्य है ?

उत्तर-=(ख) श्रमजीवी के शोशण एवं उसकी जागरूकता को बताना चाहता हैं।

प्रश्न 10. मोचीराम कविता में कुछ नवीन बिम्ब उभर कर आये है, उन्हें स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) हर आदमी एक जोड़ी जूता है--=जिस प्रकार एक जोड़ी जूते में दोनों जूते बराबर होते है, उसी प्रकार मोचीराम के लिए प्रत्येक व्यक्ति समान है।

(ख) चेचक ने चुग लिया है—जिस प्रकार चेचक के धब्बों से चेहरा बिगड़ जाता है, क्योंकि उसकी सुन्दरता चेचक निगल लेती है। उसी प्रकार फटे जूते पर लगी हुई पत्तियों से उसका स्वरूप बिगड़ गया है।

(ग) टेलीफून के खम्भे पर कोई पतंग फंसी और खड़ाखड़ा रही है—वह व्यक्ति कुछ कहना चाहता है पर उसकी जबान लड़खड़ा कर अस्पष्ट रह जाती है। उसकी जबान की स्थिति उस पतंग की तरह है, जो किसी टेलीफोन के खम्भे पर लटकी हुई हवा से खड़खड़ शब्द कर रही हैं।

(घ) अपनी जाति पर थूकते हो—अपने पेशे या जाति को नीचे गिराते हो।

50 नारायण सिंह भाटी

गाडोलिया लवार

मैं मिनका जूण.......................नेठाव है। (पृ0 113-114)

कठिन शब्दार्थ मिनखा जूण=मनुष्य योनि। समगे-साथ। भोम=भूमि। माठे=मन्द गति वाले -दिस दिशा। सगली=सम्पूर्ण। गुमेज=गरिमा।=खवा खलिहान। गुवाड=चोगाल। सरंजाम –व्यवस्था। बीटी=लपेटा हुआ। जिपौड़ी–रस्सी। तिजारत=सामग्री। कूबये पिचके हुये। टोकरा=बैल के गले की घण्टी। नीर–पानी। रिझाण–आनन्द। नेठाव–धैर्य। परक्रमा–परिक्रमा।

अर्थ - कवि राजस्थान के गाडूल्या लुहारों का चित्रण करता हुआ कहता है कि इन गाडूल्या लुहारों की मनुष्य योनि गाड़ियों को गुड़दाते ही बीत गई। ये इन गाड़ियों के साथ ही इस धरती के ऊपर धीमी गति से चलते हुए अपने मार्ग को तय करते रहते हैं वे गाडूल्या लुहार कभी इस दिशा से उस दिशा में कभी इस गाँव से उस गाँव में जाते हैं। इस तरह इन गाडियों ने इनकी कई पीढ़ियों की परिक्रमा करवा दी है। अर्थात् कई पीढ़ियों से गाडूल्या लुहार अस्थिर जीवन विताते हुए चक्कर काटते रहते हैं।

इन गाडूल्या लुहारों की सारी गृहस्थी की सजधज एकमात्र गाड़ी ही है। इस गाड़ी में ही इनका खेत है, खलिहान है, घर है, गांव है और गाँव का चौगान है। आशय यह है कि इनका जीवन एकमात्र अपनी गाडी पर निर्भर है। सारे मौसमों में अपने शरीर की रक्षा के लिए ओढ़ने बिछाने की

व्यवस्था रस्सी से लिपटे पुराने बिस्तर में है और सारे त्योहारों की सामग्री एक पिचके हुए पीपे में है। इनकी गाड़ी बैलों के गले में लटकती हुई घण्टियों की तंकार ही इनके लिए सारे रागों का आनन्द है। इनकी गाढ़ी के नीचे पानी रखने के लिये लगाये गये टेढ़े छीके में पानी का कुप्पा है यही इनके धैर्य का सहारा है।

गाडी रैं एक.....................तौ देखजो। (पृ0 114)

कठिन शब्दार्थ---पांण-चमक, बल। जाह्या-प्रसव। फरबी-घुमाने में। जुगत-युक्ति। ऊरबै-आशायें। ठवि-स्थान। चिरत चरित्र कार्य कलाप। कदे-कभी। चहिला-पहिये की लीक। नैर-नहर। प्रथमी-परम्परा। हालता--चलते--फिरते। दीसै-दीखाई। डललिया-क्रातिकारी परिवर्तन।

अर्थ--कवि कहता है कि गाडूल्या लुहारों ने अपनी गाड़ी के एक पहिये की सुन्दर चमक (या बल) से अपने जीवन का महाभारत जीता है। अर्थात् सुदर्शन चक्र के बल पर पाण्डवों ने महाभारत का युद्ध जीता, तो गाडूल्या लुहारों ने भी अपने कष्टमय जीवन रूपी महाभारत को गाड़ी के पहिये के चलते रहने पर जीता है। इस जाति के सारे प्रसव (बच्चों के जन्म) इसी गाड़ी के नीचे हुए हैं और दूसरे पहिये के फिरते से (हथियारों को पैना करने वाले साण के चक्के घूमने से) इन्होंने अपने जीवन की रक्षा की है। इनके जीवन मे युक्ति (उपायों) और आशाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। इनके बा-बार गाड़ी के पहिये की धुरी पर ही अपना जीवन निर्भर करते आ रहें हैं।

आज समय ने कई क्रिया-कलाप करके अपने अंगो को मोड़ दिया है। अर्थात् आज समय काफी बदल गया है और उसमें कई नये आविष्कार हो गये हैं परन्तु इन गाडूल्या लुहारों की गाडियों के पहिऐ की लीक नहीं मुडी है। अर्थात् ये अब भी उसी पुरानी परम्परा पर चले आ रहे हैं। इसलिये कवि कहता है कि आज देश के कई बीरान भागों में नहरों आदि का निर्माण हो गया है और वहां कई भूमिहीन परिवार बसाये जा चुके है। परन्तु गाडूल्या लुहारों की गाडियों के पहिये से बनने वाली लीक ने किसी नहर का निर्माण नहीं किया है, अर्थात वे उसी पुरानी असहाय स्थिति में हैं। इस कारण ये प्राचीन परम्परा की गति के साथ कभी इधर से उधर और कभी उधर से इधर यों ही घूमते फिरते दिखाई देते हैं। अतः कवि आशा करता है कि लेकिन